श्री

सुधारस संग्रह भाग पहिला.

इस ग्रन्थमें रागविलास और अणगार बत्तीसी

श्रीमत्जैनाचार्य श्वेताम्बरी प्रवर पण्डिताचारीसाधु वर्ग शिरोमणी पूज्य श्री. १००८ श्री श्री श्री रत्नचंदजी महाराजकी संप्रदायके श्री१००८ श्री नन्दरामजी महामुनीके शीष्य श्री १०५ श्री किसन लालजी महाराज कृतः है

इस ग्रंथकु जैनपंडितद्वारा शुद्ध करके

शा. मगनमलजी बरड़ा जेपुरवालाने.

निर्णयसागर छापखानेमें छपाकर प्रसिद्ध किया

सवत १९६१ सने १९०५

किमत रुपया १॥लिख्यानहीं

जाहेर खबर.

पुस्तक मीलनेका ठीकांणा

अजमेर. शेठजी श्री, सोभागमलजी ढढाकी हवेली

ठी. कडकांके चोकमें.

अनुक्रमणिका.

सुधारस संग्रहः
प्रथमजाग रागविलास.

॥ दोहा ॥

डुर्जन वन्दो प्रथम तौ सज्जन पीछे नीक ॥
मुखप्रक्षालनसें पुरा गुदाप्रक्षालन ठीक ॥ १ ॥

दोय नारंगी दोय अनार ए देशीः किसनलाल साधू गुणवांन जवजल तारक नाव समान टेर संप्रदाय श्रीपूजरतनकी उत्तम जांणे सकल जिहांन ॥ कि ॥ १ ॥ श्रीनंदराम मुंनिका चेला संतशिरोमणि दया निधान ॥ कि ॥ २ ॥ करुणारस जीनो चित दीनो ॥ षटकायाने जीतव दांन ॥ कि ॥ ३ ॥ कहण रहण सम सरल स्वजावी सौम्प निजर मनमें नहीं मांन ॥कि०॥४॥ तज परमाद रमे निजगुणमें विकथा छोड जजे जगवान ॥की०॥ ५ ॥ जब देखूं तब करमें पुस्तक एक सदा जणवाको ध्यान ॥ कि० ॥ ६ ॥ क्रोधजुजंगम निरविष कीनों पीनो उपसम रस पर धान ॥कि०॥ ७ ॥ हेतुयुक्ति दृष्टांत करीनें जिनजिन वांचे खूब वखांण ॥कि०॥८॥ आगम अरथ सुधारस सुंणनें जव्य करे नित पावन कांन ॥ कि०॥ ९ ॥ तिमिर अज्ञांन मिटावण प्रगट्यो जरत खंडमें नूतन

ज्ञांन ॥कि०॥ १० ॥ चिरंजीव रहो घणाकाल ये नि सदिन वरतो कोटि कल्याण कि० ॥ ११ ॥ पंडित मागीलाल किया गुण जयपुरवासी सहर सुथांन ॥कि०॥१२॥ देशी तेहिज ॥ मेंतोबु अवगुणकि खांन गुणवंतांरा करो वखांन ॥ टेर ॥ माया लोज क्रोधमें ततपर में मतिहींन न मूक्यौ मांन ॥मेंतो॥ १ ॥ आ तम निंदा करतो लाजुं परनिदांमें आगेवांन में ॥२॥ हितसीक्षा देतां में खिजुं ये अपलंछन मोटो जांन ॥ में ॥ ३ ॥ जव प्रपंचकी दंतकथामें काल गम्यों न कीयो शुज्ञ ध्यांन ॥ में ॥ ४ ॥ निरमल रत्न त्रय निजगुणकी में मूरख नही करि पिछांन में० ॥ ५ ॥ शब्द रूप रस गंध स्फरसमें मन डुष्ट जावे जिम बांन ॥में०॥ ६ पुदगल अरूी खानसूरोमें ममता दि नदिन वधते वॉन॥में०॥७॥ रागद्वेष दोनुं दल जारी निशदिन मोकूं करत हेरांन ॥ में० ॥८॥ आंखमिंचमें करूं अंधेरो जांण बूझ होरह्यो अजांण ॥ में० ॥९॥ राजदेश जोजन तिरियाकी विकथा प्यार लगे नि जकांन ॥ में० ॥ १० ॥ में अवतार लीयो कलयुगमें केवल जव पूरन परिमांन ॥ में० ॥ ११ ॥ सवमें मुदित जूल हमारी में जांणूंके श्रीजगवान॥में०॥१२

अवगुंण मोमें प्रभुगुंणजेता कहुं अबकेता सुणों सु
जांन ॥ मैं० ॥ १३ ॥ अपराधीसुत किसनकुपातर
जिमतिम करतारोबृधमांन ॥ १४ ॥

ग्रन्थकर्तृगुणवर्णनम्–शिखरिणीछन्द.

स्फुरच्छ्रीनागोराजिधनगरपौरार्चितपदः
सुपूज्यो रत्नेन्दुर्जिनचरणसेवार्जितयशाः ॥
ततस्तन्मार्गीयोऽजवदमलधीः स्वामिपदभाक्
स्वनाम्नादौ नन्दं पदमथ भजन्नाममपरम् ॥ १ ॥
नियम्यादौ लोलं विषयकुपथेष्विन्द्रियगणं
ततो भूयो भूयो विषयसुखलुब्धं निजमनः ॥
समाकृष्यैकस्मिन्परमरमणीये जिनपदे
समाधाय स्वच्छं मननिरतोऽभून्मुनिवरः ॥ २ ॥
विशुद्धस्तच्छिष्यो गतविषयतृष्णः सुहृदय-
स्तपस्वी तेजस्वी जगति च यशस्वी विजयते ॥
निधायादौ कृष्णं पद मनुपदं लालवचनं
निजाख्ये विख्यातो गुरुचरणसेवार्पितमनाः ॥३॥
स जैनाख्यः श्वेताम्बरजनसमाराधितपद
प्रधानः सन्मानोऽपि च निरभिमानो मधुरवाक्॥
निधाने ग्रन्थानामभिमतविधानेऽतिमतिमा–
न्समाधाने माने जगति जनतायाः सुनिपुणः॥४॥

सुधा यत्रारम्भे भवति च विरामे रसपदं
चकारैतन्नाम्ना श्रवण रमणीयं तनुभृताम् ॥
स्वबुद्ध्या सद्ग्रन्थं विविधरसभावादिसहितं
तथाऽत्राद्यो भागो रसिकजनगेयोऽतिमधुरः ॥५॥
विलासो रागाद्यः सलयरसरागाः प्रकटिता
विरागः संसारात्सततमनुरागो जिनपदे ॥
स रागो यत्र प्रोल्लसति विततः सत्परिकरः
सरागैर्नीरागैः श्रवणमननीयः सुहृदयैः ॥ ६ ॥
सुधासंबन्धीयो रसवचन भृत्संग्रह इति
कृतस्तेन ग्रन्थो जनहितकरः कृष्णमुनिना ॥
विभागाश्चत्वारो जगति पुरुषार्था इव मता
विलासो रागाद्यः प्रथमगणनायां विनिहितः ॥७॥
द्वितीयो भागोऽत्र प्रभवति सभारञ्जन इति
समाश्रुत्य प्राज्ञः किमु चकितचित्तो न भवति ॥
तृतीयो जैनानां गुणगणकथासंयुतहितो-
पदेशानां मालेति समभिहितो ग्रन्थविषये ॥ ८ ॥
चतुर्थोऽलङ्कारोत्तरनिहितचूडामणिरिति
समाख्यातो ग्रन्थे विविधविषये श्रीमुनिकृते ॥
विरागः संसाराज्जिनचरणरागोजनिमतां
सुधाया आस्वादो भवति सुलभो यच्छ्रवणतः ॥ ९ ॥

विभागस्त्वाद्योऽयं स्वजनकथनेनाङ्कित इह
श्रयो भागा अन्ये क्रमपरतया यन्त्रखचिताः ॥
भविष्यन्ति व्यक्ताः सुहृदयसमालोचनगता
स्ततस्तैरानन्दोल्लसितमनसो वै परिषदः ॥ १० ॥
समालोक्य ग्रन्थं विविधरसरागाङ्कसहितं
कथासंदर्भारम्भणपरमनिर्वाणललितम् ॥
सहर्षोयं नारायणवचनवाच्यो द्रुतमना
मुनीन्द्रं कृष्णाख्यं कथयति चिरं जीवतु भवान्॥११॥

॥ शार्दूल विक्रीडित ॥

शान्तः शीतरुचा समो व्रतधरः कारुण्यपाथोनिधि-
र्वाचालोऽन्यगुणादिवर्णनविधौ स्वीये च मौनं दधत्
शास्त्राभ्यासविलोकनैकनिपुणः श्रीमाञ्छ्रुतशोऽनिशं
ध्यानासक्तमना जनार्चितपदः कृष्णोमुनी राजते॥१२॥

विज्ञापना–

धर्मार्थ काममोक्षेषु यस्यैको पिन विद्यते॥ अजा गलस्तन स्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ १ ॥ इस अपार निःसार संसार पारावारके विषें डूबते हुवे प्राणियोंको दशदृष्टान्तों करके यह मनुष्यजन्म पाना अत्यन्तही कठिन हैं तिसमेंभी उत्तमदेश जाति कुल सत्संगति इन्द्रियादिकका सामर्थ्य पाना यह अति

कठिनतर हैं परन्तु पूर्वपुण्यके उदयसें इनकों प्राप्त होकरजी जिस मनुष्यनें जो शुद्ध देव गुरु धर्मका निर्णय नही किया और सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पहिचाननेके लिये यत्न नही किया और न धर्म अर्थ काम मोक्ष इन च्यार पुरुषार्थनमेंसें एकजी नही कियातो उसका जन्मलेना अजागल स्तनवन्निरर्थक हैं परन्तु इसवर्ग चतुष्टयमेंजी धर्महि प्रधान और उत्कृष्ट मङ्गलोत्पादक हैं । और उजय लोकमें आनन्द दायक हैं । यडुक्तम्– 'धर्मः शर्म परत्र चेह च नृणां धर्मोन्धकारे रवि,रिती । और त्रिवर्गमेंजी धर्म ही प्रधान कहा हैं "त्रिवर्ग संसाधन मन्तरेण पशो रि वायुर्विफलं नरस्य ॥ तत्रापि धर्मं प्रवरं वदन्ति नतं विनायद्भवतोर्थ कामौ,, इति ॥ जिससें अर्थ काम सिद्ध होतें हैं। अन्यथा–'न धम्मकज्जापर मत्थिकज्जं' इस लिये धर्माचरण करणा यह संपूर्ण जनोंकों पूर्णतर लाजदायक हैं जिसमेंजी जो इस लोकमें अनेक सुख और परलोकमें स्वर्गादिमोक्ष पर्यन्तका देनेवालातो श्रीवीतरागप्रणीत अहिंसा रूप धर्म हैं सो परम सूक्ष्महैं उस धर्मकी प्राप्ति श्रुत ज्ञानसें हैं । यद्यपि मतान्तरोंसें धर्म अनेक प्रकारका हैं तथापि

श्रीतीर्थंकर देवाधिदेवोंनें तो द्विविधही धर्मनिरूपण किया हैं श्रुत धर्म और चारित्र धर्म श्रुत धर्मसेंही चारित्र धर्म होता हैं अन्यसे नही। श्रुत धर्म वह हैं कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी अनन्तज्ञानी वीत राग प्रणीत हैं क्यों के उसके श्रवण करनेसें श्रुत ज्ञानकी प्राप्ती होती हैं अन्यसें नही। इस लिये बुद्धिमान् पुरुषोंको श्रुत धर्मकी प्राप्तिके अर्थ अवश्य यत्न करणा चाहियें कारण श्रुतज्ञानके विना हेयज्ञेय उपादेयका विज्ञान नही होता हैं। और सम्यक् प्रकारसें अहिंसारूप परमधर्मका मर्म नही जान सक्ता हैं। इससें सर्व साधारण जनोंकी रुचिके लिये लोक भाषामें एक सुधारससंग्रह नामक ग्रन्थ बाललीला माफिक किया हैं जिसमें च्यार भाग हैं प्रथम रागविलास नाम हैं तिसमें मङ्गलाचरण और कविताकी विधि श्रीगुरुदेवजी महाराजके गुण पञ्च परमेष्टि गुणमाला समकित लहरी विवेक मञ्जरी चतुर्दश गुणस्थानकरचना सनत्कुमार राज ऋषि-चौढा लियो और औपदेशिक फुटकर स्तवनादिक हैं। और द्वितीय सन्मारज्ञान विलास नाम हैं जिसमें हितोपदेशीय वैराग्य रसभृत विचित्रप्रकारके

स्तवन स्वाध्याय हैं । तृतीय जैनकथा रत्नमाला नाम हैं जिसमें चित्रसेन पद्मावतीचरित्र-रूपी लक्ष्मणा-साध्वीको रास और वर्धमान देशनाके कितनेहींक आरामशोभा कुलध्वजादिकों के चौढालियां पट्ढालिया अष्टनवढालियादि वैराग्यका विचार हैं। चतुर्थ चित्र काव्यालङ्कार नाम है जिसमें अनेकप्रकारके चक्रवन्ध डुमला मनोहर चोपरूवन्ध साथियावन्ध गतागत मत्तगयंद छत्रचामरादिवन्धके व्याख्यानोपयोगी दोहाकवित्त कुण्डलियादिछन्द प्रवन्धहे। इसप्रकारसें च्यार भाग रचना करकें व्याख्यानमें धर्मोपदेशना दिई तिस समयमें श्री संघनें प्रसन्न होकर प्रार्थना करी कि महाराज यह पुस्तक तो हम सवलोगोंकों मिलनी चाहिये हम अनायाससेंही जैनधर्मकों जाणकर हमारा कल्याण संपादन करे। यह वात सुनकर महाराजनें कहा कि भाई पुस्तक देनेका तो हमारा कल्प नही और यहांपर यत्नाचारसें जो कोइ लिख लेवे तो उनकी इछा हैं। तव कितनेक श्रावकोने लिखाया तथापि सर्व जनोकी इछा पूर्ति न हुई तव कितनेक साधर्मिक भाइयोने परोपकार वा धर्मोन्नतिके कारणसें

छपानेका उद्योग किया सो यह ग्रन्थ छपवानेकों मुम्बई जेजा सवाई जयपुर निवासी श्रावक मगन मलजीवरड्याके पास केवल रागविलास प्रथम जाग। इसका तीन जाग फेर हैं सो समयानुसारे छपवानेका इरादा हैं सो फिर देखा जावेगा। इस वास्ते सर्व जेनी जाइयोंसे यह ही कहना हैं कि निष्फल कार्योंमें डव्यका व्यय नही करे और ज्ञान की वृद्धि वा धर्मोन्नतिके लिये धनका व्यय अवश्यही करें क्यों के यह ही सर्वोत्कृष्ट है ॥

॥ कवित्त ॥

"जयद अपारयो असार जवसिन्धु तामें तरणि समान गुरु नमो नित्यमेवजी लोहाके समान नर पारस वनावे गुरू साहूपूज्यनीक पद देवे स्वयमेवजी ऋद्धिदेत सिद्धिदेत जक्तिज्ञान बुद्धिदेत मुक्तिदेत ज व्य जीव सारे ज्यांकी सेवजी महिमा निकेत मुनि कृष्णलाल राज तेसु देवराज शिष्य कहे धन्य गुरु देवजी ॥ १ ॥

॥ अस्यार्थः ॥

अनेकप्रकारका जयको देनेवाला इस संसाररूप

समुद्रमें तरणि कहिये जिहाजकेसमान परोपगारी श्रीगुरुदेवजी महाराजकों हें भव्यजीवों विधिपूर्वक निरन्तर नमस्कार करो । कैसे हैं श्रीगुरुदेवजी महा राज लोहा ज्यो कुधातु हैं उसके समान नर कहिये मनुष्य जडबुद्धि हैं तिसकों वडाभारी पारस बनादेवे अर्थात् पारसमे सिर्फ इतनीही शक्ति हैं कि लोहेका सोना वनादेवे और श्रीगुदेवजी महाराजकी ऐसी अचिन्त्य शक्ति हैं कि खुद पारसही वनादे जिस सें जी चाहे जितनाही सुवर्ण वणा लेवे । और साहु कहिये भला पूजनीक पद आपही कृपा कर देदेते हैं । अथात् साधकूंतो सव कोई पूजे परन्तु श्रीगु- रुदेवजी महाराज साधवोंका पिण पूजनीक करदेवे । फिर कैसे है श्रीगुरु० अनेक प्रकारकी ऋद्धिके दाता अणिमादि अष्ट सिद्धिके दाता विनयादि भक्तिके दाता सम्यक् ज्ञानके दाता उप्पतिया, विणिया, क म्मिया, परिणामिया, ए च्यार प्रकारकी बुद्धिके दाता किंवहुंना, स्वर्गादि मुक्तिपर्यन्त सुखोंके देनेवाले । और श्रीगुरुदेवजी महाराजकी सेवा तन मनसें करे हैं उसीको निकट भवी जानो । ऐसें शीलादि म-

हिमाके घर मुनि कृष्णलाल राजते सुकहिता नली प्रकारे शोजत हैं तासों देवराज नामे निज शिष्य वारंवार धन्यवाद देता हैं ॥

निवेदनम्–

सम्यक्‌दृष्टिसर्व साधर्मी नाइयोसें प्रार्थना है कि इस पुस्तकमें दृष्टिदोषसें अथवा प्रमादके वस लिखनेंमें तथा ठापनेमें ज्यो कोई अशुरू ठप गया हो तो विद्वज्जन शिरोमणि मेरेपर पूर्णतर कृपाकर सुधारलीजिये और इस पुस्तकको अविनय आसातनासें नही पढें यत्नाचारसें इसकों पढें पढावें कारण अजैनासें पढणेमें कर्मवंध होता हें और नंदीसूत्रमें तीन प्रकारकी पुरुषदा कही हें । तं जहा–जाणिया अजाणिया डुवियद्धा, जिसमेंसे प्रथम सुजाण पुरुषदा तो सुगमतासें जरूर धर्मोपदेशना देने योग्य है ञर द्वितीय अजाण पुरुषदा समजावणमें तो अति कठिनतर है परंतु धर्म कथा कहनेके योग्य है तृतीय डुवियद्ध अनेक ` ` ` ं ` नरीहुई फूटे गूमडेके दश खच्चर ` समान वायूनरी

डीवत् वृथा अभिमान करनेवाली पुरुषदा बिलकुल धर्मोपदेश न देने योग्य नही हैं उसको यह पुस्तक न देना चाहीये इस कथनको प्रयोजन यह है कि ठांम ठांम सूत्रोंमें विनयमूल धर्म निरूपण किया हैं परंतु इस पंचम कालके प्रभावसे अवतो वो विनय मूल धर्म दिनों दिन डुर्वल हुवा चला जाता है औ र राग द्वेषकी प्रवलतासें पक्षपातके ऊगडेमें पडे हुवे कितनेक लोगोंकी बुद्धि भ्रष्टाचारी कुगुरोंके व हि कानेसें विपरीत हो रही है जिससें लूणकंकरी वत् खारसेभरे जात्यादि मदोमें ठकेहुवे कहनेके समदृष्टि ठेर प्रवृत्तिमें विषम दृष्टि अपनी उन्नति ठेर परनिंदापर ईर्ष्याके सिवाय जड बुद्धि कुछ भी तो नही जानते हैं कि विनय मूल धर्म क्या चीज होता है और जैनधर्म किसकूं कहिते हैं सत्य कहा है कि

॥ दोहा ॥

कंचन तजवो सहज है सहज त्रियाको नेह ॥ प रनिन्दा पर ईर्ष्या तुलसी डुर्लभ एह ॥ १ ॥ हरदी जरदीनां तजे खटरस तजे न आंम ॥ असली तो अ

वगुण तजे गुणकूं तजे गुलॉम ॥ २ ॥ गुण छोडी अ
वगुण करे श्रावक सोक समान ॥ अवगुण तज गु
णकूं ग्रहै सो श्रावक गुणवान ॥३॥ गुणवतांतो गुण
सुणी पामें मन परमोद ॥ सोकजोखसा मानवी अ
वगुण काढे खोद ॥ ४ ॥ निन्दक सम उपगार कुण
करे जगतमे कोय ॥ जलसावूं रुजगार विना करम
मैलदे धोय ॥५॥ और समयसार नाटकमे ज्यो पञ्च
प्रकारके जीव कहे है डूंघा चूंघा सूंघा ऊंघा घूंघा
इ समेसे चूंघा चतुर हलूकर्मी भव्य जीवोकूं यह पुस्तक
रामसीतावत् सुप्यार लगेगा। लिखनेमे दलगीरी आवे
है कि आधुनिक जैनी लोगोमे पठन पाठनका प्र
चार बहुत कम हो गया हैं यहांतक हैं कि सामा
यिक प्रतिक्रमणका अर्थ तो दूर रहा परंतु सूत्रपा
ठभी तो शुद्ध नही आते है अब देखिये कि जिस
को उभयकाल नित्य करणेमें बडी भारी कर्मों की
निर्जरा होय उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थंकर पद
की प्राप्ति होय सोभी शुद्ध नही आवे तो ये कि
तनी बडी भारी भूलकी वात हे यह मेरा कथन
विवेकी सज्जन पुरुषोके विचारणे लायक है ॥

कवित्त–

सोम लोकपाल जैसो सबहीकों पोषदेत
जानुसो प्रकाश ठोनिमएडलमें गायो हैं
गरब गुमांनकी तो बातहून गमैयाकों
मनको उदार धर्म काममें सवायो हैं
लक्ष्मी निवासजाके मन्दिरमें कीधो आय
जीनमें पीयूषरस बोलतां सुहायो हैं
सेवे शुद्ध देवगुरु धर्मसु सना तनसों
ठवि अनिधान आदिबरनमें बतायो है ॥
इति सुधारस संग्रहे प्रथम नाग संपूर्णम्

इति श्री सुधारस संग्रहः
प्रथम नाग संपूर्ण.

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्रीरागविलासप्रारंभः ॥

॥ ॐनमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

तत्रादौ मंगलाचरणम् ॥

॥ शिखरिणीछन्दः ॥

णमो अर्हन्ताणं[1] करमरिपुजेता[2] जगतमे ॥
णमो सिद्धाणं ते रुधिसिधि विधानं दुखहरम् ॥
णमो आचार्याणं सकलसुखदं मुक्तिसुवरं ॥
छतीसौ है जामे शुभगुणसदाचारयुत जो ॥ १ ॥
उवज्झायाणं च प्रकृतिजपचीसोगुणनिधं ॥
णमो लोए सव्वोज्ज्वलचरणसाहूणमनवम् ॥
सहस्रद्वे कोटी जगतमधि साधू जघन है ॥
तथोत्कृष्टासाधू नवसहसकोटान प्रणमू ॥ २ ॥

---

१ अरिहंताणं अर्हताण अरुहंताणं, मध्यमपदं देहलीदीपकन्यायेन, २ जि जयें, ऽत्यस्य लुटि रूपम्, वेदनी आयु नाम गोत्र इन च्यार कर्मोंकू जीतेगा, ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय मोहनीय अंतराय इन च्यार कर्मोंकूं जीतलिये, तृन् प्रत्ययेऽपि रूपम् ॥

नमः सम्यग्दृष्टयै विमलतरज्ञानाय सततं ॥
तपश्चारित्रभ्रादशत्रिदशभेदैर्गुणगणैः ॥
युजे सिद्धव्रातोऽत्र च परभवे स्याच्छिवकरः ॥
स मे हार्द दुःखं हरतु नितरां पूर्णकृपया ॥ ३ ॥
नमो ॐ ह्रीं अर्हँ ऋषभ अजितं संभवजिनं ॥
अभीनन्दन् स्वामी प्रणवसुमतिं पद्मप्रभवे ॥
सुपार्श्वं श्रीचन्द्रप्रभसुविधि वा शीतलप्रभुं ॥
श्रेयांसं वासुपूज्यं विमलमनतं धर्मं प्रणमू ॥ ४ ॥
नमः शान्ति कुन्थुं अरमल्लिमुनी सुव्रतविभुं ॥
नमिं नेमिं पार्श्वं चरणयुगलं नौमि सततम् ॥
महावीरं वन्दे परमपददानैकसुविधं ॥
जिनेन्द्राहोरात्रं ददतु कुशलं मे समयजाः ॥ ५ ॥
रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ॥ (इति वृत्तरत्नाकरे) ॥

॥ यद्यपि पद्यनिर्माणे छन्दोविच्चितिर्व्याकरणं कोशो नैपुण्यादिकं च सर्वमेवापेक्षतेऽत एवोक्तं म म्मटेन-शक्तिर्निपुणताभ्यासलोकशास्त्राद्यवेक्षणात् ॥ काव्यज्ञशिक्षया चेति॥इमानि चत्वारि कारणानि परि गणितानि तथापि स्वसंवेद्ये परमानन्दात्मके सर्व

इ दत्तनमस्का महानुभावा इमान्क्लेशकदम्बानविग णय्यैव भक्तिभरान्तःकरणेन मनसा पद्यनिर्माणे प्र वर्तन्ते तो दोषान्वेषणस्यावकाश एव नास्तीति सुधियो विदाङ्कुर्वन्वित्यभ्यर्थयते ॥

॥ कवित्त ॥

आदिवन्दू आदिनाथ, दूसरा अजितजिन ॥ ती सरा संभवस्वामी, चोथा अभिनंदना ॥ पांचमां सु मतिनाथ, रसमा पदम प्रभु ॥ सातमा सुपास वसु चन्द्रप्रभे वन्दना ॥ नवमा सुबुद्धिनाथ, दशमा शितलजिन ॥ ग्यारमां श्रेयांस दुःख मेटो, भवफंद ना ॥ वारमां सुवासुपूज, तेरमां विमलनाथ ॥ चउ दमां अनन्त सुखदायक आनन्दनां ॥ १ ॥ तिथिमां धरमनाथ, सोलमां सुशान्तिजिन ॥ कुन्थु अर मल्लि नाथ, जीको ध्यान ध्यावसुं ॥ वीसमां मुनि सुव्रत, एकीसमा नमीनाथ ॥ बावीसमां नेमनाथ, नमू शु द्ध भावसुं ॥ तेवीसमां पासप्रभू, चौवीसमां महावी र ॥ मनवचकायकरि प्रणमू उठावसुं ॥ मंगलाचरन र धुकरन किसनलाल ॥ विद्यमान चौवीसीकूं, वन्दू चितचावसुं ॥ २ ॥

॥ अथ संक्षेपमात्र कविताकी रीति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कविता माता दरपकी, कविता करो न कोई ॥ कविता करिये न्नलेइ कोऊ जो अनिमान न होई कविताके करता कवी, चारि न्नांतिके होत ॥ वरप्र सादि निदध्यासि पुनि, गुरुमुखि अरु शास्त्रोक्त ॥२॥ एकमात्रिका हस्व है, द्वीमात्रिक गुरु ज्ञात ॥ त्रिमा त्रिकसो पुलत है, व्यंजन अर्द्धही मात ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ कविता करनको उछाव हुवे मनमें तो पिंगलपुरा णग्रन्थ गुरुगम्य धारिये ॥ अइउ ये हस्व छन्द वसे लघु चोथो न्नेद संजोगादि और सवे दीर्घ उच्चारि ये ॥ हजधरघनरवन्नदढाखरआठदसगढठटथणदलप म आदि वारिये ॥ कृष्णलाल कहें आगें गणांको विचार यार सुयमाताराजन्नान सगले संन्नारिये॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ मगन वरन गुरु तीनको त्रीलघु नगनप्रमान ॥ न्नगन आदिगुरु आदिलघु यगन वखानि सुजान॥५॥ जगन मध्यगुरु जानिये रगन मध्यलघु होय ॥ सगन ... अन्तलघु तगन कहै सव कोय ॥ ६ ॥ न्नग

न नगन अरु मगनही यगन आदि शुभ जोय ॥ रगन तगन अरु सगनही जगन अशुभ कवि सोय ॥ ७ ॥ आठों गनके देवता अरु गुनदोष विचार ॥ छन्दोग्रन्थनिमें कह्यो तिनको सब विस्तार ॥ ८ ॥ मही देवता मगनकी नाक नगनको देखि ॥ जल जिय जानहु यगनको चन्द भगनको लेखि ॥ ९ ॥ सूरज जानहु जगनको रगन शिखी मन आनि ॥ पवन समझिये सगनको तगनाकाश बखानि ॥ १ ॥

॥ अथ फलम् ॥

॥ छपय ॥

॥ भूमि भूरि सुख देइनी रनित आनंदकारी ॥ आगि अङ्गबिनु दहै सूर शोषै सुखभारी ॥ समझो अफल आकाश प्रभञ्जन देश उदासै ॥ मङ्गल चन्द अनेक नाक बहु बुद्धि प्रकाशै ॥ इह विधि कवित सब जानिये करता अरु जाकों करै॥तजि प्रबन्ध सब दोष गन सबै शुभाशुभ जानि परै ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥मगन नगन गन मित्रहै भगन यगन भृत लेख॥ उदासीन जत जानिये पुनि सर शत्रुविशेष ॥ १२ ॥

॥ सवैया ॥

॥ मित्रते जु मित्र होई वाढे वहु ऋद्धि वृद्धि मित्रते जु दास त्रास जुद्धतें न जानिये ॥ मित्रते उदासगन होत गोत दुःख उदो मित्रतें जु शत्रु होई मित्र वन्धु हानिये दासते जो मित्रगन काजसिद्धि कृष्णलाल दासतें जु दास वस जीव सवे मानिये ॥ दासते उदास होत धननाश आश पास दासतें जो शत्रु मित्र शत्रुसो वखानिये ॥ १३ ॥ जानिये उदासते जो मित्रगन रूढफल प्रगट उदासतें जो दास प्रभुताइये ॥ होय जो उदासतें उदास तो न फलाफल जो उदासहीतें शत्रु तो न सुख पाइये ॥ शत्रूतें जो मित्रगन ताहि तो अफल गति शत्रुतें जो दास आशु वनिता नसाइये ॥ शत्रुतें उदास कुलनाश होइ कृष्णलाल शत्रुतें जो शत्रुनाश नायककूं गाइये ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आखर ददह्ले आदिमे शुभ गनदोष नशाय ॥ गन अनशुभतो डुगनसूं वहुरि दोष मिटजाय ॥१५॥ मेरुपताका मरकटी षोडशकर्महीं और ॥ अन्य ग्रन्थसे रीतिसो जानो कवि शिरमोर ॥ १६ ॥ इति कविताविधिः ॥

॥अथ गुरुदेव श्रीनन्दरामजीमहाराजका गुणवर्णनम्॥

॥दोहा॥

॥ ओंकार प्रणमूं सदा परमेष्ठी पदवांण ॥ अर्हत्सिद्धाचारये उवज्झाय मुणिभांण ॥ १ ॥ श्रीजिन वाणी भारती वन्दू मन वच काय ॥ जोरू कला दीज्यो घणी मेहर करी मुजमाय ॥ २ ॥ परउपगारी परमगुरु भरम मिटावण सूर॥परम नरम होय गुण करूं करमकरण चकचूर ॥३॥ बृहस्पती नहि कथसके गुरु गुणसिन्धु अपार ॥ तोपिण किंचित् वरणवुं निज-बुद्धी अनुसार ॥ ४ ॥ वालब्रह्मचारी महानन्दराम ऋषिराज ॥ मानवभव सफलो कियो दियो घणाने साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

॥ धरम अराधियेजी अरणकश्रावकजेम ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीपनां भरतमेंजी देश ढुंढार उदारउंणी ढिंग आवां ग्राममेंजी सुखियावसे नरनार भरमोदधि जिम गुणे भरियामुनिनन्दराम॥ १ ॥ वगेरवाल तारा चन्दजी धर्णजीवू सुखदाय ॥ तासो दरे गति सुभग सूजी उपनागरभमे आय ॥ च०॥२॥ संवत् अठाराने

१ 'स्त्री'

एसियेजी श्रावण शुक्ल ठठ सार ॥ जन्म हुवो निशि पाछलीजी हरष्यो सहु परिवार ॥ च० ॥ ३ ॥ सुन्दर नारी सोहासणीजी गाया अभिनव[1] गीत ॥ जनम महोछव पुत्रनोजी कीधो जिम जगरीत ॥ च० ॥४॥ गणक कथन मनमोदसुंजी नाम दियो नन्दराम ॥ वीज निशाकर जिम वधेजी दिनदिन वयकरि ताम ॥ च० ॥ ५ ॥ लघु वये बाललीला करी जी ते किम वरणविजाय ॥ पुन्यवन्तना पग फेरसुंजी कमला वधी घरमाहि ॥ च० ॥ ६ ॥ जेज्या भणवा पोसालमेजी वै वन्धव तिणवार ॥ भ्राता कनिष्ठ[2] जोवानजीजी पढिया गृहस्थ आचार ॥च०॥७॥ श्रावकधरम समाचरेजी ताराचन्दजी सदीव॥मुनिपद उत्तम एकदाजी वसियो हृदय अतीव ॥च०॥ᑌ॥ हलुकरमी मन जाणियोजी शिरपर घूमे छे काल ॥ किणराधन सुत कांमणीजी छोडूं सर्व जंजाल ॥ च० ॥ए॥ लागो भय अतिमरणकोजी धिग संसार असार ॥ नरभव सफल करूं हिवेजी लेकर संजमभार ॥ च० ॥ १० ॥

॥ सवैया ॥

भयजोगमें रोग वके कुलहीनता य्युं धनमे नृपको

१ 'अच्छे' २ 'छोटो'

भय है॥पुनिमानमे दीनपनो वलमे रिपुरूपहुंकी रम
नी ठय है ॥ सदग्रन्थमें वादिगुनी खलको भय का
या कृतान्तहुंते लयहे सब वस्तुसही भयसंजुत
औ सुविराग सदा जग निर्भय है॥१॥ वीति गये अ
गले सुभले दिन आन लगे दिनअन्तके एही । सेत
शिरोरुह रंग जरा घर कंपत नाम न भावत केही॥
अस्थिको अंम अरोपित ऊपर झूरहितें लखिके जिम
जेही ॥ कूपचंडालनिको तिम जान तजे तरनी तव
ही जनतेही ॥ २ ॥ गात सवै सकुच्यो विगतागति
दन्त परे मुखकें दरवाना लार परै नहि सूझत
नैन नवे न सुने कहिको कटुकाना ॥ वन्धु न मान
तहे जेहि वात प्रिया नहि पूजत जान दिवानां ॥
हातन जीरन है जनको तव पुत्रहुं होत अमित्र
समाना ॥ ३ ॥ लकरी पकरी सुकरी करमे पग पन्थ
परे भभरे झगरी॥ न धरी भर वेंठ भज्यो सुहरी कथ
कूर करी जगरी सगरी ॥ नगरी तनरी सुपुरी निप
री जगरी अव लूटतहें ठगरी । अवरा विरधापन
वात वुरी सुअरी सम होत सवै सुतरी ॥ ४ ॥

---

१ 'काल'

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ इम चिन्तव ताराचन्दजीजी कहि पुत्रां नणि एम ॥ अब हूं मुनि पद आदरू जी तुम कहो करस्यो केम ॥ च० ॥ ११ ॥ पन्नणे अंगज विनयसूजी तात सुणो मुज वात ॥ जो तुमे संजम आदरोजी मेंपिण करस्यां साथ॥च०॥१२॥ वसियो मन वैरागमें जी सुत जाण्या अनुकूल ॥ सूंप्यो निज घर नारने जी जाणी अनरथमूल ॥ च० ॥१३ ॥ खरच निमित पूणादोयसेजी रुपिया लीनासाथ ॥ बाकी तृण तनु मेलज्युंजी छोडी सगली आथ ॥ च० ॥१४॥ प्रथम ढाल इम वरणवीजी श्रोता सुणो एकचित्त ॥ फिलर ह्या परम संवेगमेजी दिक्षा हुवे किणरीत॥च०॥१५॥

॥ दोहा ॥ माता सुत राखण नणी कीधा घणा उपाय॥ पिण मानी नांहिं एकही धवं[1] सुत तेहनी वाय ॥१॥ विलापात कीधा घणा पतिसुत जानि वियोग ॥ पुत्रविना किम पामियें उत्तम चारित जोग ॥२॥पिता कहे धन पुत्र थे पुत्र कहे धन तात ॥ लोक सुणी विस्मित हुवा वणी असंनव वात ॥ ३ ॥ घरसे निकल्या तिंहु जणा मन वैरागे वाल॥ जणजण मुख

१ 'पति'

सें इम कहे धन्य पिता वेहुं वाल ॥४॥ सुध आचारी जो मिले मनमांन्या गुरुदेव ॥ दिक्षा ले. करणीसही तस पदपङ्कज सेव ॥ ५ ॥ इम चिन्तव फिरिया घणा मरु धर देशे जाय ॥ संप्रदाय देखी घणी पिण न हि आवीदाय ॥ ६ ॥ संप्रदाय रतने सरी दीपे जेम दिणन्द ॥ श्रवणसुनी यह वारता पाम्या परमानंद ॥ ७ ॥ अनुक्रमे चलता आविया पाली पीठमजार ॥ भाग्य योग भल भेटिया धीरज मल अणगार॥८॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥देख रे नेणासे गोयम एहै अम्बा मोरीरे॥एदेशी॥

॥ वंदणा करके वखाण सुणवा वैठ्या हरष अ पारी रे ॥नरनारीका ठाट जुड्या मानू खिलरही केसर क्यारी रे॥ धीरजमल गुरु धार लिया नन्दराम मुनी सुखकारी रे॥ महिमएडलमें धरम दिपायो जाणे वहु नर नारी रे ॥ १ ॥ धी० टेर ॥ भविक चकोर मोद धरि निरखे मुद्रा मोहन गारी रे ॥ दुरगतिहरणी भवजलतरणी धरमकथा विस्तारी रे ॥ धी० ॥ २ ॥ देशव्रती अरु सरवव्रती ए धरमसु दोय प्रकारी रे ॥ सुरपद पावै शिवपुर जावे काटण करम कुठारीरे ॥ धी० ॥ ३ ॥ रमन कियो परगुनमें चेतन निजगुन

रूप विसारी रे ॥ लख चोरासी च्यार गतीमे भमि
यो जेम भिख्यारी रे ॥ धी० ॥४॥ आक्षेपणि विक्षेप
संवेगणि निर वेगणि ए च्यारी रे ॥ भिन्न भिन्न कर
संवेग रचावे मिथ्या तिमिर निवारी रे ॥ धी० ॥५॥

॥ कवित्त ॥

॥ रविके उदय अस्त होत नित आयु जात जि
नकों न जाने ठाने पापको पसारो है ॥ कारज वि
चारे भूरि भार शिर धारे कूरि नेनना निहारे शत्रु
कालसो करारो हैं ॥ जनम जराकूं देखे विपति मर
न पेखे भयको न लेस उर होत न उजारो है ॥
गयो सब ज्ञान यूं प्रमादके प्रताप भयो मोहमद पा
नतें जिहान मतवारो है ॥ १ ॥ गहे बहुकालतें जो
विषयविलासतें तो तजिके चलेंगे तोहि वार नहि
लावेगा इनके वियोगमे न लेसहू अन्देस यातें पहि
ले तजे तू क्यों न जोलो नही जावेगा ॥ आपहीतें
तोकों तजि विषय चलेंगे जब करिके पुकार बिनपा
र पिछतावेगा ॥ आदिहूंतें तजिके भजे ज्यो भगव
न्तनाम अन्तहूके तन्तमें अनन्तसुख पावेगा ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

॥ इत्यादिक उपदेश सुणीने गई पुरुषदा सारीरे॥

गुरु पूछी कही वात पुरवली मनसा येह हमारी रे ॥ धी० ॥ ६ ॥ भवभयभीता तीनु जणाह्मे लेस्यां शरण तुह्मारी रे ॥ सद्गुरु बोल्या देवानूपिया ए तुम भली विचारी रे ॥ धी० ॥ ७ ॥ साधुपणांकी रीती सगली सीख्या आलस टारी रे ॥ मिलकर श्रावक वर्गदिङ्कारो महोत्सव कीधो भारी रे ॥ धी० ॥ ८ ॥ अष्टादश चोराणूं वरसे पाली पीठमजारी रे॥ कातीसुद तेरसने लीधा पञ्चमहाव्रतधारी रें ॥ धी० ॥ ए ॥ चोमासो उतस्या पालीसें कर विहार उपगारी रे ॥ वसु ठाणापालासणी आया करता उग्रविहारी रे ॥ धी० ॥ १० ॥ जोधनगरसे पूजरतनपिण वरसा काल उतारी रे ॥ पालासणी पधास्या सबही हरष हुवा अणपारी रे ॥ धी० ॥ ११ ॥ भव्य प्रतिबोधन श्रीमुखसे अद्भुतकथा उचारी रें ॥ चतुरसंघमें घन जिम गाजे अमृतगिरा[२] उदारी रे ॥ धी० ॥ १२ ॥

॥ सवईया ३१ ॥

॥ शोभत पुरुष नांहि भूरि भुजबन्धहूतें चन्दकी प्रभासे शुभ्रमोता हल हारतें ॥ शोभत सनान तें न चन्दनके लेपतें न केशके सवारतें न फूलनकी मारतें ॥

---

१ 'समूह' २ 'वाणी'

विडुषवखानी नीति धर्मकी निशानी जानी शोन्नत सुज्ञानी सुरवानीके सिंगारतें॥वानीको विज्रूपनसो सत्य पहिचानियतु कहाहे असत्य उंर ज्रूषनके ज्ञारते॥१॥ आशाकी नदीमें पानी पूरन मनोरथ सो तृष्णाकी तरङ्ग तातें आकुल अनन्त है ॥ कामादिक मत्र क छप छीहे कुतर्ककोटि धीरजसें तरु ताको तोरत वह न्तहे ॥ मोहसे जंवर ज्रूरि डुस्तर गहनतातें देखिये करारे तहां चिन्ताके डुरन्तहे ॥ पार पहुंचेहें इनसरि ता अपारहूते योगीजन वृन्दते आनन्दकोलहंतहै २

॥ ढाल तेहीज ॥

॥ कहूं कगालग ठटा वखाणकी वोधवीजदा तारीरे । कुन्थ्यावरणी डुकानमें मानव जो मांगे सो त्यारी रे ॥ धी० ॥१३॥ तीन चोमासा पूजरतनके पास किया सुविचारी रे । च्यार चोमासा किया हरषसूं पूजहमीरके लारी रे ॥धी०॥१४॥ सात चोमासा पूजक जोमी साथ किया तिणवारी रे । पांच कियाकनी रामसुनी संग खप कीधी जणवारीरे ॥धी०॥१५॥ सोसो गाथा नित्य करी मुखविगया दूर निवारी रे। किया थोकमा मुखे डोडसें बुद्धि तणी वलिहारीरे

१ 'समूह'

॥ धी० ॥१६॥ नक्तिविनयकरि आगम सीख्या गुरु आज्ञा शिरधारी रे। अङ्ग उपङ्ग मूलछेदादिक कं ठ किया सिरिकारी रे धी०॥१७॥ सूत्र केवली घणां जीवांरे समकित घटमे डारी रे। वीजी ढाल मनो हरनीषी सुणतां लागे प्यारी रे ॥ धी० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

लाखों ग्रन्थ लिख्यो जिणें संचररहित उदार ॥ अक्षर मुक्ताफल जिसा शङ्का नही यलिगार ॥ १ ॥ विविधापनन्ती आदिदे सूत्र लिख्या अनिराम ॥ पे खतमन प्रफुलित हुवे यत्रादिक सब गाम ॥२॥ सार स्वत पुनि चन्द्रिका अमरकोश उर धार ॥ अरथ युक्त लिखि सीखिया प्राकृत व्याकरणसार ॥ ३ ॥ तव न चोढाल्या चोपियां फुटकर पत्र अनेक ॥ नव तत्वादिक थोकडां लिखिया धरिय विवेक ॥ ४ ॥ टब्बो टीका दीपिका अवचूरी सुविशाल ॥ वांचत शु द्ध उचारणी वचन दीज रसाल ॥ ५ ॥ नगवई सू त्र प्रमाद तज वांची चवदेवार ॥ निंननिंन कर स मझावणी जाणे बहु नरनार ॥ ६ ॥ पण्डिताई ऊल की नही कोगोइ सो गम्नीर ॥ प्रकृतीना नद्रिक इसा विरला साधु सधीर ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ नर्मेहु नमन्त परगुनकों कहत सन्त आपने अनन्तगुन जाहर जनावे है ॥ स्वारथ अराधे पर कारज विशेष साधे प्रेमरस पावे तिन तापन तपावे है ॥ मूढमति मछरतें कहैं कटु अछरपै छिमा गहि दूपनसो तिनमे दिखावे है ॥ जरे जस पूरजारे से वत सदैव सारे एते गुनवारे साधू कितने कहावे है

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ रसीयानी देशी ॥

॥ क्षितितले विचरेहो आतमजावता अतिशय वन्त अतीव सुज्ञानी ॥ अमल अखण्ड प्रताप दिण न्द ज्युं प्रतिबोधे जवि जीव सुज्ञानी ॥ १ ॥ परउप गारी हो मुनि नन्दरामजी घनतरु सरवर जेम सु ज्ञानी ॥ शशिजिम शीतल वदन सुहामणो पेखत उपजे प्रेम सुज्ञानी ॥ पर० ॥ २ ॥ पाखण्डमतने हो निरघाटन किया प्रसनपदुत्तरंदेय ॥सु०॥ निजउतपात बुधे करिजीतिया डुरजय वादी जेय ॥सु०॥पर० ॥३॥ गोगणमे जिम सांड धढ्ढ कियो अथवा हरी घनगा ज ॥ सु० ॥ करत वखाण चतुर्विध संघमे पडती

१ 'हटाया'

घोर अवाज ॥ सु० ॥ पर० ॥ ४ ॥ एकप्रकार असं
जंम परहस्यो दोयविध वन्धन गम सु० ॥ गारव स
ल्लेन दण्ड विराधना विगथासें नहि काम ॥सु०॥पर०
॥५॥ चतुरगति दुःख मेटण उर वसे शरणा च्यार
प्रधान ॥ सु० ॥ वेद कपाय संज्ञा तज ध्यावतां धरम
सुकल दोय ध्यान ॥ सु० ॥ पर० ॥६॥ पञ्चमहाव्रत
निरमल पालता पाले पञ्च आचार ॥ सु० ॥ पञ्चप्र
माद तजे सुमती जजे पञ्चविषयसुख वार ॥सु०॥ पर०
॥ ७ ॥ षट्ट दरसन पटदरव प्रकाशता छकायने हण
वारो नेम ॥ सु० ॥ सात नयां लख वसु मद परहरे
प्रवचन मातसुं प्रेम ॥ सु० ॥ पर० ॥ ८ ॥ वाडस
हित वसे ब्रह्मचरजमे धरमयँती दशधार ॥ सु० ॥
अंग[11] उपंग[12] अरथयुत सुध जण्यां किरिया[13] स्थानक
टार ॥ सु०॥ पर०॥ ९ ॥ चवदे पूरवनोहो सार हृदय
धस्यो पनरे जोग पिछाण ॥ सु० ॥ षोडशभेद कषा
य विवरजता सोले विजकत्यारा जाण॥सु०॥पर०॥१०॥
संजंम पाले हो कडुंप[18] निवारने[4] ज्ञाताध्ययन[19] जणन्त
॥ सु० ॥ असमाधिना हो स्थानक वीसते टाले मन
धर खन्त ॥ सु० ॥ पर० ॥ ११ ॥ एकविस सवला हो

---

१ 'ज्ञत' २ 'मध्यविषयकषायनिंदाविकथा' ३ 'खत्यादि. ४ पाप

दूषण परहरे परिसह उपना अजङ्ग ॥ सु० ॥ पांच इन्द्रानी हो विषय तेवीसठै नकरे तास प्रसंग ॥ सु० ॥ पर० ॥ १२ ॥ तीरथनाथ जजे जलजावसुं जावनां वरज पचीस ॥ सु० ॥ ठवीस अध्ययन जणें तिहू सूत्रना राजत गुण सगवीस ॥सु०॥पर०॥१३॥ वसतर पातर अहार उपासरो निरवद्य जोगवे च्यार ॥सु०॥ निशदिन लीन रहे श्रुतज्ञानमें जाणे देखण हार ॥ सु० ॥ पर० ॥ १४ ॥ मेरु धरा वायु अहि तरी हरी करि रवि शशि सिन्धू मेह ॥ सु० ॥ खग जारएरु नज फटिक रतन तणी पावति उपमा एह ॥ सु० ॥ पर० ॥ १५ ॥ इत्यादिक गुणकर मुनि दीपता विहरे जुवि महा जाग ॥ सु० ॥ जिनमारगरो उद्योत हुवो घणो कियो उपगार अथाग ॥ सु० ॥ पर० ॥ १६ ॥ गुण ग्राहक गुणिजन मन मोहनी पजणी ए तीजी ढाल ॥ सु० ॥ सतगुरुजीरा गुणग्राम किया थकां प्रगटेमंगल माल ॥सु०॥ पर० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिवे सहु चउमासा तणी विगत सुणो चित लाय ॥ जवजल डूबत तारिया जीवघणां समजाय

---

१ 'सुमेरु पृथ्वी सर्प जिहाज सिंह हस्ती सूर्य चन्द्र समुद्र गेंडो पक्षी आकाश.

॥ १ ॥ दिल्ली हरिगढ राणिपुरे वीकानेर सुवास ॥ हरसाले पण क्षेत्रमें एक एक चउमास ॥ २ ॥ आंव ग्राम कोटे रियां दो दो वरसा काल ॥ पण जयपुर अजमेर वसु पण पाली सुविशाल ॥ ३ ॥ वडलू च्यार पिपाड त्री ॥ तिथि नागोर सुठाम ॥ शर जोधाणां सहिरमे चतुर मास अभिराम ॥ ४ ॥ ए छपन चउ मासमे आनंद वरस्या मेह ॥ आप रह्या जिण क्षेत्रमे सुजस लियो गुणगेह ॥ ५ ॥ नितनव कलपें विचरिया ग्राम नगर पुर सहेर ॥ तन शक्ती कम देखने ठाणे रह्या अजमेर ॥ ६ ॥ भक्तिभाव वहु भांतिसुं करे सकल नरनार ॥ पण्डित मरणो किम हुवे ते दाखू अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ४ ॥

॥ महलांमें वैठी हो राणी कमलावती ॥ ए देशी ॥

॥ संवत उगणीसे हो वरस पचासमे [१]मधु सुध पञ्चमी उपवास ॥ कीधो पारणदिन आहार चल्यो नहीं आयु स्थित जाणी आवी पास ॥ १ ॥ ज्ञानी गुरु थारा दरशण विनतरसे हो मनको मांहरो आं कडी ॥ सातमने आंविल करणा मांडिया ठायो नव पदजीको ध्यान ॥ चउसरण पइनो हो सरणा च्या

१ 'चैत्र

रनो आठमने वांच्यो सरस वखाण ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ नवमीने औषध मन विन मे दियो नवि लीधो वो ल्या मुखसें एम ॥ अवतो संथारो हो करणो योगछै खाली भेजे तूं मुजने केम ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ दशमीके दिन पिण आहार कियो नही एकादशीने श्रावक आय विनव्यो कर जोमी स्वामी आपरे अणसण करवारो अवसर नाय ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ तारो नवि जीव घणांने आपतो सारोछो निजपर आतमकाज ॥ तुमचो आलम्बन च्यारू तीरथने देवो श्रुतज्ञानादी साज ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ दर्शन प्रियकारी नयणे निर खतां प्रगटे धरमानु राग ॥ उत्तम पुरुषारो हुवो वि राजणो धनछै शुणक्षेत्रका भाग ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ मुनि कहे सुणो श्रावक टालिकुंणसके केवली देख्या जे भाव संजम मन्दिरके हो कलश चढावणो छे मुझ मनमे अधिक उछाव ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ यतः वाल मर णाणि वहुसो अकाम मरणाणि चेव वहुयाणि ॥ म रिहन्ति ते जीवा जिणवयणं जे नयाणन्ति ॥ वार सने विधिसुंकरि आलोवणा अरिहन्त सिद्धारी साख सवहीजीवांसें खमत खमावणा खमज्यो सहु योन चोरासी लाख ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ संथार पइनो

हो वांचो अरथनो पिण्ड विशुद्धा तुरपचखाण दोहा रणजीत रुशान्ति प्रकाशनां लागो इम अणसण को ध्यान ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तेरसने प्रातसमें मुनि वो लिया में तो करलीनो संथार जीवुं जहां लग मुजने त्यागछे असणा दिक चउविध आहार ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ अण सण कीधो मुनिनन्दे आजतो थई सारा सहेरमे वात धन धन सहुको मुखसे उच्चरे दरसण करवाने मंडीजात ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ जोधा णा अहिपुर पाली सहेरका श्रावक गण ततकाल ह रि गढ वडलू नगर नवा तणां संथारो सुणकर आया चाल ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ चउदसने तनमे व्यापी वे दना चोथा पहोर मजार सास वधियो पिण सुणियो पाखिको पडिकमणो साहसधार ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ चैत्री पूनमने हो श्रीजिनराजनो धरतां सुध मन ध्यांन ग्यारापर पैंतीस मिनट गयां पछे छूट्या तत पिण प्राण ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ आयो संथारो वावीस पहरनो पूरी निज मनमारी आस मेली उदारिक देही छोडने कीधो स्वर्ग निवास ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ प्राते संथारो सीझो सांभली मिलिया मानव थोक वैकुंठी महोछ ववड आडंवरे कीधो श्रावक लोक ॥ज्ञा०

॥ १६ ॥ कीधी उठाली गहरा अरथंनी नींको धरम सुं राग मनमे उदासी आंसू लोचने दीधो कुल चन्द न मे दाग ॥ ज्ञा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल अथिर संसारमे जन मिन को मरि जात ॥ जनम जिनहुंको जानिये वंश करत विख्यात ॥ १ ॥ कञ्ज फुलावत भानुकर चन्द कमोदनि वृन्द ॥ विनजाचे घनदेत जल ऐसेहि साधु अनन्द ॥२॥

॥ ढाल तेहिज ॥

॥ धरम दिवाकर हुं तो भरत मे आथमियो आठो अणगार ॥ पण्डिता चारीहो मुनिवर नन्दसा विरला होसी इणवार ॥ ज्ञा० ॥ १८ ॥ उगणीसे चोपन आश्विन मासमे वदिपक्षे द्रुतिया सोम विशाल ॥ सुभग पुरुषाने प्रेम प्रकाशनी जयपुर मे जोडी च्यारूं ढाल ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वन्दो श्रीगुरुदेवके चरण अम्बुजकी कोर ॥ जो कि लोक परलोकके हितू सहायक मोर ॥ १ ॥ गुरु दिनकर चिन्तामणी वा सुरतरु सुरधेन ॥ विनमांगे फल च्यांरि शुभ तुरत देत सकुचेन ॥ २ ॥ गुरु सम

१ 'धन, २ 'धर्म अर्थ काम मोक्ष,

दूजी उपमा नहि देखी जगमांय ॥ किसनलाल खोजी घणी पिण कोइ पांमीनांहि ॥ ३ ॥ धन्य धन्य गुरु देवजी धन्यवाद गुरु तोय ॥ पशुता टाली नरपणो सद्गुरुदीनो मोय ॥ ४ ॥ अनुत्तरवासी सुर सवे जवलेखक पट्ट होय ॥ महिमा श्रीगुरु देवकी लिखे निरन्तर सोय ॥ ५ ॥ सवधरती कागज करे लेखनि सहु वनराय ॥ सर्वसिन्धुकी मषि करे गुरु गुण लिख्या न जाय ॥ ६ ॥ तूठो तूठो तूठोरे मुझ जगनो तारक तूठो एदे० सफल मनोरथ आजरे मुज फलियो ये ॥ टेक ॥ श्रीगुरु देव तणां गुण करतां पयमे साकर भलियो रे मुज फलियो ॥ १ ॥ उत्तम मुनिका गुण गावन्तां पातक जावे टलियो रे ॥ मुज० ॥ २ ॥ मुज ऊपर उपगार कियो अतिकाढ्यो भवजल कलि योरे ॥ मुज० ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

अवनी अनेक मतिमन्दनके वृन्दनकी मन्दता निवारीके अमन्दता उघारे है चेननमे सांच सुधा सींचत सनेह सेती मानता महान पाप पुञ्ज तें निवारेहै ॥ वाढत विशेष चारु चित्तकी प्रसन्नताई कीर्ति सुहांइ दिश विदिश वधारे है महिमा अपारसो वखा

ने कहा वारं वार साधू संत संग नांही कोनको सु धारे है ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

सुगुरु कृपा करि मोय वतायो शिवपुर मारग स लियोरे ॥ मुज० ॥ ४ ॥ लोह समान हुं तेमें मुनि गुण रस कूंपी रस ढलियो रे ॥ मुज०॥ ५ ॥ गुरु ज गती कर ज्ञान जंण्यो जे ते नवि जावे खलियोरे ॥ मुज० ॥ ६ ॥ किसनलाल कहे गुरुपद पङ्कजे मुज मन मधुकर[१] हलियोरे ॥ मुज० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इम अलप गुण नंदराम मुनिका गाविया मन मोदसें अ नघ वारी अखिल जरियो हृदय आनंद होदसे ॥ मुज वुद्धि थोकी तदपि जोकी चतुर ढाल विनोदसे चूक सगली माफ कीज्यो सुकवि पण्डित वोधसे ॥१॥ पण मास वे दिन वरस ठप्पन साधु पद वर पालियो वसु मास नव दिन वरस सित्तर सकल आयु जालियो॥यथा सुंणियो चरित गुरुमुख तथा मे वरणन कियो ठंछो अधिको कह्यो जिनको मिथ्या डुष्कृत में दियो ॥२॥ कुंजे वांध्यो जल रहे जिम कुंज जलविन थावनां ज्ञाने वांध्यो मन रहे सोही ज्ञान गुरुविन पावनां ॥

---

१ 'भ्रमर'

इम जाणके नित मेव सिरी गुरु देवका गुण गावना किसनलाल सु शिष्य जम्पै सदा हरष वधावनां ॥ ३ ॥ अथ पञ्च परमेष्ठि गुणमाला ॥

॥ दोहा ॥

मन्त्र महा नवकारके सुगुण एकसो आठ ॥ ताको कुछ विवरो कहुं सुगम अरथ मुख पाठ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तरू अशोक तले अरिहन्त पूठे नामण्डल झलकन्त ॥ रतन जडित सिंहासण होय चामर श्वेत मनोहर जोय ॥१॥ छत्र तीन आकाशे चले देव डुन्डुन्नि वाजे नले ॥ अचित कुसुम वरषा विस्तरे दिव्य धुने वांणी उच्चरे ॥ २ ॥ केवल दरसन केवल ज्ञान सुख अनन्त समकित शुन ध्यान ॥ वल वीरज द्वादश गुण वृन्दा तीने गढवारे परखन्दा ॥ ३ ॥ अतिशय धर जिणवर चोतीस वचन वांण कहिये पण तीस ॥ दोष दूर दश आठ अनांण सहस आठ लछण गुण जाण ॥ ४ ॥ चौमुख ब्रह्मा संशय हरे चौसठ इन्द्र महो छव करे ॥ समोसरण काया परिमाण मधुरी वाणी करे वखाण ॥ ५ ॥ वाणी अरथ हिये अवधार गणधर ग्रन्थ रचै विस्तार ॥ चवदे पूरव अङ्ग इग्या

र सब विद्या तिणमांहि विचार ॥ ६ ॥ उपजे खपे सदा थिर रहे त्रि पदी पाठ अरथ सुधलहै ॥ चउनाणी गणधर महातमा निश्चै केवली परमातमा ॥ ७ ॥ धरम धजा आगल संचरे जूसएल विचरे इणपरे ॥ सुर नर मुनि जन जस गावन्त किसन कहे महिमों मनखन्त ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

राग द्वेष जीते सबल वीतराग जगवन्त ॥ आठ करम अरि दूर कर अमर जये अरिहन्त ॥१॥ केवल दरसन ज्ञान हे सुख समकित वलसार ॥ ए च्यारे गुण केवली अतिशय उर अपार ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

॥ सिधपदकी महिमा अवकहूं शिव स्वरूप सांचों सरदहुं ॥ परमेश्वर परमातम जांण परम पुरुष नहि जाति पिछाण ॥ ए ॥ सुख अनन्त खायकपरिणाम केवल ज्ञान विमल सुध सांम ॥ केवल दरसन देखे सहु सगती सार वल वीरज वहु॥१०॥ सूक्ष्म गुण सुखहै सासता तीनजेदं अवगाहन ठता ॥

१ तिजागहीणशेपार्ज सिद्धाणो गाहणा जणिया इति न्यायात्'

अगुरु लघू अबादा जेह अष्ट करमखय अठ गुण ए ह ॥ ११ ॥ तेज पुञ्ज दीपें द्युतिवन्त ज्योतिरूप व्यापक भगवन्त ॥ निराकार अविकार धरन्त केवल राम कहे सहुसन्त ॥ १२ ॥ अगम अगोचर अखय अ भंग अजर अमर अरु अचल अखण्ड ॥ अमल विमल अविनाशी नांम अलख अरूपी अविचल धांम ॥ १३ ॥ मोक्ष मुगति अरु शिखर सुथान शिवमन्दिर वैकुण्ठ वखान ॥ पञ्चमगति अविगल अभिराम अजय अनुपम थिर विसरांम ॥ १४ ॥ सेवक साहिब एक स्वरूप माहो माहि मिले सहु भूप ॥ ज्यूं सागरमें बूंद समाय त्यूं शिव खेत कह्यो जिन राय ॥ १५ ॥ चाकर ठाकुर नांहि शरीर जरा मरण जामण नहि पीर ॥ रोग सोग जिहा नाही विजोग संपति विपति भरम नहि भोग ॥ १६ ॥ आवा गमण निवार्यो सही फिर चिंहु गतिमे अवे नही ॥ सब शिव रास नमूं गह गई किसन वीनती इण परकही॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ जनम मरन जाके नही अविनाशी पद ठाम॥
निराकार निरलेप हे सो है केवल राम ॥ १ ॥ गुण

छतीस अड संपदा सो आचारज इन्द ॥ वहु परि वारें शोनता ज्युं ग्रहगणमे चन्द ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ त्रस थावर प्रति पालण हार झूट वचन वोले न असार ॥ चोरी करम करे अवहील जाव जीव पाले शुधशील ॥ १८ ॥ दरव नाव चारित आदरे तप दोय नेद करम निरजरे ॥ धरम विषै वल वीरज करे ए आचार पांच विध धरे ॥ १९ ॥ वाजागीत सुणे न हि राग रूप रंग निरखेन सराग ॥ गन्ध विषै वरते सम नाउ षट रस लंपट नही गणराउ ॥ २० ॥ आठ फरस रस विषय निवार ए पांचें इंदरी परि वार ॥ निरदूषण थानक सेवता रमणी रसिक कथा विरमता ॥ २१ ॥ आसन जास त्रिया नहि पास नारि न जोवे नयन हु लास ॥ नीततणे अन्तर नवि रहै पूरव केल कथा नवि कहै ॥ २२ ॥ नोज न वल कर ताकूं तजै सरस आहार अधिक परि वजै॥ सव सोना तनमन अवगणी ए नव वाम शील व्रत तणी॥ २३ ॥ खिम्या करे न करे कहुं कोप न मिण विने अनिमान न उंप ॥ सरल सुनाव कपट नहि जास है सन्तोष लोन नहि तास ॥ २४ ॥ जीव ज-

तन जयणा पग भरे साला रूप वचन अनुसरे ॥ अ सन गहैं निर दोषज होय वस्तु उठावे मूके जोय ॥ २५ ॥ अचित भूमि परठै मल पञ्च तन संवर संय म कर संच ॥ वचन स पाप कहै न मुनीश मन स माधि ए गुण षट तीस ॥ २६ ॥ वहु सुरति बुंधवन्त कहाय परगट वचन सु सुन्दर काय ॥ दया धरम उज्जल आचार वरजै वाद मिथ्यात व्योहार ॥ २७ ॥ यह गणवर आठै संपदा संघ चतुर्विध सेवे सदा ॥ मैढी भूत महा निगरन्थ सांच वतावे शिवपुर पन्थ ॥ २८ ॥ गुण उत्तरोत्तर और उदार मे मति अलप लहूं नहि पार ॥ मेरा गुरु आचारज एह किसन कहै प्रणमूं ससनेह ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जात थापना सरव गुण शिलप कला वहु खेद॥ धरमाचारज ए कह्या आचारज षट भेद ॥ १ ॥ वी तराग वाणी वधे वहे अख ण्डितआण ॥ सरव सुगुण संग्रह करे सो आचारज जांण ॥ २ ॥ नही उपाधि जाके उदे सो कहिये उवझाय ॥ ताके गुणपण वीस है सवदे सवद समाय ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ पांच महाव्रत मेरु समान इन्द्री पांच दमें गुण वान ॥ पाले सुकल सु पक्षा चार पांच सुमति तिहुं गुपति विचार ॥ ३० ॥ जणे जणावै पूरव अङ्ग त्यागे सरव कषाय कुसङ्ग ॥ ए पणवीस पाठक गुण ज्ञान पर उपगारी परम प्रधान ॥ ३१ ॥ जिणवर आंण अ खण्डित वहै षटद्रव्य जाव जेद सरदहै ॥ गुण था नक मारगणां मोख समता संवर जाव सन्तोष ॥३२॥ आश्रव पांच करम वंधे च्यार च्यारूं गति कहिये संसार ॥ चवदे राज लोक संठाण स्वमति परमति सकल सुजाण ॥ ३३ ॥ जव्य अजव्य सासिया जाव चोथो अविचल जेद लखाव ॥ स्व परगुण दोष जाणें जेद राग द्वेष व्यापे नहि खेद ॥ ३४ ॥ ज्ञान क्रियासूं सांची प्रीत दूर करे आगम विपरीत ॥ संयम तप जप खप वहु करे किसन कहे प्रणमू मन खरे॥३५॥

॥ दोहा ॥

॥ जाति उपाधि स्थापनां सर्व गुणे मुनि राज ॥ जणेसु आगम उपदिशे चिंहू जेदे उवजाय ॥ १ ॥ द्वादशाङ्ग वाणी विमल वरते सदा समाधि ॥ सुमति

१ 'प्रमाद अशुभ जोग ए कही,

सुराणी संग रहै कुमती कलि न उपाधि ॥ २ ॥ योगध्यान सरधान थिर थिर आचार विचार ॥ वय तप सुतर मति धरम थिर थिवर पांच प्रकार ॥ ३ ॥ मन थिरता थिरता वचन थिरता काया होय ॥ धरमध्यान थिरता करे थिवर कहा वै सोय ॥ ४ ॥ वन्दू साधु सुमारगी मोटा महिमा वन्त ॥ शुद्धि ज्ञान सरधानसूं चोखा चारितवन्त ॥ ५ ॥ परिग्रह चउदे विध तजो जो जियकूं दुखदाय ॥ अवर कछू बाकी रह्यो ताको करे उपाय ॥ ६ ॥ धरम उपग्रण सै सही साधण शिव पुरपन्थ ॥ पिण मनमे ममता नही याते है निगरन्थ ॥ ७ ॥ थिवर कल्पी जिन कल्पि सुंन कल्पातीत महन्त ॥ ए तीनूं विवहारियासुं न विवरो बुधिवन्त ॥ ८ ॥ नगनदोय इव जावसूं एकाकी विच रन्त ॥ सो जिन कलपी जांणिये गुण अठवीस धरन्त ॥ ९ ॥ यथाख्यात चारित्र धर खायक समकित वन्त ॥ कलपातीत सजोगसूं केवल ज्ञान अनन्त ॥ १० ॥ थिवर कल्प परसादसूं क्रिया विविध परकार ॥ गुण सगवीससु साधुके सुंणताको अधिकार ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ प्रथम खिमा दूजो वैराग शीतादिक वेदन जय त्याग ॥ मरणा न्तक तिहूं उपसग सहै वस कर तीन जोग निरवहे ॥ ३६ ॥ सगति सता गति जात सुज्ञान दरसन पिण चिहुं जेद पिठान ॥ चारित च्यार इसीपर लहो जाव करन सच जोग सुं कहो ॥ ३७ ॥ च्यार कषाय करे परिहार वर जे इन्द्री वि षय विकार ॥ जार महाव्रत धारेसीस ए मुनिवरके गुण सगवीस ॥ ३८ ॥ [1]एगोहं मेरो नहि कोय दीन पणो आणे नही सोय ॥ कर संजोग जम्यो वहु काल आतम राम करीन संजाल ॥ ३९ ॥ आरत रौद्र राग नहि द्वेष ॥ तीनू सल्प निसल्प विशेष ॥ चिंहु जाषा प्रतिवन्ध विवेक पञ्च प्रमाद निवारय नेक ॥४०॥ किरया पञ्चमहा दुःख दाय साधु धरम सं जम सुख थाय जेद सतावन संवर सार आश्रव जेद वे यालिस वार ॥४१॥ संख्य असंख्य अनन्ता नन्त साधु तणां गुण कोन कहन्त ॥ ज्यूं रत नाकर रतने जस्यो गिणे कवण मूरख मति हस्यो ॥४२॥ निज गुणसूं जव सायर तस्या निरमल होय मुगति सुख वस्या ॥ किसन

---

१ 'एगो मे सासर्ऊ अप्पा नाण दंसण संजुया ॥ से सामे चाहिरा जावासव्वे सजोग लखणा, ॥

कहे धन मेरे भाग नमन करूं नित चरने लाग ॥४३

॥ दोहा ॥

॥ समता दमता नमनता खिमता सुमता मांहि॥ रमता वमता विषमता ममता कुमता नांहि ॥ १ ॥ ए मुनिराज सराहिये कमलरीति जगमांहि ॥ आज्ञा श्रीजिनराजकी नेक विराधेनांहि ॥ २ ॥ अव श्रावक करणी कहूं दुख हरणी सुख मूल ॥ लघु भ्राता ज्ञाता गुणी पाले वरत सुथूल ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जीव विचारनव तत्वके बोल दश पचखाण करे दिन खोल ॥ अतीचार आलोयण लेह चिंहु गति जीव खिमावे जेह ॥ ४४ ॥ मधु मदरा आमिषकाचरा उंबर कन्दरू वर पीपपरा ॥ आठे अभक्ष्य कह्या अरिहन्त तपस्या दश दोय भेदकरन्त ॥ ४५ ॥ चउदे नेम विचारे जाण तजे पञ्चदसकरमादान ॥ निरदूषण बारे व्रतधरे एकादश प्रतिमां विधवरे ॥ ४६ ॥ सत्त सरूप समता रसराग निश भोजन अणगल जलत्याग ॥ दरसन चारित भाव सुज्ञान उपशमच्यार कषाय सुध्यान ॥ ४७ ॥ उत्तम किरिया श्रावक तणी पञ्चम गुणस्थानकके धणी ॥ गु

एएक वीसधरे गुणधार तेहतणो सुणिये अधिकार ॥ ४७ ॥ करुणांवन्त लज्जा गुणवन्त मिष्ट वचन वोले वुधिवन्त ॥ विनयविवेक विचार विनाए सोम निजरशीतल सुधवाए ॥ ४ए ॥ पर उपगारी परम दयाल गुणरागी आज्ञा प्रतिपाल ॥ गुणन विसारे सरल सन्तोष पर अवगुण न कहे परदोष ॥ ५० ॥ दीरघ दृष्टि विचारे बात लवधिलखी उपयोग कहात ॥ ए एकवीस अरथ अवधार किसन कह्यो श्रावक आचार ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरथ दएम विधि आचरे अनरथ दएम तजेह ॥ विरता विरत विवेकता श्रावक कहिये तेह ॥ १ ॥ जोरुचि काल अनादिकी कुमता कुटिलकु चाव ॥ तिएसें अरुचि अन्नावनां सो समकित समन्नाव ॥२॥

॥ चौपई ॥

॥ देव निरञ्जनगुरु निगरन्थ दया धरम आगम शिवपन्थ ॥ ए समकित कहिये विवहार निश्चै निजगुण लखै सुसार ॥ ५२ ॥ तत्वतीन तिहुगुणकी रीत जिन वचनांकीहै परतीत ॥ नहि संशय नहि फल संदेह पर पाखएमीसूं नही नेह ॥ ५३ ॥ दिन

दिन समता सुमति सुभाव दमता इन्द्रीकुमति कु भाव ॥ जिन धरमीसूं अधिक सनेह सब परिवार गिणे पर एह ॥५४॥धरम न होय करे जब पाप तब जियकूं निन्दै निज आप ॥ बालकबच्छडारीति सुजांण केरुनमूके धरम वखाण ॥ ५५ ॥ जैन धरमकी महिमा होय एसो काजकरे नरलोय ॥ करुणाकरे दुःखिजन देख निरदय जीवहणेंन उपेख ॥ ५६ ॥ दया धरम धारे अरु कहे दयाधरमसूं लागोरहे ॥ दयाधरमसूं परम सनेह दया धरमविण निन्दय देह ॥ ५७ ॥ दयाधरममें है परवीण दया धरममें हैलयलीण ॥ दयाधरम धीरज चितधरे दयाधरम थिरता मन करे ॥ ५८ ॥ संकट मांहि अडिग नितमेव भगति सुदेव सुगुरुकी सेव ॥ विषय वरगसेती वैराग दयाधरमसूं सांचोराग ॥ ५९ ॥ हरप हेतसूं जिनवर भजै चित चोखे चञ्चलता तजै ॥ सरधाबीस बोलखपकरे अव्रत गुणठाणें गुणधरे ॥ ६० ॥ भाव चारितियो चोथो जान यथा सकति कछु द्रव पचखाण ॥ समकित धर नर नारी होय किसन कहै यह लछण जोय ॥ ६१ ॥ गुणमाला गुंथी गुण गाय तीन काल गुणिये चित

लाय ॥ लाज अनन्त महाफल कह्यो किसन कहे चिन्ता मणि लह्यो ॥ ६२ ॥

॥ छन्द अरिल ॥

॥ जम्बूद्वीप सुमध्य सुदरसन मे रहें त्रिगुणी परधि प्रमाण अधिकचिंडु फेरहें ॥ सप्तराजके सीस ईशसु लंकहें आतमज्ञानी रामनाम निकलङ्कहें ॥ ६३ ॥ नहि आदी नहि अन्त नही आकाशहें नही राव नहि रङ्क नही प्रभुदासहें ॥ नही भूख नहि प्यास नही डर आशहें नही धूम नहि धांम नही धन रासहे ॥ ६४ ॥ नही भूम नहि भान नही तम तेजहें नही धूप नहि छांह नही सुखसेजहें नही बंध नहि मोख नही डुखदोषहें नही पुन्य नहि पाप नहि पखपोषहें ॥ ६५ ॥ नहि भेख नहि लेख नही रस रागहें नही देह नहि नेह नही तपत्यागहे ॥ नही गाज नहि वीज नही जल जोनहे नही नाज नहि वीज नही पशुपोनहै॥६६॥ नही जात नहि न्यात नही कुलकाणहे नही रात नहि वात नही हित हाणहे ॥ नही वृद्ध नहि वाल नही मतवालहे नही काल नहि चाल नही जञ्जालहे ॥ ६७ ॥ नही न्याय नहि नीति नही भय

भीतिहे नही राज नहि रीति नहि गुरुभीतिहे ॥ नही आग नहि डंस नही अपसोसहें नही राग नहि रोष नही जरूजोषहे ॥ ६८ ॥ नही प्रीत नहि प्यार नही नरनारहे नही जीत नहि हार नही अवतारहे ॥ नही बोल नहि चाल अचल उद्योतहे नही रूप नहि रङ्ग जोतमे जोतहे ॥ ६९ ॥ नही मेवामिष्टांन नही तिलतक्करा नहि पेभा पकवान नही गुडशक्करा ॥ नही मलमूत्र विकार न भूपण अङ्गहें नहि शोभा सिणगारन सुन्दर संगहे ॥ ७० ॥ अजर अमर थिरवास सरवसाता भई जनम मरण दुखनांहि असाता सव गई ॥ केवल आतमराम सुजस सुखसाजहें किसन सदाउणठाम रामको राजहे ॥ ७१ ॥ इति गुणमाला ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार निखेपा सातनय भाषाभेद वेयाल ॥ असञ्झाइ चौतीस पुनि षोडश वोल विशाल ॥ १ ॥ वयणलिङ्ग पुनि कालत्रय उपनितादि चउ वोल ॥ प्रत्यक्ष रूपरोक्ष तिम अन्यर्थ गिण सोल ॥२॥ निरवद्यरू सावज गिरा भेद न जाणे लेश ॥ कल्पे नहि तसुबोलवो तो किम दे उपदेश ॥३॥ पिऊ पर

वर्जा ऊठियो पिण रहि मोटीभूल ॥ भाषा भेद न जाणियो जिन मारगको मूल ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

॥ सावज्जमणवज्जाणं भासाणं जोनयाणइ विसे सं वुत्तंपि तस्सनखमं कि मंगपुणदे सिउं काउं ॥१॥

॥ कवित्त ॥

॥ जणवंये १ समंये २ ठवंणा ३ नामं ४ रूपं ५ भावं ६ पमुच्चँ ७ व्योहारं ८ जोगं ९ उंपमां १० उ

---

१ 'जणवयसच्चा-जिस देश ज्यो भापा वोले सो सत्य २ 'समयसच्चा'—जैसे कर्दमसें अनेक चीज उत्पन्न होय परन्तु सामान्त भापासें पङ्कज शब्दका कमलही अर्थ समझाजाय, ३ 'स्थापनासत्य—जैसे जिन भगवानकी प्रतिमाकूं जिन प्रतिमा कहो कोई हर्जकी वात नही अथवा एकापर१विन्दी दिये दश२विन्दी दिये शत ३ विन्दीदिये सहस्र इत्यादि. ४ 'नाम सत्य जैसें गुणरहितकूं गुणसागर इत्यादि. ५ 'रूपसत्यं'—महात्माने रूपे क्रिया भ्रष्टकूं महात्मा कहे. ६ 'भावसत्यं—'जैसें सूत्र भापायें एक वरण तिहां पांचही वरण लाभे परंवगपक्षी सुपेद शुक हरयो कोकिल श्याम, ७ पमुच्च—जैसें कनिष्ठाङ्गुलीकी अपेक्षा अनामिका वडी और मध्यमाकी अपेक्षा तर्जनी छोटी वेहूं, आंगली अनन्ता पुद्गलां करिनी पनीछे ऐसे वोलो कोई हरज नही, ८ 'व्यवहार सत्य'—जैसें पर्वत आश्रित तृणवृक्षादिक जलता देखने कहे पर्वत जले है अथवा अमुको गांवन्हांटो इत्यादि, ९ 'जोगदण्डेन दण्डी छत्रेन छत्री तथा अमुका राजाके लाख घोडो छे, १० 'उपमा

चारिये कोहे[11] १ माणे[12] २ मायौ[13] ३ लोभे[14] ४ पेज[15] ५ दोस[16] ६ हांस[17] ७ भय[18] ८ अखाइये[19] ९ उवंघाय[20] १० असत्त संभारिये ॥ उपन्नमिस्सिया[21] १ तिम विगत[22] मिस्समया २ पुनिउपन्न[23] विगत ३ जीवें[24] ४ अजीवां[25] सुधारिये ५ जीवाजीव[26] ६ परॅत[27] ७ अनंन्त[28]

सत्य–जैसें चन्दे सुनिम्मलयरा, सायरवरगम्भीरा अथवा चन्द वदनी मृगलोचनी इत्यादि, सत्य भाषाका ये दश भेद जाणिये ११ 'कोहे'–जैसे क्रोधके वश अदासने दास इत्यादि, १२ 'माणे' जैसे अल्प धनीकूं वहुधनी अथवा अनाचारीहै महा आचार-पणों माने, १३ 'माया कपटाइके वश अखाड भूतवत्, १४ 'लोभके वश वोले सो मिथ्या, १५ 'प्रेमनीने सराय कहे जैसे मे तेरा दास, १६ द्वेषकीने सराय गुणवन्तनें निर्गुण कहे, १७ हा-स्यके वश भाडनीपरे वोले, १८ 'भयनीनें सराय चौरादि झाल्यो असंजम वोले, १९ 'व्याख्यान करता खोटी कथा कहे, २० 'उपघातमृपाते हिंसाकारी वचन वोले, ये दशप्रकारे असत्य-भाषा, २१ 'जैसे इस ग्राममें दश बालक जनम्या, २२ 'जैसे इस ग्राममें दशवालक मुंआ, २३ 'जैसे इस सहरमें १० वालक जनम्या १० वृद्ध मरे, २४ 'जैसे जीवांको ढगलो छे पिणते मां-हिमुं आघणा तेहने जीव कहे, २५ 'जैसे कृमीनो ढगलो छे ते-माहि मूआ कलेवर पिण घणाछे तेहने कहे ये अजीय छे, २६ जैसे कृमीनो ढगलोछेतमाही मरेभीहै जीवतेभी है उसका प्रमाण वाधे, २७ 'जैसे कन्दमूलमें अनन्ता अने पत्रादिकमें प्र-त्येक छे तेहने कहे ये अनन्तकाय है, २८ जैसे कोइक अवयव

८ अद्धाए[२९] अदद्धाये[३०] दशभेद मिश्रकासु किसन विचारिये॥१॥ आमन्त्रणी[३१] १ आणमणि[३२]२ जायणी[३३] ३ पुछणी[३४] भाषा ४ पन्नवणि[३५] ५ पच्चखांणी[३६] ६ साहु सुखदानीहै इच्छाणुलोमयाँ[३७] ७ अभिग्रहि[३८] ८ अनाअभिग्रहि[३९] ९ संशयकारणी[४०] १० जामे संशेयुत जानीहै ॥ वोगडा[४१] ११ अवोगडा[४२] १२ वा संस्कृत[४३] १ प्राकृतही[४४] २ सूर

अनन्त कायनो छे वाकी परतहै तेहने कहे ये परत छे, २९ 'जिमकोइ कार्य उपना इम कहे दिवसछते पिणवे गाथाउं रात्री पडी, ३० रात्री अथवा दिवसनो एक देश पहेरादिक आसरी जैसे कार्य उपना कहे पहेर थयाने मध्यान्ह थयो ये दशभेद मिश्र भाषाका, ३१ 'जैसें हे गोयम हे जम्बू हे देवदत्त, ३२ आज्ञानो देवो जैसे अमुक वस्तु ल्याज्यो, ३३ 'जैसे अमुक वस्तु दीज्यो, ३४ 'जिम पन्थादिकनों पूछवो, ३५ 'दानशील तपभाव विनयादि उपदेशनों देवो, ३६ 'नवकारसी आदि पचखांण मागे तेहने पचखांण करावो, ३७ 'जैसे गुरु शिष्यनें कहे अमुको कामकर तिवारेशिष्य कहे माहरी पिण एहीज इछा है, ३८ 'जे भाषा वोलता आगलाने समझपडे, ३९ 'जे भाषा वोलतां वीजाने समझ न पडे, ४० 'जे भाषा वोलता संशय थाय अर्थ न जाणे जैसे सिन्धु आण, ४१ 'जे भाषा शुद्ध वोले सवकूं समझ पडे. ४२ 'जैसें वकरानी परें मणमणाट शब्दवोले, ये व्यवहार भाषाके १२ भेद, ४३ 'प्राणाधीशोगतो मे इत्यादि, ४४ 'जैसे

[४५] सेनी ३ मागधी [४६] ४ पिशाची [४७] ५ मनमानीहै अपभ्रंश [४८] येही पठ गद्यबन्ध पद्यबन्ध जाषापदे कृष्ण लाल जाषाविधि ठानीहै ॥ २ ॥

॥ अथ समकित लहरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ सब विचार सुलटो करै सब विवेककी वात ॥ समी दृष्टिसो सम किती वांकी दृष्टि मिथ्यात ॥ १ ॥ समकित सरधा सरदहो समता समतिसु ज्ञान ॥ समरस चाख सुजावसुं समकर कुमति कुज्ञान ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ जो है सब देवनका देव सो महादेव करो तुम सेव ॥ दोप अष्टादश नांहि निदान गुण अनन्त सो है जगवान ॥ २ ॥ गुरु आतमज्ञानी सुध सन्त

ऊपरी पत्तरे गामे, इत्यादि ४५ 'सूरसेनी जाषा' ४६ 'मागधी जाषा' ४७ पिशाची जाषा, ४८ 'अपभ्रंश जैसें उपाध्यायका उफाजी ये ठ जाषा गद्यबंध उर पद्यबन्ध ये १२ जेद व्यवहार-जाषाका विकल्पसें होतेहै उर सत्य असत्य ये दो जाषा परजापतीहै मिश्र उर व्यवहार ये दो जाषा अपरजापतीहै सत्य उर व्यवहार ये दो जाषा साधू बोले असत्य उर मिश्र ये दो जाषान बोले उर इससे अधिक जाषाके जेद जाणे चाहे तो पन्नवणाजी सूत्रका इग्यारमां पद देखें ॥

सुध दरसन सुध चारितवन्त ॥ गुण सगवीस धरे सु ध नाव नव जल तारकहे सुध नाव ॥ ४ ॥ धरम कह्यो केवलि परधान स्वपर दोय दया पहिचांन ॥ समारंज न करे उपदेश यह जिनमतमें जान विशेष ॥ ५ ॥ आगमसो सुधनय अनुसार असुधमिश्र अ रु सुध विविहार ॥ निमतरूप उपादान दोय नेद गेंहे उपादे समझ अखेद ॥ ६ ॥ काल सुनाव नियत निरधार पूरवकृत अरु पुरुषाकार ॥ ए समवाय जुमाने जेह समकित धारी कहिये तेह ॥ ७ ॥ कालविनां तरुवर नहि फले कालविना चारित नहि पले ॥ कालविनां न चढे गुणगाण कालविना न पढे सुध ज्ञान ॥ ८ ॥ हंस सुचाल सुनावे होय आरू सुनावतिरे वहु तोय ॥ मोरमनोहर होय सुनाव हिं सक सहजे होय कुनाव ॥९॥ जे सो तरु तेसो फल लगे जे सो दीपक तेसोजगे ॥ चोर साधुसंग डुख सुख देह नीति वचन अवधारो एह ॥ १० ॥ संपति विपति सरोग निरोग हांण वृद्ध आयूसंजोग ॥ सुख डुख करमतणी गति देख नयनिश्चय पूरव कृतलेख ॥ ११ ॥ उद्यम काज सफल सहु कहे नय विवहार जतन सरदहे ॥ पुरुषाकार पराक्रम जांण

पांचे वोल करे परिमाण ॥ १२ ॥ समसंवेग अने निरवेग करुणा आसत धरम विवेग ॥ सत्य वचनकी कर परतीत सर लंछण समकितके मीत ॥१३॥ सास्वादांन उपसम अवधार खय उपसम वेदक सुखकार ॥ खायकसूं पांमे भवपार समकित कह्यो पञ्च परकार ॥ १४ फिर याके नव भेदविचार आगम अध्यातम अनुसार ॥ दशा आठ समकितकी कही अन्य ग्रन्थसे जानोसही ॥१५॥ चवदे मारगणां मनधार उत्तरवासठ भेदविचार ॥ क्षिपकश्रेण उपसमकी चाल पटद्रव्य लोकालोक संभार ॥ १६ ॥ गुणस्थानकी रचनां करो सांची सीख समझ उरधरो ॥ परमातम आतम गुण लखो परगुण ज्ञान मूढमति भखो १७

॥ दोहा ॥

॥ जे जिनभाषित अरथ है सरव वचन परिमाण ॥ तामें कछु संसो नहीं यह समकित सरधान ॥१८॥ पांच प्रकार मिथ्यात दल ताको करे विनाश ॥ सहजानन्द स्वरूपगुण सांचो होय प्रकाश ॥ १९ ॥ सुखमें होय न मगनता दुखमे होय न दीन ॥ राग द्वेष उपसम सदा सो सम शुभगुणलीन ॥ २० ॥ राम रमे वैरागमें ˋ द ठयठीन ॥ उदासीन स

सूं रहै सो संवेग सुचीन ॥ २१ ॥ इन्द्रिय विषय कषायसूं अरुचि होय परिणांम ॥ रुचि अविन्यासी संपदा सो निरवेगसु नाम ॥ २२ ॥ दयादान दिलमे धरै निहचे अरु विवहार ॥ दुखी देख करुणा करै अनुकम्पा उपगार ॥ २३ ॥ केवलवाणी सरद है है परतीत सनेह ॥ समकित धारी जीवकी कही आ सता एह ॥ २४ ॥ दरव भाव समकित युगल निश्चै अरु विवहार ॥ निसंग सहज गुरु देशना ए षट अ रथ सुधार ॥ २५ ॥ कारक रोचक निज कहै है दी पक परकाज ॥ ए नवधा समकित सही भाखी श्री जिनराज ॥ २६ ॥ ज्ञानावरण तणे उदै आगम ज्ञान अजाण ॥ तहत करीने सरदहे समकित दरव प्रमा ण ॥ २७ ॥ जीवादिक नवपद कह्या तिणमय संसै नाहि ॥ जाणै सांचा अरथकूं समकित भाव सुआ हि ॥ २८ ॥ ज्ञानादिक तिहुं गुणविषै परम अपूर व प्रेम ॥ निज सुभाव सत्ता गहे निश्चै समकित नेम ॥ २९ ॥ जाणपणो है जो हरी ज्ञानाज्ञान विचार सुगुरु सुदेव सुधर्मकूं परखे सो विवहार ॥ ३० ॥ पं थी पड्यो उजाडमें वंछितपुर नही जाहि ॥ सहज भाव सुधि ऊपजे निसंग कही रुचिताहि ॥ ३१ ॥ ज्युं प

न्थी भुल्यो भर्मे मिल्यो मुसाफर आय॥ वतलायो पुर पंथ एह रुचि उपदेश सहाय ॥ ३२॥ जैसी आगममें कही तैसी किरिया मान ॥ मन्दभाव करणी करे कारक समकित जान ॥ ३३ ॥ सांची रुची अनि प्रीत सुं हिरदेहरषित होय ॥ अधिक भाव करणी करे रोचक समकित सोय ॥ ३४ ॥ मिथ्यातीसुंन ज्ञान वल सांचो करे वखान ॥ दीपावे जिन धरमकूं सो दीपक पहिचांन ॥ ३५ ॥ जैसे जोत मसालकी अपणीसुध कछु नांहि ॥ पन्थ दिखावे अवरकूं आप की चकेमांहि ॥ ३६ ॥ वातां कहे वणायके मीठी मिरच लगाय ॥ उजियारो औरा करे आप अन्धेरे जाय ॥३७॥ खय उपसम उपसम तथा खाय करवरी न जाय॥ गुणी जीव गुणज्ञान है गुणसूं गुणी कहाय ॥३८॥ तीन पुञ्ज चौथो करे प्रथम मिथ्यात अशुद्धि ॥ मिश्र पुञ्ज दूजो कह्यो तीजो समकित शुद्ध ॥ ३९ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ समकित खायक अखय कहाय खय उप आवे अरु जाय ॥ इणमें वहु थिरता कछु नांहि समकित खिण मिथ्यामांहि ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रकृति तीन अरु मोहनी प्रथम चोकडी त्याग ॥ प्रकृति सात यह ग्रन्थ है भेद सुमारग लाग ॥४१॥ राग द्वेषसूं धूल रही मिथ्यामति विपरीत ॥ ग्रन्थ खुले सुध ज्ञानसूं समकित सांची प्रीत ॥ ४२ ॥ कुगुरु कुदेव कु धरममें मगन महा मिथ्यात ॥ कुगुरु सुगुरु सवही भले विनय मिश्र विख्यात ॥ ४३ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मकूं जाण उथापे मूढ ॥ पख पोषे मिथ्यातको अहंबुद्धकी रूढ ॥ ४४ ॥ असुधा समकित मोहनी कही सुगुरु समझाय ॥ संशय मोह अज्ञानता भरम भाव उपजाय ॥ ४५ ॥ सुध समकित कहुं मोहनी देव धरम गुरुराग ॥ रतन त्रय ममता धरे किरिया करे सराग ॥ ४६ ॥ ग्रन्थसीम आवे वहु भव्य अभव्य अनन्त ॥ केऊ उलंगे ग्रन्थकूं केऊ उलट गिरन्त ॥४७॥ तीन मुसाफर इष्टपुर चल्या मिल्या दोय चोर ॥ इक पुंहच्यो इक फिर गयो इक पकस्यो कर जोर ॥ ४८॥ समकित धरपुंहच्या पुरी फिरया अभव्य मिथ्यात ॥ गह्या विराधक वरतिया राग द्वेष पखपात ॥ ४९ ॥ इक समझे गुरुज्ञानसूं इक अपणी बुधबोध ॥ इक कवहु समझे नही तीन भांताक

जोध ॥ ५० ॥ इक ज्वर औषदसूं कटे इक सहजे मिट जाय ॥ इकज्वर वहुं नां कटे जो वहु करे उपाय ॥ ५१ ॥ अनजलकपडादिक वहु तीन तीन इम भेद ॥ करम आठ पतला पडे मंगल मुगति उमेद ॥ ५२ ॥ अडिल ॥ जीवदरवभवरास खेत आरज लहे काल लवधि भव मनुष्य भाव खायक कहे ॥ ए पांचे समवाय मिले जब आयके तव सुख पावे जीव मुगतिमें जायके ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव धरम गुरु धारणा लखे न आप विचार ॥ असुध भाव पलटे नही यह समकित विवहार ॥ ५४ ॥ उदासीन वैरागता राग द्वेष परिनाहि ॥ अरुचिविषे संसारसुं निश्चै समकितमांहि ॥ ५५ ॥ ज्ञान पढे थिरता वढे दिन दिन चढे सुरंग ॥ सो समकित सामान्यता निमितपाय पर संग ॥ ५६ ॥ उपादांन जियकि सगती लखे स्वरूप अलेख ॥ तुरत तत्वरुचि रस रुचे एक समयसु विशेष ॥ ५७ ॥

॥ सोरठा ॥

॥ समता समकित भूम खय उपसम समकित जघन ॥ उपसम मध्यम दुम उत्कृष्टी खायक ६

रञ्जन सरिखी सेव ॥ इक संसारी इक गुणवान सुगु रु कुगुरु दोउ गिणे समान ॥ ७५ ॥ इक आश्रव इक संवर द्वार हिंसा दया गिणें इक सार॥ इक मिथ्या इ क सम्यक ज्ञान वाहिर अन्तर एकसमान ॥ ७६ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म सुग्रन्थ सांचो जाणे शिव पुर पन्थ ॥ पिण अपणो हठ मूके नांहि मिथ्या वचन कहे सव मांहि ॥ ७७ ॥ चिहुं वोल थिरतान वि करे नानाविध विकलप जिय धरे ॥ सांची समझ पडे नहि कदा सर्वे वातको संशय सदा ॥ ७८ ॥ जीवादिक नवि जाणे भेव गहल रूप वरते नित मेव ॥ सो तिरयञ्च विकल थिर काय अणा भोग अज्ञान कहाय ॥ ७९ ॥ पहिलो महा मिथ्याती कह्यो विनय मिथ्याति दूजो लह्यो ॥ तीजो निज मतिको पचखाण चोथो संशय नाम वखांण ॥ ८० ॥ कह्यो अज्ञान पांचमी ठोर यह मिथ्यात वहुतहै ठेर ॥ प्रथम चोकडी तजे मिथ्यात तव समकितकी किस नसुवात ॥ ८१ ॥ इति समकित लहरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ वडी नीत लघु नीतमें रुधिर राध जुग जांण॥ वात पित्त कफ वमनमे मेल सलेप संघाण ॥ १ ॥

कीच कलेवर शुक्रमें नर नारी संजोग ॥ लघुखाली महा खालमे अशुचि चलित रस जोग ॥ २ ॥ मनुप्य स मूर्छम ऊपजे चवदे स्थानक एह ॥ आगम ज्ञाता आगमें मति मन धरो संदेह ॥ ३ ॥ इकम हुरत वीतां पछे उपजे जीव असंख ॥ सर्वे मिथ्याती आयुइक महुत मान निसंख ॥ ४ ॥ अङ्गुल जाग असंख तनुं पण इन्डी वसु प्रांण ॥ वेद नपुंसकहै सही जापे सुगुरु सुजांण ॥ ५ ॥ इति॥अथ रात्रिजोजन दोषः ॥

॥ दोहा ॥

॥ छत्री ब्राह्मण वांणियां शूद्र वरण वेकार ॥ ए सहु निश जोजन करे नहि मनमांहि विचार ॥ १ ॥ नारू कारू करसणी रांक कमीण कुजात ॥ नीचगरीब गिवारजे ए सहु जीमें रात ॥ २ ॥ निरधन मानुष मेहनती पराधीन परदास ॥ क्या इनके वासर निशा जास पराई आस ॥ ३ ॥ जैनमती श्रावकयती समकित धरतिहुं पात ॥ उत्तमजीमें दिनछते मध्यम जीमे रात ॥ ४ ॥ दिनकूं जीमे देवता जीमे नर परजात ॥ राक स जीमे रातकूं वहुत कहूं क्या वात ॥ ५ ॥ पशु पंछी निश ना

करे चे जो चतुर सुजांण ॥ दोष वहू पातक घणो सुणज्यो सुगुरु वखांण ॥ ६ ॥ कोड जलो दर वम नता व्याधी विविध प्रकार ॥ मूढमरण स्वर हीनता जंर अनेक निहार ॥ ७ ॥ सांप विछु घुण सुल सुली माखी मकरी माल ॥ चेटी सूल पतंगिया जूंकी ग रलट लाल ॥ ८ ॥ इत्यादिकरजनी विपे होय जी वकी घात ॥ सुगुरु कह्यो इम जैनमे सुणो धरमके ज्ञात ॥ ए ॥ अन जल अनख समानहै जोग पं थके न्याय ॥ वरसा रुतु चोमासमे अनमति रातन खाय ॥ १० ॥ सूरज आंथमिया पछे पाणी रुधिर समान ॥ अन्न मांस सम जांणिये कही मारकंड पुराण ॥ ११ ॥ अरधविंव मूरख कहै पेंट नर इया प्रेत ॥ दया धरम रुचनां नही हिंसा करमकु हेत ॥ १२ ॥ सुगुरांसें सरधा मिले कुगुरांसे वकवाद ॥ कौन करे कारज कहां करमवन्ध विषवाद ॥ १३ ॥ आंधेकों दरसे नही पंथ कुपंथ कुवाट ॥ सुगुरु कहे उनकों कहा वत लांक घर हाट ॥ १४ ॥ आगम अरथ उथापके थापे अपणो मत्त ॥ किसन कहे ते प्राणियां रुलसी च्यारू गत्त ॥ १५ ॥

॥ मात साकंभराजरानी लाज तूरखदे भवानी
ए देशी ॥

॥ जपो नवकार मंत्र ज्ञाता स्वर्ग अपवर्ग सौख्य दाता ॥ आंकणी ॥ भीत रुज तनमे नहि आता रिपू कोइ कर न सके घाता ॥ कोड केवली गुणकरे तो पिण नावे पार महा प्रभाविक मंत्र प्रमेष्ठी ज पतां जय जयकार मिटावे जनम मरण खाता १ जपो० ॥ १ ॥ प्रथम अरिहन्त देव नांमे दोष नहि अष्टादश जामें अखिल गुण द्वादशही पामे गिरा गुण पणतीसे तामे जघन दोय कोड केवली उत कृष्टा नवमान करम घातिया वेद खपावी पांम्या के वल ज्ञान विमोजी चउसठ गुण गाता १ जपो० ॥ २ ॥ नमो पद दूजे श्री सिद्धा ज्ञान दरसन क रि समृद्धा करमवसूं हणिवसु गुण लीधा अन्त भव अरणवका कीधा दरव प्राण नहि एकही भाव प्रांणहै च्यार ज्योतिरूप निकलंक निरञ्जन अत्रि

१ ' नव वर्षकाको केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा सो कोटि वर्ष पर्यंत नवकारकी महिमा करे फेर उनके पाट नव वर्षका केवली फिर नवकारकी महिमा करे ऐसें कोड केवलियोंसें पिण गुण वर्णन नहि किया जाय. २ ' सपूर्ण, ३ वाणी ४ ' ऽन्ड,५'ज्ञान प्राण वीर्यप्राण जीवितप्राण सुखप्राण ज्ञानवीर्य जीवितसुख अनन्त,

नाशी अविकार ध्यान उपयोगेंदरध्याता[1] २ जपो ॥ ३ ॥ नमो पद आचारज तीजे संपदा अष्ट देख रीझे छतीसों गुण गिरवा लीजे उंपमा सुरतरुकी दीजे हरि[2]समान चउ संघमे गीता रथ गुण धाम पण्डित योग अखण्डित पाले धरम जाक निरजाम सुज स वर लोक मांहि ख्याता[3] २ जपो० ॥ ४ ॥ नमो पद चोथे उवझाया विमल गुण पण वीसे पाया भारती वक्रे[4] वास ठाया मिथ्या दरसन सल अवढाया भणे भणावे सूत्र सव चरँण करँनका धार डिगता प्राणी धरम सूंसकोइ थिर कर राखण हार भविकने वो ध वीजदाता २ जपो० ॥ ५ ॥ नमो पद पञ्चम उपगारी साधु गुण सप्तविंश धारी अमल चित स्वच्छ गङ्गवारी तपोधन घोर ब्रह्मचारी नमो ज्ञान दरसन भणी तप चारित्र उदार अड सिधनव निध मङ्गल माला पग पग मिले अपार विघन घन मेटणने वाता २ जपो० ॥ ६ ॥ भणे जो भव्य

---

१ 'ध्यातान्तरात्माध्येयस्तु परमात्मा प्रकीर्तितः ॥ ध्यानस्यैकाग्रसंवित्तिरितिवचनात्, २ 'विष्णु वायु विधुवाजियम वासव मृगपति मांन ॥ रवि अहि कपि शुक पीतरंग भेक किरण हरिजान ॥ ऐसे हरिशब्दके ११७ अर्थ होते है ३ 'प्रसिद्ध', ४ 'मुख, ५ 'पवन,

शुरू भावे थोक मन वंछित सब थावे अचिन्ती कम
ला घर आवे लावणी किसन लाल गावे सार च
तुर दश पुरवको परममन्त्र नवकार सब मङ्गलमे धुर
यह मङ्गल सकल पाप क्षय कार सिवरतां वरते सु
खसाता १ जपो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ थारी फूलसी देह पलक मांहि पलटे ए देशी ॥

॥ चतुर वीस जिनराज नमूं नित वेकर जोडि
हुलासोजी चतुर गतीरी भ्रमणा मिटावण अब
झाल्यो प्रभु कासोजी १ ॥ १ ॥ टेर ॥ ऋषभ अ
जित संभव अभिनन्दन सुमति पदम सुपासो जी॥
चन्दा प्रभुजीने सुविधि जिनेश्वर सियल सीयं स
सुवासोजी च० ॥ २ ॥ विमल अनन्त सिरि धरम
शान्ति जिन कनक वरण वपुं जासोजी ॥ कुन्थु अ
रेहमलि मुनि सुव्रत जिन सिंवरूं सास उसासोजी
च० ॥ ३ ॥ नमिय नेम पारसमहावीरजी निज गुण
कीध प्रकासो जी ॥ पञ्चमि गतिमे जाय विराज्या
प्रणमूं पदकज तासोजी च० ॥ ४ ॥ तारक विरध
विचारी तुमचो अवधारो अरदा सो जी ॥ किङ्कर
किसन कहे कर जोडी प्रभु मुझ पाप पणा सोजी

१ 'शरीर,

च० ॥ ५ ॥ शरणागति निधि इन्दू संमत अजिया पुर चौमासोजी नन्द मुणन्द गुरू परसादें सफल फली मुज आसोजी च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल आज्यो मन्दिर ये रंग माण वाने ॥
॥ ए देशी ॥

॥ वन्दूवीसे विहर मांन स्वामी जावसूंजी हां जी प्रभु चरण सरन महर किया आवसूंजी वन्दू० ॥ टेर ॥ स्वामीजी सीमंधरूने दूसरा युगंध रू हांजी प्रभु बाहुजी सुबाहु शिरनांव सूजी ॥ वन्दू० ॥ १ ॥ पांचमां सुजात चग सयंप्रभ्ने जाणिये हांजी प्रभो रुषभानन्द अनन्त वीर्य गाव सूंजी ॥ वन्दू० ॥ २ ॥ सूर विसाल वज्रधीर चन्द्रा नन्द चन्द्र बाहु हांजी प्रभु नमूं भुजंग ईश्वर उछाव सूंजी ॥ वन्दू० ॥ ३ ॥ नेम प्रभु वीरसेण महाभद्र बलभ वेण हांजी प्रभुदेव जस अजित वीर्य ध्याव सूंजी ॥ वन्दू० ॥ ४ ॥ विहर मांन महाविदे भविक जीव तारता हांजी प्रभु वर मुखाब्ज पेखी सुख पाव सूंजी ॥ वन्दू० ॥ ५ ॥ कलप वृक्ष काम कुंभ नाम प्रभु आपको हांजी प्रभु किसन लाल जपे चित चाव सूंजी ॥ वन्दू० ॥ ६ ॥ इति ॥

होवादीलाथानेंक यां मेलालाजरे जला ॥ ए देशी ॥
॥ हे मूरख तोने किम समजा जरे मना ॥ हो अज्ञानी तोने कयां समजां ॥ टेर ॥ जिम जिम राखूं हटकने रे मनां हो मनां तूंतो तिमतिम अलगो रे जाय ॥ अ० ॥ सुमति सखी संग छोडने रे मनां हो मनां तूं तो कुमतिसुं रह्यो रे लुजाय अ० ॥ १ ॥ अनुजो अमृत रस छोडने रे मनां हो मनां तूंतो लुज ध्यो हे जवसुखमांय अ० ॥ चपल स्वजाव अनादिको रे हो मनां तोने मरकट कहूं के वलाय अ० ॥२॥ पुदगल सुखके कारणे रे मनाहोमनां तूंतो जमण करे जिम रंक अ०॥ निरलज कामी पुरुष ज्यूंरे मनां हो मनां तूंतो निसदिन फिरत निसंक अ०॥३॥ ठगज्यो कहुं तो तूं ठग नहि रे मनां हो मनां तोमे साहूकार को न ढंग अ०॥ तुरंग कुरंग पतंग ज्युंरे मनां हो मनां तूंतो छिनमें करे वहुरंग अ० ॥ ४ ॥ तुज नें जीतां पण जीतियेरे मनां हो मनां जीयो इंदरराने चतुर कपाय अ० ॥ दशजीतां रिपुसव जीतियेरे मनां हो मनां जी हो किसन कहे सिरूशाय अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

तूं कुमत कलेसणनार लगी क्युं केडे ए देशी ॥

श्री नेमनाथ भगवान सुनो मेरी अरजी सेव कनें तारो क्युं न कहो क्या मरजी ॥ में अरज करूं कर जोरू सुनो महाराजा किरपा कर दीन दयालसरे मुज काजा महाराज नेमजीनीका नेम जीनीका तुम लिया मुगति गढ जीत सूरमा ती का ॥ १ ॥ एक नयरसो रिपुरराज विराजे राजा तेरे पडे निसाणे घाव ठती सूं वाजा तेरे समुद वि जेजी तात सेवादेवि माता तुमकूं खलियो अवतार धरी इमसाता महा० ॥२॥ तेरे कृष्ण नरेसर आदि जांन सज आया तेरे जादव लाखों कोटि पार नहि पा या तेरे कांनारे कुण्डल मांथे रे मुगट जोती रे मुगट जोती तेरे गल विचसोह न माल झलकता मोती महा० ॥ ३ ॥ तुम करुणाके भण्डार दया दिल जागी तुम त्याग चले वनखण्ड भये वैरागी सती राजुलसी स तवंती भावसें त्यागी तेरे अन्त रगतकी जोत ज्ञा नसें लागी महा० ॥ ४ ॥ सती लेकर संजम भार गई गिरनारे तहां प्रतिबोध्या रहनेमि कियो उप गारे वसुकरमरिपूकूं जीत अमर पद धारे जहां जन्म जरा नहि रोग अटल सुख सारे महा० ॥५॥

धनराज मति रहे नेमि नेम गुण सिन्धू कर जोर सदा तिरकाल चरनमें वन्दू शिष किसनलाल गुरु नन्द समीपे रहता बोवडी हरषसें भरके लावणी कहता महा० ॥ ६ ॥

॥ देशी होरीका ख्यालकी ॥

काकन्दी नगरी भलीस कोइ सुन्दर शोभादार जित शत्रू राजा तिहास कोई परजानें सुखकार धनवन्ता वहुला वसेंस कोई वरते मङ्गलाचार हो ॥ १ ॥ काकन्दीरा धन्ना वलिहारी जाऊ थारा नामकी भ्रांकभी ॥ भदरा नामे सारथ वाई वसे तिहां धनवान तसु नन्दन धन्नो हुं तोस कोइ सुन्दर रूप निधान पांच धाय पालीज तोस कोई महावलनिपरे जाण हो काकं० ॥ २ ॥ भोगां समरथ जाणनेस कोई ज निता कुशले खेम कुलवन्ती वत्तीस कां मणी परणाई धर प्रेम महलांमे सुख भोगवेस कोइ दो गुन्दक सुर जेमहो काकं० ॥ ३ ॥ तिण अवसर जिन शासन मण्डन समोसख्या सुखकार संवेगी मुनिवर भला स कोई साथे चउदे हजार सह स्रावन उद्यानमे स कोइ उतख्या जगदाधार हो काकं०॥ ४ ॥ वन पालक भूपालने स कोइ दोरू वधा

ई दीध सुणकर हरख्यो राज वीस कोइ जाणे अमृ त पीध प्रीति दान दीधो घणो स कोइ दारिद दूरे कीध हो काकं० ॥ ५ ॥ चतुरंगणी सेना सजीस कोइ साथे सहु परिवार कोणक ज्युं वन्दन जणीस कोइ आयो नृप तिवार पञ्च अन्नी गम सांचवीस कोइ वैठो सन्ना मऊार हो काकं० ॥ ६ ॥ वीर प धास्या धन्ने कुंवर सुण परम महा सुख पाय जस्सा ली जिम नीकल्योस कोइ पालो मारग माय नगव न वन्दी नावसूंस कोइ वैठो सन्मुख जाय हो काकं ॥ ७ ॥ जिन वरदे उपदेशनां स कोइ ए संसार अ सार पुदगल रचना कारमी स कोइ जाल न लागे वार तन धन संपत पायके स कोइ राचे मूढगिंवार हो काकं० ॥ ८ ॥ धर्म देशनां सांनली स कोइ सहु को हरपित थाय तहत वचन वंदनां करी स कोइ आया जिण दिश जाय धनो कुंवर बोले हिवेस कोई ते सुण ज्यो चितलाय होय काकं० ॥ ए ॥ सर ध्या अरु परतीतिया स कोई रुच्या तुमारा वेण अनु मतिले अम्वा तणी स कोई संजमले सूसेण जिम सुख होवे तिम करो स कोइ नगवंतरीया केण हो काकं० ॥ १० ॥ मएठ्र आवी इम कहे स कोई अनु

डुख मरणनां सकोइ सुंणतां मन कम्पाय हो माता० ॥ १६ ॥ उत्र परु ऋहुवा घणां स कोई प्रमदा सग ली साथ समरथ नहि कोई राखवा स कोइ अनुम ति दीनी मात जिमतोने सुख ऊपजे स कोइ सोही करो तुमे जात हो सुंण पुत्र हमारा संजम लेवो तो आत्योपालज्यो ॥ १७ ॥ जिम थावरचा पुत्रनो स कोइ महोठव कियो मुरार तिम ईहां पिण जाणवो स कोई जितशत्रू नृप सार हरप सहित बहु गाट वाटसूं पोहोता वाग मजार हो काकं० ॥ १८ ॥ कर जोमी धन्नो कहे सकोइ अव तारो करतार श्रीमुख व्रत उचराविया स कोई लीना हिरदे धार जन्म हुवो अणगारनों स कोइ त्यागदियो संसार ... काकं० ॥ १९ ॥ डुक्कर तप प्रारंभियो स कोई ... ले तिण वार छट तप आमिल पारणे स कोइ ... उझित अहार सवणवणी मग ... निरधा र हो काकं० ॥ २० ... स कोइ

भगवन ... स

कोई सं...

भणिया ...

स...

खप करे स कोई सारे आतम काम सुन्दर गल धा
रण करी स कोई सस विशगुण दाम हो काकं० ॥२२॥
मास लोही सूकि गया स कोइ नसां जाल रही
दीस पगसूं लेकर मस्तकतांई बोल कह्या इगवीस
नवमां अंगमे जिन जिन करनें जाख्यो श्री जगदी
श हो काकं० ॥ २३ ॥ ग्राम नगर पुर विचरतां स
कोई राज ग्रही उद्यान जवजीवां तारण जणी स
कोई समोसस्या वर्धमान खबर हुवां जिनवन्दन आयो
वंजसार राजान हो काकं० ॥ २४ ॥ श्रेणक पूछे वे
कर जोमी मुनिवर चउदे हजार शिव मारग अव
गाहे सगला इणमे कुंणसिरिकार श्रीमुख वीर व
खाणियो स कोई धनधन्नो अणगार हो काकं० ॥२५॥
सुंण सुख पायो राजवी स कोइ आयो मुनिवर पास
पदपङ्कज प्रणमी करी स कोइ स्तवना करी हुलास
जगवन वन्दी जूपति स कोई पोहोतो निज आवा
सहो काकं०॥२६॥ जांत जांतरी तपस्या करता पिञ्जर
होय गइ काय खंधकनीपरे जाण ज्यो स कोइ वन्दी
श्रीजिनराय विपुलगिरी सव साधु खमावी दियो सं
थारो ठाय हो काकं० ॥ २७ ॥ नव महिनां सुद सं
जम पाली पूरी मनरी आश एक मासरी संलेखणा

कर सरवारथ सिधवास महा विदेहमे मुगते जासी वसु करम करनाश हो काकं० ॥ २८ ॥ उगणीसे ठी याली वरसे अहि पुर शहर मजार किसनलाल गुण गाविया स कोई सुंणज्यो सहु नरनार नन्द मुणन्द गुरू परसादे सफल कियो अवतार हो काकं० ॥२९॥ इति श्रीधन्ना महामुनिराजरी सज़ाय ॥

॥ मानव नव लाधो राज लाधो ॥ ए देशी ॥

सतगुरु बोले राजबोले नवियां राश्रुत पट खोले सत० ॥ टेर ॥ राजदेश नोजन तिरियाकी विगथामे दिन घोले धरम करंतां आलस आवे निकमो ठाती ठोले सत० ॥ १ ॥ ऐडा मारे धव्या उडावे लोगठगे दिन धोले उंठा जी तव कारने हारे नरनव रतन अ मोले सत० ॥ २ ॥ परम धरमको मरम न जाणे फूले नरम हिंडोले कुगुरु कुदेव कुधर्म प्रनावे चतुर गतीमे फोले सत० ॥ ३ ॥ दान शील तप नाव क्ष मादिक संवल साथे जोले किसनलाल कहे धन्य नरा ते पुन्य खजाना खोले ॥ ४ ॥ इति

आयो मनमें रे आयो मनमें इस्यो अहंकार हो लघु वंधव हूं वन्दूं नही जी ॥ १ ॥ प्रति वोधन प्रतिवोधन निज सुत ता महो जेजी ऋषज्ञ सुता ब्रा हमी सुंदरीजी आवी जापे रे आवी जापे स होदरी आंमहो वीराइ मन मिले शिव सुन्दरीजी ॥ २ ॥ प्रतिवूजो रे प्रतिवूजो वंधव इण वार हो वीरा हवे तुमे गजथकी ऊतरोजी वीरा सरधो रे वीरा सरधो सिखांवण सारहो वीरा जिम जवं जव सिंधू तरोजी ॥ ३ ॥ वीरा मांनो रे वीरामांनो हमा री कैंण हो ऊना सूको तो फोकट किंतवे जी वेन मनारें वेनमना सुणियां वेण हो वाहूवल ऋष मन इम चिन्तवेजी ॥ ४ ॥ मे तो दीनी रे मे तो दीनी संसारनें पूठ हो हय गय रथ गोरी में ऋध ठत्ती जी ये तो सतियां रे ये तो सतियां न वोले कूंट हो अजिमान न मूंक्यो में डुर मतीजी ॥ ५ ॥ धिग् मुजनें रे धिग मुजनें न मूक्यो गुमान हो विनय मू ल उथाप्यो धरमनेजी उज्जल ध्यांने रे उज्जल ध्याने लियो केवल ज्ञान हो चक चूर किया घाती करमनेजी ॥ ६ ॥ तीजो मम वीरो तीजो मम वी

---

१ 'जलदी.

कर सरवारथ सिधवास महा विदेहमे मुगते जासी वसु करम करनाश हो काकं० ॥ २८ ॥ उगणीसे ठी याली वरसे अहि पुर शहर मजार किसनलाल गुण गाविया स कोई सुणज्यो सहु नरनार नन्द मुणन्द गुरू परसादे सफल कियो अवतार हो काकं० ॥२९॥ इति श्रीधन्ना महामुनिराजरी सझाय ॥

॥ मानव नव लाधो राज लाधो ॥ ए देशी ॥

सतगुरु वोले राजवोले नवियां राश्रुत पट खोले सत० ॥ टेर ॥ राजदेश नोजन तिरियाकी विगथामे दिन घोले धरम करंतां आलस आवे निकमो गती ठोले सत० ॥ १ ॥ ऐडा मारे धज्या उडावे लोगठगे दिन धोले ठंग जी तव कारने हारे नरनव रतन अमोले सत० ॥ २ ॥ परम धरमको मरम न जाणे झूले नरम हिंडोले कुगुरु कुदेव कुधर्म प्रनावे चतुर गतीमे झोले सत० ॥ ३ ॥ दान शील तप नाव क्रमादिक संवल साथे जोले किसनलाल कहे धन्य नरा ते पुन्य खजाना खोले सत० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय वीरो लि० ॥

॥ देशी वीराकी छे वाहुवलजी रे वाहुवलरूप संजम धार हो वनमे कियो ध्यांन निश्चल रहीजी

हटने भई फिर कहिस्यो के मोने किण न कही नही० ॥ ४ ॥ हंसकर रावण बोले हे पियारी हमारी सुण वाणी सुण वाणीये सही कर जाणी सीता पुनरपि देवा नहि आणी वेरीहण करस्युं पटराणी रायसिरी हुवो चावे धूल धाणी किसन कहे हट रह्यो ताणी नही० ॥ ५ ॥

॥ अजी दोय कागजियां लिख भेजो ए देशी ॥

जी अब मोय दीक्षा जलदी द्योजी जल दीवो मोने अवही द्यो हमारी लागी रे लगन तुमसेती गुरु ग्यानी जी होजी वर ध्यानी जी अव० ॥ १ ॥ जी तुम चरनामे म्हारो मन लागो म्हारो संसार सुखासुं दिल भागो गुरु० ॥ २ ॥ जी कर करुणा सुपर्ण महाव्रत दो मोने तारो भव सिंधू अगाधो गुरु० ॥ ३ ॥ जी अमृत वचन सुण निज श्रवणे हमारी संजम लेवाकी मति जागी गुरु० ॥ ४ ॥ जी कुटमकवीलो सव स्वारथियो में तो जाण्यो तुम कथने काचो गुरु० ॥ ५ ॥ जी तृतीय सुहृद[3] जिम सुखदाई एक सतगुरु सगपण सांचो गुरु० ॥ ६ ॥

---

१ सातमें २ अहिंसा सत्य दत्त ब्रह्म अकिंचन ३ तीजा मित्र साधू.

रो अधिक वखाण हो मुनी मुगतें गयो करम तो
रूनेजी गुण गाता रे गुण गाता हुवे जनम प्रमाण
हो वन्दे किसनलाल कर जोरूनेजी ॥ ७ ॥ इति ॥

नही वोलाजी चित नहि राजी ए देशी ॥

जनक सुता क्यूं हर लायो रे कुमति थाने कांई
आई कांई आईजी समजावे भाई भभीषण कुल
भूषण जाई इण वाते न भलपण कांई होसी दुनि
यामें चावि मूरखाई ॥ १ ॥ नही मानी जी शठ न
हि मानी आंकरी ॥ मास्यो दशरथ पड्यो फूंटो रे
अज्ञानी तोने कहूं केती कहुं केती रे मुख पडी रे
ती कपट कियो ते मोसूंधुरसेती अकल वता वे
अंरिमोने एती अवतो न ठेरु घर आई खेती नही०
॥ २ ॥ मन्दोदरि राणी समजावे हो पियाजी थाने
काई सुजी काई सुजी या मति क्युं मूजी विन कामे
क्युं हारो पुन्यपूंजी सीता सत्तवन्ती सम नही
दूजी वचन हमारा जाणो धूजी नही० ॥ ३ ॥ रघु
पति लसकर आयो हो पियाजी ह्मारी मांनो तो
सही मानो तो सहीजी टुक जानो तो सही अनी
ति करीने फते किण न लही पीछे पिछतास्यो इण

१ वैरी.

खा हे सु० ॥ ब्रह्मदत्त वारमो जाण दोनू गया नार की रे सखा २ हेसु० ॥ ५ ॥ लघु तन तन्डुल मा ठलो रे सखा हे सूरिजन नरक गयो निरधार मेली मन मोकलो रे सखा २ हे सु० ॥ ६ ॥ मन जीता स ब जीतिये रे सखा हे सूरिजन मनके हारे ठे हार किसन तन्तसार जाष्यो रे २ हेसु० ॥ ७ ॥

जालपणकी प्रीत चतुर महासुं मिलताजी जोजी ॥ ए देशी ॥

समुदविजेजीको लाडलो सेवा देजी माय जाद व कुलनो सेहरो नेम गयो ठिटकाय ॥ १ ॥ कंथ विन कैसे जीवूं रे ठोड गयो विन दोष नेम विन कै से जीवू रे टेक ॥ पसुवनकी करुणा सुणी पति जा एयो परपंच अधविच अवला मूंकता दया न आणी रं च ॥ कं०॥ २ ॥ जान जलूस वणायके करि अनोखी वात अधपरणी घरणी तजी गयो गलन्ती रात कं० ॥ ३ ॥ हे सखी रठनेमीविना वरस समों दिन जाय नयण न आवे नीदकी रयण चोगुणी थाय कं० ॥४॥ मोह करम वस ऊरणा राजुल किया अपार संजम ले प्रतिवोधियो रहनेमी अणगार कं० ॥ ५ ॥ केव

जी तुम सम कोहीय न उपगारी जव आपतिरोने परतारो गुरु० ॥ ७ ॥ जी त्यागी गुरु मिलिया पुन्न जोगे मोने जव जव सरन तुमारो गुरु० ॥ ८ ॥ जी द्वितीया शशी जिम वढमाणें मन लागो हमारो मुनि गुणठाणे गुरु० ॥ ए ॥ जी किसन कहे धन वयरागी वपुमल ज्युं सकल रुध त्यागी गुरु० ॥ १० ॥

॥हे सया मोरी नेमीसर वनडाने गिरनारी जाता राखलीजो हे ॥ ए देशी ॥

यो मन चक्र कुलालको रे सखा हे सुज्ञानी यो मन चंचल मन चोर वाहिर मत जाण दीजो रे वाहिर मत जाण दीजो रे हे सुज्ञानी थाने सत गुरु केवे समजाय मनाने पाठो घेर लीजो रे ॥ १ ॥ निसदिन भ्रामक दुष्ट मती रे सखा हे सुज्ञानी यो छिनछिनमें मन ओर१ कठिन वस राखवो रे सखा२ हे सु० ॥ २ ॥ राजमती प्रति वूजियो रे सखा हे सुज्ञानीयो रहनेमी अणगार कीधो मनमे रज्युं रे सखा२ हेसु० ॥ ३ ॥ मनसे युध मांड्यो करमसुं रे सखा हे सु० ॥ यो प्रसनचंद रुपराय केवल आशुं पांमियो रे सखा हे सु० ॥ ४ ॥ संजूमच करी आठ मोरे स

१ 'जलदी.

॥ दोहा ॥

मुख मीठा धीठा हिये निंदक कपटी कूरु ॥
तिण रे मुख दे किसनिया धोवा जर जर धूरु ॥१॥

॥ कवित्त ॥

वरु विजचारी कुलकांन तजिमारी निज आतम विसारी अघ उंघके निकेतहै झूंटा सूंसधारे मि ध्या वचन उचारे न्यारे न्यारे पन्थ पारे शुध पन्थे पीठ देत है ॥ दंजी अजिमानी निंदा करत विरा नी ऐसे जमर विहानी होत आये वार सेतहै ठाली ठकुराईमें वैरागकी वडाई करे माई माई करिके लु गाई करि लेत है ॥ १ ॥

॥ हांके सगीजीने पेडा जावे ए देशी ॥

हांके इसा गुरु देव हमारा जीम जवोदधि तारण हारा कनककांमणी ठोरु हुवा सव जगसे न्यारा रे इसा० टेर ॥ तत्वरुची हिरदामे जागी जाण अ सार सकल रुध त्यागी कुटम्ब ठोरु निकल्या वरु जागी त्रिविधे त्रिविधे त्याग दिया जिण पाप अठा रारे इसा० ॥ १ ॥ जूमएरुल विचरे नव कल्पे वायु जिम प्रति वन्धन अलपे सावज जाषा मुखेन जल

१ पाप सेमूहक घर. २ सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्रकी.

लले मुगते गया अविचल कीनो साथ किसन लाल
वंदना करे विधसूं जोडी हाथ कं० ॥ ६ ॥

मनवा नही विचारी रे थारी हमारी करता
ऊमर वीती सारी रे ॥ ए देशी ॥

धोरी श्रावक वाजे रे रात दिवस पर निंदा कर
ता नेक न लाजे रे निगुणा नेक नलाजे रे अघोरी ने
कनलाजे रे धोरी० ॥ १ ॥ निंदक वांधी गाती निंदा
करवा काजे रे शोक तणी परे छिद्र गवेषे मृग सरी
खाजे रे धोरी० ॥ २ ॥ महा नीच चण्माल रजक
की उंपम छाजे रे कण कूंडो तज सूकर विष्टा खाव
ण जाजे रे धोरी० ॥ ३ ॥ दो नव विगडे पर निंदा
से नाष्यो श्रीजिनराजे रे नरक पडया पिछतासी हा
मुज आतम दाजे रे धोरी० ॥ ४ ॥ केवल ज्ञानी क
ह्यो सूत्रमें पीठमांस नही खाजे रे आतम घाती म
हा अधरमी डुवियह्वाजे रे धोरी० ॥ ५ ॥ परनिंदा
तज आतम निंदे पुनवन्ताजे रे किसनलाल निज
आतम निन्दे हलुकरमांजे रे प्राणी लहुकर मांजे
रे धोरी० ॥ ६ ॥

---

१ जवसूरो. २ डुवियह्वा इति नंदि सूत्रे.

मति देदो मोरी माय हांजी मैंतो लेसूं संजम न्नार आज्ञा देदो मोरी माय ॥ १ ॥ वात अपूरव सांन्न ली रे उलट्यो विरह अपार नीर ऊरे नयणां थकी रे टुटोज्यू मुगता हार ॥ २ ॥ संजम मतले रे वना हांजी मैंतो वरजु वारंवार दीक्षा मतले रे वना आं कणी ॥ सगति पलायन जेह नीरे काल हुवे जस मिन्त जो जाणे मरसूं नही रे सो घर रहे न चिन्त अ० ॥ ३ ॥ शशि वदनी मृग लोचनी रे परणांउं वरनार जो वन वय ढलियां पढे रे लीजो महा व्रत धार हिवडां मत० ॥ ४ ॥ न्नगिनी वनिता जगतनी रे जनिता सांन्नल वाक काम न्नोगमें जाणिया रे जेहवा फल किंपाक अ० ॥ ५ ॥ वाय न्नरेवो कोथ लो रे चलवो खांमा धार नुजसूं तिरवो जल निधी रे वेलु कवल असार सं० ॥ ६ ॥ न्नीम महादुख न्नोगव्यारे जीव अनंतीवार लख चोरासी जोनमें रे परवशपणे अपार अ० ॥ ७ ॥ चंचल इंदस्याजी तणी रे वश करवो मन व्याले घर घर करणी गोच री रे दूषण सगला टाल ॥ सं० ॥ ८ ॥ हरगिज अवहू नारहू रे कीधां कोम उपाय अवहीयो पर वानगी रे खिण लाखीणी जाय अ० ॥ ए ॥ उत्र

पे करम अष्ट क्षय करन परीसाँजीते सारा रे इसा० ॥ २ ॥ दश विध जती धरमका धारी परि[२]ग्रह मम ता दूर निवारी नवविध वाड सहित ब्रह्मचारी ज गिनी जनिता पुत्रि समान करी सब दारा रे इसा० ॥ ३ ॥ संजम सतरा भेद अराधे क्षण मातर परमा दन लाधे सदा मुगतिको मारग साधे घोर तपोधन खम सम दम गुण वृन्द अपारा रे इसा० ॥ ४ ॥ पंच[८] महाव्रत निरमल पाले पण इंद्रीकूं जीतण[१०]वाले च्यार कषाय किया पेमाले भाव[१५]करन[१६]योग[१७] सत्य[१८]मनोव[१९]चैतन[२०] समधारा रे इसा० ॥ ५ ॥ संपन ज्ञान[२१]दर[२२]शं[२३]चारित्रे क्षमावन्त[२४] वैराग्य[२५] पवित्रे कष्ट सहे मर[२६]णान्त विचित्रे वेद[२७]निआयां समी अयासे धन अ णगारा रे इसा० ॥ ६ ॥ धरम देव दिनकर जिम गा जे चतुर संघमें घन जिम गाजे दरसन दीठां सब दुख भाजे किसनलाल कहे इसा मुनि मम प्राण पियारा रे इसा० ॥ ७ ॥

॥ किण विध राख्यो हे रुमाल ए देशी ॥

वाणी सुणी भगवन्तनी रे जाण्यो अथिर संसार घर आवी माता भणी रे बोले वचन विचार अनु

१अनुकूलप्रतिकूल.२मूर्छाकूं परिग्रहकहाधनादि द्रव्य परिग्रहहै

परवांम ॥ सम० ॥ ८ ॥ मात केकई वचन मांगियो जरत राज वनवासी राम ॥ सम० ॥ ए ॥ किसन लाल कहे धन्य नरा ते काम विचार करे अजिराम ॥ सम० ॥ १० ॥

पूज्य पधारियाये ए देशी ॥

आधाकरमी मोलरो ए नित पिंरू सामो आण रात्री जोजन कह्यो ए स्नान मंजन पट जाण ॥१॥ अनाचीरण कह्यो ए आंकमी ॥ सुगंध वस्तु माला फूलनी ए वीजणे ढोले नवाय वासी राखे नही ए ग्र हस्थीना जाजनमें न खाय ॥अ०॥२॥ राजपिंरू शत्रु कारनो ए दान न लेवे कोय उतारे नही मेलने ए दांतन पनरमो जोय ॥ अ० ॥ ३ ॥ ग्रहस्थीने साता न पूछवी ए आरीसे न जो वेगात रमे नही जुवटो ए अथवा निमंतनि वात ॥ अ० ॥ ४ ॥ सित्रंज प्रमुख नहि रमे ए छत्र न धारे सीसं करे नही वेदगीए एम कह्यो जगदीस ॥ अ० ॥ ५ ॥ मोजादिक पहि रे नही ए अगनि आरंज नलेस सेजातर पिंडन ए पलंग प्रमुख न वेस ॥ अ० ॥ ६ ॥ ग्रहस्थीने घर वेठे नही ए उवटण न करे लिगार वैयावच ग्रहस्थी

१ 'रस्तेचलता शिरपे कपमा नरखे अपवाद मार्गे स्यात्.

पकुत्र हुवा घणा रे पुत्र न मानी वात जिम सुख होवे तिम करो रे इम वोल्या पितु मात ॥ संजम लेलो रे वना हांजी कांई पालजो रूडी रीत शिव सुख लीजो रे वनां ॥ १० ॥ संजम लीधो न्नावसूं रे पाल्यो विसवावीस किसनलाल कर जोमने रे चरन नमावे शीस सं० ॥ ११ ॥

दोय नारंगी दोय अनार ए देशी ॥

समऊ विचार करो कोइ काम जिम जगमे न हुवे वदनाम ॥ टेर ॥ आदर मान लहें पंचामे जस कीरत फैले सहु गाम ॥ सम० ॥ १ ॥ नूप दशारण नद्र समऊके इंद्र हटाय लिया पण जाम ॥ सम० ॥ २ ॥ तज शौरी पुर निकल्या जादव पुन्य वध्या पाम्या आराम ॥ सम० ॥ ३ ॥ वर धन काम किया सुविचारी पुनरपि राज लियो अनिराम ॥ सम०॥४॥ स्वरग सुधरमें गयो चमिंदर पेखपवी न्नाग्यो नय पाम ॥ सम० ॥ ५ ॥ पांडव पांचे नात्र छिपाई देश निकाल दियो हरिताम ॥ सम० ॥ ६ ॥ रावण काम कियो विन सोच्या सीता लाय गमाई माम ॥ सम० ॥ ७ ॥ घरमें हाण जगतमें हांसो पदमो तरलायो

१ 'नागणेकी. २ सर्प. ३ महाव्रत ४ वज्र. ५ विष्णु'

॥ भ० ॥ २ ॥ वरस पचास रह्या ग्रहेवासे ॥ भेव्यासु चरम जिणंदो जनक सीधारथ त्रिसला नंदन पूजित चौसठ इंदोरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तीस वरस छदमस्त रह्या वहु पुठा करी तजदंदो लवधि अनेक सु तपकर पाम्या खम सम दम गुण वृंदोरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सकल मुनिसरमांहिं शिरोमणि उडुगणमें जिम चंदो काल अनादि मिथ्यात रूपियो मेटणतिमिरदिणंदो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ आगम अरथमें लीन रह्या नित मधुकर जिम मकरंदो वरस डुवादस केवल ग्यानी विचर्‍या जेम गयंदो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ मास संथारे मुकतिसिधाया दूर किया भव फंदो तस पद पंकज वेकर जोडी वंदत नंदको नंदोरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ राग परभाति भैरू ॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा ॥ १ ॥ टेर ॥ विमल चरन विघन हरन गुण समुद्र जेवा ॥ ज० ॥ १ ॥ जघन कोटि अमर पास इंद्र करत सेवा तिन लोक माहि अपर देव नहि एवा ॥ जे० ॥ २ ॥ मात तात भ्रात तूही महरके करेवा वीतराग देव तूही कष्टके हरेवा ॥

१ ताराका समूहमें. २ भाव अंधारो'

च० ॥ ७ ॥ कोटि रतन कवडी सटेरे किम गमे मूढ गिंवार विषया सुखने कारणेरे मनुष जनम मतिहार ॥ च० ॥ ८ ॥ वालपणो खोयो खेलमें रे जोवन पिण घरवास वृद्ध हुवा शगती घटी रे जनम गमायो निरास ॥ च० ॥ ए ॥ महारो महारो कर रह्यो रे मोह माया ने हेत कालासूं धवला पड्या रे चेत सकेतो चेत ॥ च० ॥ १० ॥ कर कारज कुसी जीवनो रे जिम जोगी सर जोग ज्ञान कमल वनमें गयारे वांछि विषे रस जोग ॥ च० ॥ ११ ॥ समकित सुध पोषा करो रे मिथ्या मोह निवार जिम सुख पावो सासतारे किसन कहे ततसार ॥ च० ॥ १२ ॥

॥ जविका सिद्धचक्रजीने पूजो ॥ ए देशी ॥

जविका गोयम गणधरवंदो जिम चिरकाल आनंदो रे जवि० ॥ गोय० ॥ टेर ॥ पृथवी माता जग विख्याता द्विज वसूजूतीरानंदो ॥ गोवर गाम नाम इंद्रजूती गोयम गोत अमंदो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ प्रथम संघयण संठाण मनोहर गौर वरण सुखकंदो कनक द्युति वपु मुनिकर पुंगव पेखत मोद लहंदो रे

१ 'शरीर ७ हात उत्तम.

पिठो वालो पूर्व प्रीति पिछानो हो ॥ र० ॥ १ ॥ के तुम काढी रीस पुरानी लेकर सरन दयानो हो ॥ र० ॥ २ ॥ हांसी तूमारी होसी जगतमें जादव कुल नहि छानो हो ॥ र० ॥ ३ ॥ प्रीतम प्यारो आन मिलावे एसो नहि कोइ दानो हो ॥ र० ॥ ४ ॥ पति पहेली सती करम खापवी लीनो पद निरवानो हो ॥ र० ॥ ५ ॥ नंदसूनु कर जोडी वंदे दंपती चरन प्रधानो हो ॥ र० ॥ ६ ॥

॥ अथ साढा पचीस देशाकी ढाल ॥

देशी खमका किमें ॥ साढ पणवीस यह देश आरज कह्या धुर पदे पनवणा सूत्र माहि ॥ पंचक ल्याणं जिनराज काहे तिहां आरज खेत्र सो अलिक नाहि ॥ १ ॥सा०॥ राजग्रह नगर हे मगदवर देशमे अंग चंपापुरी चंगभाषी तामली वंग किलंग कांचनपुरी काशी वाणारशी शास्त्र साखी ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ कौसल देस साकेतपुर सोभतो कुरु हतनांपुरे चारुवेसे कुशावर्त्त देस सौरीपुर सुंदरु ॥ कंपिलपुर हें पंचालदेसें ॥ सा० ॥ ३ ॥ जंगल अही छता द्वारिकां सोरठ विषयें विदेहा मिथिला सुवाचो ॥ वछ

१ 'चवण जन्म दीक्षा केवल निर्वाण. २ 'देश

॥ जे० ॥ ३ ॥ प्रात उठ करो प्रभु नामका क
किसनलाल परम देव नमो नित्य सेवा ॥ जे०

॥ राग प्रभाति ॥

॥ चतुर वीस तीर्थंकर जपतां ॥ मन वंछित
काजसरे ॥ १ ॥ टेर ॥ ऋषभ अजित संभव
नंदन सुमति पदम तनु विघन हरे ॥ श्रीसुपार
ह चंद्र प्रभे जिन निरखत हिवको नेन ठरे ॥
॥ १ ॥ सुविधिनाथ शीतल श्रेयांस जिन वासु
उरमांहि धरे ॥ विमल अनंत श्रीधरमनाथजी
ति जिनेश्वर शांतिकरे ॥ च० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ
नाथ मल्लि जिन मुनिसु व्रतको ध्यान धरे नमि
पार्श्व महावीरजी सुमरे सो जनमे नमरे ॥ च०
विहरमान तीर्थंकर गणधर प्रणम्या पातक
टरे रोग सोग चिंता नहि व्यापे कमला नित
भरे ॥ च० ॥ ४ ॥ ए चोवीस भजे भव प्राणी
नंद वरते तास घरे यो संसार समुद्र तीरने
कहे शिव वेगवरे ॥ च० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ रकलनकी चाल राग ए देशी ॥

रहीयाला नेम मानो ॥ क्युं वजावो जादव

पिछो वालो पूर्व प्रीति पिछानो हो ॥ र० ॥ १ ॥ के तुम काढी रीस पुरानी लेकर सरन दयानो हो ॥ र० ॥ २ ॥ हांसी तूमारी होसी जगतमें जादव कुल नहि छानो हो ॥ र० ॥ ३ ॥ प्रीतम प्यारो आन मिलावे एसो नहि कोइ दानो हो ॥ र० ॥ ४ ॥ पति पहेली सती करम खापवी लीनो पद निरवानो हो ॥ र० ॥ ५ ॥ नंदसूनु कर जोडी वंदे दंपती चरन प्रधानो हो ॥ र० ॥ ६ ॥

॥ अथ साढा पचीस देशाकी ढाल ॥

देशी खरूका किमें ॥ साढ पणवीस यह देश आरज कह्या धुर पदे पनवणा सूत्र माहि ॥ पंचक ल्याणे जिनराज काहे तिहां आरज खेत्र सो अलिक नाहि ॥ १ ॥सा०॥ राजग्रह नगर हे मगदवर देशमे अंग चंपापुरी चंगभापी तामली वंग किलंग कांचनपुरी काशी वाणारशी शास्त्र साखी ॥ सा० ॥ ॥२॥ कौसल देस साकेतपुर सोभतो कुरु हतनांपुरे चारुवेसे कुशावर्त्त देस सौरीपुर सुंदरु ॥ कंपिलपुर हें पंचालदेसें ॥ सा० ॥ ३ ॥ जंगल अही छता द्वारिकां सोरठ विषये विदेहा मिथिला सुवाचो ॥ वछ

१ 'चवण जन्म दीक्षा केवल निर्वाण २ 'देश

निवृत्त कोसंभिनयरी भली नंदीपुर सांभिल देस आठो ॥ सा० ॥ ४ ॥ मलय उपवर्रतने भद्दिलपुर कह्यो मठ वैराट हे नगरनीको वरण अठापुरि नय री मृतिकावती दसारण देशमें तेजतीखो ॥ सा०॥ ॥ ५ ॥ नगरी सोक्ति मती वैदिक देशमे वीतभय सिंधू जिनपदे वखाणो ॥ देस सौविर मथुरापुरी मानिये सुर पापापुरी भव्य जाणो ॥ सा० ॥ ॥६ ॥ मासपुरी भंगसावछि कुंभालय लाटकोटी वर्षे नगर चारु ॥ केकई देश इह अर्ध आरज कह्यो नयरी से त्तंविका नाम वारु ॥ सा० ॥ ७ ॥ भविक भणवा भ णी सहेर अजमेरमें अब्द उगणीस पच्चाससाले ॥ प्रथ म आषाढ वदि चंद्र तेरस दीने ढाल सुंदर करी कृष्ण लाले ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अब घर आवो आवो २ जी महारी ठोटी नणदलका वीरके अब घर [illegible] ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ सुत साहिवो [illegible]

नो पूत ॥ १८ [illegible] देवा

अती अदभू [illegible]

१ देश २

प्रजु चोवीस हाजी प्रजु चोवीसमा जिनराजके ॥ प्र व मोयतारो ॥ आंकणी ॥ वरसी दान देई करीरे देवा संजमलीयो जगत्याग ॥ च्यार करम चक्रचूरनेरे देवा केवल लीयो धर रागके ॥ अ० ॥ २ ॥ अजर अमर पदवी लहीरे देवा साध्या आतमकाज ॥ तुम दरसन पाया विनारे देवा रुलीयोमें चवदेही राजके ॥ अ० ॥ ३ ॥ हवे नर नव लह्यो पून्यथीरे देवा वली लह्यो तुम चो धर्म ॥ तत्तवनी रुची थइ मुजेरे देवा हवे मिट्यो मनतणो नर्मके ॥ अ० ॥ ४ ॥ नव डुख नंजन तु सहिरे देवा तो सम अवर न कोय ॥ ज्ञानदृष्टिवर पेखनेरे देवा सहु जग लीनो जोयके अ० ॥ ५ ॥ घर अंगण सुरतरु फट्योरे देवा कवण कनक फल खाय ॥ गज असवारी ढोमनेरे देवा खर किम आवे दायके ॥ अ० ॥ ६ ॥ नव नव एक जिनराजनोरे देवा सरणो होजो सुखकार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनोरे देवा में कीयो हवे परीहारके ॥ अ० ॥ ७ ॥ चोरासी लखजोनी मेरेदेवा नमायो अनंतीवार ॥ अवतो सरण ग्रह्यो ताहिरोरे देवा कवहु न ढोरु लारके ॥ अ० ॥ ८ ॥ सन उगणीसे चमोलीसेंरे देवा शुकलपक्षे मधुमास ॥ कीसन कहे कर

जोरुनेरे देवा पूरजो मोरी आसके ॥ अ० ॥ ए ॥ इति

॥ धरम दलाली चितकरे ॥ ए देशी ॥

उज्जयणी नगरी विषे चंडरुद्र अणगारोजी ॥ साधु संगाति परवस्थापिण जे क्रोधी अपारोजी ॥ ॥ १ ॥ जो वोरे सिष्य सुलक्षणो ॥ ए आंकडी ॥ सांधासुं अलगा रहे तेहने कोइय न छेडेजी ॥ जो कोइ डुहवे जायने दंड लेइ थाय केडेजी ॥ जो०॥२॥ तिण विरियां धन्ना सेठनो पुत्र वधु नवी परणीजी ॥ सासरे आयो अन्यदा लेवा ते निज घरणीजी ॥ जो० ॥ ३ ॥ क्रीडा नीमित गया वागमें शाला मित्र संघातेजी ॥ मुनी देखी पाय वंदीया स्तवनां कीध विख्यातोजी ॥ जो० ॥ ४ ॥ शाले तद हांशी करी स्वामी सुणो मुज वातोजी ॥ इणने दीक्षा दीजीये ढीलम करो तिल मातोजी ॥ जो० ॥ ५ ॥ मिष्ट वचन मुनि वोलीयामम गुरु पासे जावोजी ॥ तिहां पिण जाय हांसी करी प्रभु इणने दीक्षा दीरावोजी ॥ जो० ॥ ६ ॥ तदनंतर गुरु इम कहें ठार नही मुज पासेजी ॥ कोइयक मित्री जायने लायो राख हुलासोजी ॥ जो० ॥ ७ ॥ जोरे मस्तक झालीयो लोच्या शिरनां केसोजी ॥ पंच उच्चरु

ाधुजी रोजेषोजी ॥ जो० ॥ ८ ॥ शालादिक जय ामियां कंपण लागी देहोजी ॥ तत खिण जागा ह दिशे पहुंता निज निज गेहोजी ॥ जो० ॥ ए ॥ नव दीक्षित मन चिंतवे हांसीमें थइ ये वि ासीजी ॥ अवतो संजम पालस्युं कुंण जुगते चौ ासीजी ॥ जो० ॥ १० ॥ इम चिंतव गुरुने कहे वे कोई वीजे ठांमोजी ॥ जाय रहोतो बे जलो हीतर जासे मामोजी ॥ जो० ॥ ११ ॥ कोप ारी गुरु वोलीया रे पापी डुराचारी जी ॥ ालणी मोंसुं आवे नहीं हिवडां रात अंधारी जी ॥ जो० ॥ १२ ॥ समजावी गुरुने तदा सकल कुटं सुं विहितोजी ॥ स्कंध चढावीले चल्यो शिष्यवडो ुवनीतोजी ॥ जो० ॥ १३ ॥ विखम पंथ चलतां ंकां उपनो खेद महंतोजी ॥ तिण विरिया चंड ड्ने जाग्यो क्रोध अत्यंतोजी ॥ जो० ॥१४॥ रीस से शिर ऊपरे कीधो दंड प्रहारोजी ॥ एहवे शि य पिम्यां करी इम चिंतवे तिणवारोजी ॥ जो० ॥ १५ ॥ में पापी मंद बुद्धीये इण मुनीने डुख दी ोजी ॥ इम सुध जावनां जावतां सुंदर केवल ली ोजी ॥ जो० ॥ १६ ॥ ज्ञानतणा पर जावसुं गज

जोरुनेरे देवा पूरजो मोरी आसके ॥ अ० ॥ ए ॥ इति

॥ धरम दलाली चितकरे ॥ ए देशी ॥

उज्जायणी नगरी विषे चंडरुद्र अणगारोजी ॥ साधु संगाति परवस्थापिण जे क्रोधी अपारोजी ॥ ॥ १ ॥ जो वोरे सिष्य सुलक्षणो ॥ ए आंकडी ॥ सांधांसुं अलगा रहे तेहने कोइय न छेडेजी ॥ जो कोइ डुहवे जायने दंरु लेइ थाय केडेजी ॥ जो०॥२॥ तिण विरियां धन्ना सेठनो पुत्र वधु नवी परणीजी ॥ सासरे आयो अन्यदा लेवा ते निज घरणीजी ॥ जो० ॥ ३ ॥ क्रीरुा नीमित गया वागमें शाला मित्र संघातेजी ॥ मुनी देखी पाय वंदीया स्तवनां कीध विख्यातोजी ॥ जो० ॥ ४ ॥ शाले तद हांशी करी स्वामी सुणो मुज वातोजी ॥ इणने दीक्षा दीजीये ढीलम करो तिल मातोजी ॥ जो० ॥ ५ ॥ मिष्ट वचन मुनि वोलीयामम गुरु पासे जावोजी ॥ तिहां पिण जाय हांसी करी प्रभु इणने दीक्षा दीरावोजी ॥ जो० ॥ ६ ॥ तदनंतर गुरु इम कहे ठार नही मुज पासेजी ॥ कोइयक मित्री जायने लायो राख हुलासोजी ॥ जो० ॥ ७ ॥ जोरे मस्तक झालीयो लोच्या शिरनां केसोजी ॥ पंच महाव्रत उच्चरया दीनो

अशूचीनो गाम ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ हांरे० चाप हुंरी करि कां न ज्युंरे हांरे० चपला उद्योत समान ज्ञा० हांरे० पीपल पान संध्यावां न ज्युं रे हांरे० अरथ अथिर सव जान ज्ञा० ॥ ३ ॥ हांरे० डान्न अंणी जल विंदुवोरे हांरे० क्षिति जिम वादल गाय ज्ञा० । हांरे० चंचल सलिलावेग ज्युं रे हांरे० जोवन च लियो जाय ज्ञा० ॥ ४ ॥ हांरे० वनिता विपनी वेल डीरे हांरे० मतिकर इणरो संग ज्ञा० ॥ हांरे० फल किंपा करी उंपमारे हांरे० नोग विलास जुजंग ज्ञा० ॥ ५ ॥ हांरे० प्रथम शरीरी दूजो मानसीरे हांरे० डुखनो घर संसार ज्ञा० ॥ हांरे० तज ममता समता धरीरे हांरे० आतम कारज सार ज्ञा० ॥६॥ हांरे० मात पिता सुत नार ज्यारे हांरे० विरथा इंणरो सनेह ज्ञा० ॥ हांरे० दान सीयल तप नावना रे हांरे० पर नव संवल एह ज्ञा० ॥ ७ ॥ हांरे० देव सुनग अरिहन्तजी रे हांरे० गुरु गिरवा निगरंथ ज्ञा० ॥ हांरे० धरम दया सोहि जाणियेरे हांरे० किसन मुगतरो पंथ ज्ञा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ चंड्रायणा ॥ इंड्रनूति अग्गि नूइवाय नूई

---

१ 'इन्द्र धनुप'.

गति चालण लागोजी ॥ गुरु बोल्या मार सारठे मारे भूत जाय भागोजी ॥ जो० ॥ १७ ॥ शुरूगति जाणी गुरु कहे सुं तुज मारग दीसेजी ॥ कर जोडी शिष विनवे हां प्रभु विशवा वीसेजी ॥ जो० ॥१८॥ केवली जाणी स्कंधसुं उतरी शिष्य खमायोजी ॥ निज आतमने निंदतां गुरुपिण केवल पायोजी ॥ ॥ जो० ॥ केवलि परजा पालने पहुंता मुकति मझारोजी ॥ एहवा शिष्य वनीतजे आप तेरे परतारोजी ॥ जो० ॥ २० ॥ उतराध्ययन कथा थकी ढाल करी मनरंगेजी ॥ नंद मुणेन्द्र प्रसादसुं किसन कहे स्वर चंगेजी ॥ जो० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ हांरे वांमणका माणल्यो माणल्यो
कांइ करो ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे जीवडला हलुकरमी भवि जीवनेरे हांरे जीवडला सत गुरु देवे उपदेश ज्ञानी भाख्यो रे तन धन जोवन कारिमोरे हां० लख चौराशी जोन मेरे हां० नट क्यो करि नववेस ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ हांरे० सात धातनो पूतलो रे हांरे० रुज व्याधीको धाम ॥ ज्ञा० हांरे० भाजन दुःखरुकलेसनोरे हांरे० सकल

---

१ ९ 'थावर ४ त्रस

सुपन सम हेसव संसारो १ सुख माने जिम स्वान रजकरो हे डुखमी आरो सी० ॥ ३ ॥ ठाट देख म त फूल सयाणां मान कह्यो महारो १ पानीवीच प तासा गलतां नहिं लागे वारो सी० ॥ ४ ॥ कोइ उपाय कियां यो अवसर नहि वारंवारो १ गाफल मत रहो लेलो खरची परभवकी लारो सी० ॥ ५ ॥ मात पिता तिरिया सुत बांधव मतलवके यारो १ मतलवकी मन वार जगतमें विन मतलव खारो सी०॥६॥ अलप सुखांरे काज गमन कर परधन परनारो १ पाप करम कर पड्या नरकमें सहैजमकी मारो सी० ॥ ७ ॥ हिंसा धरम नरक डुखदाता विष मि श्रित अहारो १ इम जाणीने उत्तम प्राणी पाप पंथ टारो सी० ॥ ८ ॥ परम धरमको मरम पिछांणो भर म मूलफारो १ सुध आचारी सद्गुरु सेवो जिम हुवे निसतारो सी० ॥ ए ॥ दश दृष्टांते डुरलभ जगमें मानव अवतारो १ जप तप संजम शील दानकरि निज आतम तारो सी० ॥ १० ॥ क्रोध मान मद लोभ कपट तजि कर पर उपगारो १ वैरभाव कि णसे मति राखो इम कहे अणगारो सी० ॥ ११ ॥

---

१ 'धोबीको कुत्तों सतावो

तीसरा चरन कमल कर जोरु नमूं जगदीसरा॥ विगत सुधरमा स्वामि मंडित मोरी पूतजी अकम प्रीत अन्त ज्ञान लियो अदनूतजी ॥ १ ॥ अचल नया मेतार सिरीपर नासजी जो ध्यावे नरनार पूरे त्यारी आशजी ॥ तारक विरद विचार सेवकने तार जो पुरुषोत्तम महाराज अरज महारी धारजो ॥२॥ में हू नाथ अनाथ कृपा तुम कीजिये सेवक जाणी मोय अक्षय पद दीजिये ॥ ग्यारापर विसराम फेर दश कीजिये तुक तुकमें इगवीस मतागिण लीजिये चरण धरो इम चार जिणंद गुण गायणा लाल कहे इम छंद हुवे चंदरायणा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ तावडा धीमो पडजारे गोरीको नाजक जीव वादली गहरी छाजाए ॥ ए देशी ॥

॥ सीख सतगुरकी उर धारो रे २ डुर्लन पायो मनुषज मारो एलो मति हारो, टेर ॥ तन धन जोवन चंचल हे जिम विद्युत ऊवकारो समऊर विद्युत ऊवकारो कुंजर कान पान पीपल जिम जीत वहे थारो सी० ॥ १ ॥ त्रस थावर सब जीव जगतका काल तणो चारो २ पुदगल रचनां थिर नहि इनको मतिकर अहंकारो सी० ॥ २ ॥ इंद्रजाल घन माल

निवारो ज्ञानी गुरुके० ॥ टेर ॥ पांडव पांच जुंवार महाख्या राजसिरी निजनारो नलराजापिण बहु दुख पायो बुध जन हिरदे विचारो कीजे जुवटो परिहारो ॥ स० ॥ १ ॥ दूजो मास नखण पर हरिये करुणा नरहत लिगारो महा सतकजीनी नारी रेवती नरक गई निरधारो पायो तिण दुःख अपारो ॥ स० ॥ २ ॥ मदिरा पान विसनये तीजो खलक वधाव णहारो दीपायण ऋषि दुहव्यो जादवे द्वारिकानो कियो ठारो हार्यो तपनो फल सारो ॥ स० ॥ ३ ॥ चोथो विसन वेश्या घर राख्या लाजगमे होय ख्वारो कयवन्ना जिम सवधन खोवे फिटफिट कहे जग सारो आगे पिण नरक तयारो ॥ स० ॥ ४ ॥

॥ दोहरा ॥

गनिकाधरं सुन्दर तदपिको चुम्बति कुलवान ॥ चोरकोम चर नट रुविट थूक न भाजन जान ॥ १ ॥ गनिका कामानल सुफल इन्धन रूप अपार ॥ जोवन धन हो मत तहां कामीजन करि प्यार ॥ २ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ पाप अहेडे पांचमें पापी प्राणि हणे परिहारो मृगली मार नृपश्रेणक पहुंतो पहेली

१ 'होट

व्योमवाण निधि इन्दु भाद्रवदि वारस गुरुवारो २
किसनलाल अजमेर सहरमें जोड करी सारो
ली० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ रथ चढ रघुनन्दन आवत है मिल चलो
सखी छवि देखनकों ॥ ए देशी ॥

॥ घर आवोजी हमारे नेम पिया २ कहे राज
मती उग्रसेन धिया घर० ॥ टेर ॥ आठ भवांकी
प्रीत पुरवली नवमें भव किम छेह दिया ॥ घ० ॥१॥
कलन परत पलकफि जिम जलविन तुम विरहा
नल जर तहिया ॥ घ० ॥ २ ॥ असन वसन विले
पन न सुहावत सवसिनगार अलग धरिया ॥ घ०
॥ ३ ॥ नयन जुगल जल टपटप वरसत तरसत है
दिन रात जिया ॥ घ० ॥ ४ ॥ विविध विलाप कि
या मोहके वस परम धरम दिलमें वसिया ॥ घ० ॥
॥ ५ ॥ घणी सखियां संग संजम लीधो सयमेव
शिरका लोंचकिया ॥ घ० ॥ ६ ॥ अविचल प्रेम कि
यो धन राजुल किसन चरनका शरन लिया ॥घ०७॥

॥ राग वसन्त होरी ॥

॥ सत गुरुके वचन उरधारो विसन तुम दूर

१ 'माछली'.

मूढवके जिम स्वान शिरोलं ॥ ते० ॥ ४ ॥ किसन लाल कहे सहु जन भाषे सरस गिरानर भवको मोल ॥ ते० ॥ ५ ॥

॥ देशी ते० ॥ गिण गिण मुखसे बोले बोल ते नर जाणो रतन अमोल ॥ टेर ॥ सावजकारी विगर विचारी न करे किणकी रोल कितोल ॥ ते० ॥ ॥ १ ॥ उत्तम बोले सभा सुहावत दिन दिन वाधे अधिको तोल ॥ ते० ॥ २ ॥ सत विवहार वदे मृडु भाषा सुणत पियो मानू अमृत घोल ॥ ते० ॥ ३ ॥ वचन रतन मुख सदन अधरपट विनगाहक मिलि यां मत खोल ॥ ते० ॥ ४ ॥ अपभासी अति आदर पांमें दह दिश पसरे कीरत उंल ॥ ते० ॥ ५ ॥ कम बोलाने अमर उंपमा किसन कहे इनमें नहि भोल ॥ ते० ॥ ६ ॥

॥ मोटी जगमें मोहणी ॥ ए देशी ॥

॥ सिरि जिनवर प्रणमे करी गुरु गरिमा होतसु नामी सीस सामायक सखरीतणा अनुकरमें हो कहूं दोष वतीस ॥ १ ॥ शुद्ध सामायक कीजिये ॥ टेर॥ धुर दाखो दश मन तणा मति मंता हो मन धरीये

---

१ 'श्याल'.

रक मझारो आगममें है अधिकारो ॥ स० ॥ ५ ॥ चोरी विसन छटो दुखदाई जीव सहे बहु मारो विजय चोर जिम बन्धन पावे जीव काया करे न्या रो जावे मर नर्क दुवारो ॥ स० ॥ ६ ॥ राघव राणी ले गयो रावण लीधो सीस उतारो पंचाली[1] पदमोतर लायो लाज गमाई गिंवारो कपिल दियो देश नि कारो ॥ स० ॥ ७ ॥ इण विध सात विसन सुण गुरु मुख त्याग करो नर नारो दान शील तप भाव आ राधो शिवपुर मारग चारो रुचे सोही कर अंगी कारो ॥ स० ॥ ८ ॥ अतीचार रहित सुधपालो श्रा वकना व्रतवारो किसन मुनी कहे विसन निवारो जो चाहो निसतारो जपो नित श्रीनवकारो ॥स०९॥

॥ फिरमिलजो महारा दीनानाथ ॥ ए देशी॥

॥ विगर विचार्यां बोले बोल ते नर जाणो फू टा ढोल ॥ टेर ॥ भली बुरीका भेद न जाने फेंके जिम अनगढिया टोल ॥ ते० ॥ १ ॥ वाय भरी जि म चरम दीवडी बाहिर फूली भींतर पोल ॥ ते० ॥ ॥ २ ॥ केइ नरके रस झरे जीभको भेसपूतमर वदे निठोल ॥ ते० ॥ ३ ॥ बिनवत लाया भरी सभामें

---

१ 'द्रोपदी

णा अठ वीसमें हो करुका किया जङ्ग ॥ शु० ॥१०॥
मेल जतारे गुण तीसमें विन पूंज्यां हो खिणे खाज
शरीर पग चंपावे परकने दोय तीसमें हो निद्रात
ज वीर ॥ शु० ॥ ११ ॥ आवश्यक सूत्र अर्थमें इम
नाख्यो हो जिनवर वर्धमान दूषण टाली शुद्ध करे
सोहि पामे हो वर केवल ज्ञान ॥ शु० ॥ १२ ॥
वाणँ वेदांकविधूं वरसे चजमासो हो वडलू शुन्न गा
म नंद सुणंद प्रसादसूं ढाल जोडी हो किसने अ
जिराम ॥ शु० ॥ १३ ॥

॥ आवे वर लटकंतो कनक धजा महाराज
गलिये अटकंतो ॥ ए देशी ॥

॥ आजीवका निमते नर कोई अगनि आरंज क
रावेरे ते इंगाली करम कहीजे जेद घणा वलि था
वेरे ॥ १ ॥ महावीर वरज्योरें पनरे करमादानम
ति आदरज्योरे आंकडी ॥ द्रुम कटावे वाग लगा
वे फल फूल वेचे तेहनांरे वीजोये वन करम कही
जे जेद घणां ठे एहनारे ॥ महा० ॥ २ ॥ गाडा प्र
मुख घडावी वेचे साकी करम यह तीजोरे एहनां
पिण वहु जेद हुवे ते चतुर विचारी लीजोरे ॥ म०
॥ ३ ॥ घोडा ऊंटने वृषन रखावी पारको जार वहा

वैराग दोय करण तीन जोगसूं इग महुरतहो साव
जरात्याग ॥ शु० ॥ २ ॥ प्रथम अकाले जो करे ज
स वंछे हो दूजे नरनार पूजा हिते दोष तीसरो
लोभ चोथे हो करिये परिहार ॥ शु० ॥ ३ ॥ गर्व
वसे करे पांचमे जय आणे हो छटे मन माय करत
निहाणो सातमे फल संशय हो वसु दोषण थाय ॥
शु० ॥ ४ ॥ विनय रहित नवमें करे जगती तजहो
दशमें कर याद वचनतणा दश हिवे सुणो चित क
रने हो छोमि परमाद ॥ शु० ॥ ५ ॥ चपलपणे बो
ले घणो द्वादशमे हो अति क्रोध सहीत मण मणाट
करे तेरमे चौदशमें हो लवे विनय रहीत ॥ शु० ॥
॥ ६ ॥ काम राग करे पनरमे पोरुशमे हो करे कल
ह अपार वाद करे वलि सतरमें तिम विगथा हो
थया दोष अढार ॥ शु० ॥ ७ ॥ हांसी करे उगणी
समें हिवे वीसमें हो बुटाने कोय आव जाव इम
कहे घणो कायानां हो दूषण दश दोय ॥ शु० ॥८॥
पालखी मारन वेसिये अथिरासन हो वरजो गुण
धाम दृष्टि चपल पिण परिहरो चोवीसमें हो तज
सावज काम ॥ शु० ॥ ९ ॥ ओठो लेवे पण वीसमें

निमानी संजूमचकी जलमे रूवकांनारे ॥ मत० ॥४॥ फूंट कपट करके धन जोडे रात दिवसघर धंधे दोडे मदठकियो तिसना नहि छोडे मतकर ममता आप मस्या सव माल विरानांरे ॥ मत० ॥ ५ ॥ अथिर जगत जिम वादल छाया इन्द्रजाल सुपनेकी माया सोजं देखगरवे मति नाया ताकर ह्या शिरजीव चिन्ना परकाल सिंचानारे ॥ मत० ॥ ६ ॥ मातपिता तिरिया सुत जाती सव स्वारथ के मिले संगाती परनव जातां कोश्य न साती दान सियल तप ना वके लेलो साथ खजांनारे ॥ मत० ॥ ७ ॥ क्रोध मान मद लोन न राखे मरम वचन किसको नहि नाषे प्रेम सहित अनुनव रस चाखे धन्य नरा ते किसनलाल निजतत्व पिछांनारे ॥ मत० ॥ ८ ॥

॥ रोकड ह्योरां लेलो चार ए देशी ॥

॥ धन धन मुनिवर गज सुख माल जनमम रन डुख दीना टाल धन० टेर ॥ वालक वयमे संजम लीधो सव जग जांएयो इंदरजाल ॥ ध० ॥ १ ॥ आज्ञा लेसिरी नेमनाथरी मुगतमेल मन कियो कृपाल ॥ ध० ॥ २ ॥ महाकाल समसाण

---

१ ' सामग्री

लास कियां डुख पासी तो योन चौरासीमे गोता रे खासी ॥ नर० ॥ ६ ॥ मरनो आयां कोई शरनो न देगा तो नेकी वदी दोय संग चलेगा ॥ नर० ॥ ७॥ धर्मोंद्यम करो छोड प्रमादो तो किसनलाल कहै शिव सुखसादो ॥ नर० ॥ ८ ॥

॥ हांक जिणरो तंने काई ए देशी ॥

हांके मत कर गरव दिवाना सुन सत गुरुकी सीख सयांना धस्यारहे धन माल होत तन राख मसां नांरे मत० ॥ टेर ॥ सनत कुमारकी सुंदर काया अमर रूप देखणने आया गरव किया उसव क्कविलाया पीकदांनीमें थूकत कीन्हा देखन्हा नांरे ॥ मत० ॥ १ ॥ नगरी द्वारिका देख न लायक छपन कोड़ जादवको नायक किसन महावली सुरथापाय क जस्म हुवा क्षणमांहि देखतां सव कमठांनारे ॥ मत० ॥ २ ॥ सोवन लंक समुद्रसि खाई हरि जित कुंजकरण सा नाई तीन खण्डमें आण डुवाई वदी करी जद रावन लिछमण हात मरांनारे ॥ मत० ॥ ३ ॥ वीर ब्राह्मणी कूंखमें आया हरिचंद राजा वहु डुख पाया मूंज नूपती मांगने खाया अ

१ ' इन्द्रजित.

मांनीको ॥ चे० ॥ ३ ॥ आगे ही मद कर चतुर गतिमें जीव भ्रमण करे ज्युं वृष घांनीको ॥ चे० ॥४॥ अशुचि पिण्ड रुजसदने[2] वदन सव मदन रुलावे दुखदानीको ॥ चे० ॥ ५ ॥ वार वार सतगुरु समझावेतो ने मानो वचन गुरु ज्ञानीको ॥ चे० ॥ ६ ॥ सुकृतरूपी गहिरो संवल लेलो साथे आगे नही छे घरनांनीको ॥ चे० ॥ ७ ॥ किसनलाल कहे सतगुरु सेवो प्यारा लेवो मारग निरवांनीको ॥ चे० ॥ ८ ॥

॥ हांरे रंग मांणले रे सेलीवाला सायवा ए देशी ॥

॥ हांरे जीवा लखचोरासीमें तू जन्म्यो हां० जिणरी तो गिणतनथायरे सुगुरु चरन चित लाय रे हांरे थारा जनममरन मिट जाय रे ॥ सु० ॥ १ ॥ हां० थावरपण त्रस च्यारमे हां० धारी ते नव नव काय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ हां० दुरलभ नर भव पांमियो हां० अव तू प्रमाद मिटायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हां० अथिर संसारनी संपदा हां० वादल जेम विलायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ हां प्रासी हुवेरे दश[3] वोलरी

१ 'जात्यादि' २ ' रोगकोघर' ३ 'सवर्णे नाणे विनाणे पचखाणेयसंजमे ॥ अननये तवे चेव वोधायणे अकिरिया सिद्धि.'

में जाकर तरुतल ध्यांन कियो सुविशाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पूरवभवको वैर संभाली कोप्यो द्विज मुनि नयन निहाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ इत उत पेखी मृतिकाला यो मस्तक ऊपर वांधी पाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ जग जगता खेहर नांखीरा शिरपर धरिया सोमल वला ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रबल वेदना सही ऋषीश्वर समता कर मेटी मन जाल ॥ ध० ॥ ७ ॥ मन कर सोमल महीसुरऊपर द्वेष न आण्यो परमदयाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ मेरु शिखर जिम अडिल ध्यांनमे केवल ज्ञान हुवो ततकाल ॥ ध० ॥ ए ॥ करम खपावी मुगत सिधाया थिर सुख पांम्या वहुतरसाल ॥ ध० ॥ १० ॥ किसनलाल कहे वेकर जोमी मुज वंदनाहो ज्योति रकाल ॥ ध० ॥ ११ ॥

॥ नखरो जोर वएयोरे बिंदगारीरो ए देशी

॥ चेतन मतकर जोर जवानीको छिन भर नही है भरोसो जिंदगानीको ॥ टेर ॥ खोटी तो दुनियांने नाजक जमानोथारो व गत वडो छे वेइमानीको ॥ चे० ॥ १ ॥ काया माया तो भाया वादल छाया जैसी कां चोरे घट जिम पांनीको ॥ चे० ॥ २ ॥ मूछ मरोडे करवांह समारे मुखे वयण उचारे अभि

जाय ॥ वं० ॥ ७ ॥ गणधर विहरमान मुनि प्रण मू जिम सवविघन विलाय ॥ वं० ॥ ८ ॥ अनंत चौवीसीने निशदिन वन्दू तिमिर अज्ञान मिटाय ॥ वं० ॥ ९ ॥ उगणीस वावन पोस किसन च० नगर नवाके मांय ॥ वं० ॥ १० ॥

॥ श्री आदेसर स्वामी हो ए देशी ॥

॥ आदेसर अविनाशी हो मुगती रावासी सां भलो कांई सेवकनी अरदास भवजल पार उतारो जी अवधारो अरजी वाल हा कांई आपो अविचल वास ॥ आ० ॥ १ ॥ मरु देवी रानंदन हो जग वंदन संदेन शीलरा कांई विघन निकंदन देव घननांमी गुणधांमी हो शिव गामी स्वामी मायरा कांई सुर नर सारे सेव ॥ आ० ॥ २ ॥ वीतराग मनरंजन हो दुखभंजन गंजन कांमने कांई देव न दूजो कोय किसन करे कर जोडि हो शिर मोडी सायव वंदना कांई शिव सुख दीज्यो मोय ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ गोरख ईसरजी केवेतो हंस वोलणाजी ए दे० ॥

॥ वलिहारी हो सत गुरजी थारा ज्ञानकी हो मनडो हरष्यो महरो देखि छटा वखांनकी हो

---

१ 'रथ शीलका'

हां० जाण्यो जिनागममांयरे ॥ ५ ॥ हां० क्रोधमा नमदनां करे हां० निरलोजी निरमाय रे ॥ सु० ॥६॥ हां० वीर वचन सुणबूझियो हां० गोतमादिक ग्यारे जायरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्रेणक नृप निज वागमे हां० जेट्या अनाथी मुनि रायरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हां० एम अनेक तिख्याघणां हां० गुरुदियो मारग वतायरे ॥ सु० ॥ ए ॥ हां० उत्तम मुनी धन जैनका हां० जव जवमे सुखदायरे ॥ सु० ॥ १० ॥ हां० गिरवा गुरु नंदरामजी हां० किसनलाल गुणगायरे ॥ सु० ॥११॥

॥ राग श्याम कल्याणमें ॥

॥ वन्दू नित चोवीसे जिनराय वन्दू० टेर ॥ ऋषज अजित संजव अजिनंदन सुमति चरन चि तलाय ॥ वं० ॥ १ ॥ पदम सुपारसचन्द्रप्रजे जि न सुविधि शीतल सुखदाय ॥ वं० ॥ २ ॥ श्रेयश्रेयां स वासुपूज्य ध्यांऊ विमल चरन मनजाय ॥ वं० ॥ ३ ॥ अनंत धरम सिरि शांति जिनेश्वर कुंथु अरेह गुणगाय ॥ वं० ॥ ४ मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी नमियनेम नमू पाय ॥ वं० ॥ ५ ॥ पारस जिन महावीर चरनमे मुजमन जंवरवसाय ॥ वं० ॥ ६ ॥ ए चोवीस जजे जव प्राणी जनम मरन मिट

जाय ॥ वं० ॥ ७ ॥ गणधर विहरमान मुनि प्रण मूं जिम सवविघन विलाय ॥ वं० ॥ ८ ॥ अनंत चौवीसीने निशदिन वन्दू तिमिर अज्ञान मिटाय ॥ वं० ॥ ९ ॥ उगणीस वावन पोस किसन चठ नगर नवाके मांय ॥ वं० ॥ १० ॥

॥ श्री आदेसर स्वामी हो ए देशी ॥

॥ आदेसर अविनाशी हो मुगती रावासी सां भलो कांई सेवकनी अरदास भवजल पार उतारो जी अवधारो अरजी वाल हा कांई आपो अविचल वास ॥ आ० ॥ १ ॥ मरु देवी रानंदन हो जग वंदन संदन शीलरा कांई विघन निकंदन देव घननांमी गुणधांमी हो शिव गामी स्वामी मायरा कांई सुर नर सारे सेव ॥ आ० ॥ २ ॥ वीतराग मनरंजन हो दुखभंजन गंजन कांमने कांई देव न दूजो कोय किसन करे कर जोडि हो शिर मोडी सायव वंदना कांई शिव सुख दीज्यो मोय ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ गोरल ईसरजी केवेतो हंस वोलणाजी ए दे० ॥

॥ वलिहारी हो सत गुरजी थारा ज्ञानकी हो मनडो हरष्यो महरो देखि ठटा वखांनकी हो

---

१ 'रथ शीलका'

॥ टेर ॥ ज्ञानी स्वपर मतका जान गिरवा गुण रतनाकी खान गालो पाखंड्यांरा मान ॥ व० ॥ १ ॥ पुरुषदा ठाट जुडे मुख आगले हो जाणे खिलरहि केसर क्यारी वाणी श्रवण करे नर नारी निरखे मुदरा मोहनगारी ॥ व० ॥ २ ॥ गाजो घनज्युं चतुर विध संघमे हो सूतर भिन्न भिन्न करने वाचो जाषो धरम दयामे साचो निश दिन ज्ञान ध्यानमे राचो ॥ व० ॥ ३ ॥ कथा आक्षेप विक्षेप संवेगणि हो चोथी निर्वेगणि विचार वरसे अमृतगिरा उदार श्रोता पांमे समकित सार ॥ व० ॥ ४ ॥ कुंथ्यावरणी डुकानरी ओपमांहो परसनजो पूछे सो त्यार उत्तर देवोहिये उतार थांरीवुधरो छे इनपार ॥ व० ॥ ५ ॥ लीनोजोगकुटंवछ्धछोमने हो जाण्यो ए संसार असार त्रिविधे छोड्या पाप अठार लीधा घोर महाव्रतधार ॥ व० ॥ ६ ॥ अन्नेदान दियो षटकाया ने हो जवजल तारण तिरण जिहाज सारो निज पर आतम काज शीतल आनन ज्यूं द्विजराज ॥ व० ॥ ७॥ वुधनिरमल थारी श्रुतकेवली हो थाने सुर नर सीसनमावे पूरण सुरगुरु पार न पावे

---

१ 'मुखचन्द्र'

किंचित किसनलाल गुण गावे ॥ व० ॥ ८ ॥

॥ राग वसंत होरी ॥

॥ प्रणमू नित सिद्ध जयकारी तिरण भवसाग र वारी ॥ टे० ॥ शिवशङ्कर जगदीश चिदानंद ज्यो तिस्वरूप उदारी अलख निरंजन वीतरागतूं सकल जिवां हितकारी प्रभु तुम करुणाधारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ अज अविनाशी अकलसरूपी दोष रहित अवि कारी परमपुरुष परमातम तुमही लोकालोक वि हारी परमपदके दातारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ पतित उ धारन भवजल तारन आपको विरध विचारी कि सनलाल चरणांको चाकर आयो शरण तुम्हारी राखो प्रभु लाज हमारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥

॥ प्रीतम बोल रे ए दे० ॥

॥ लिछमण जागरे जागरे इकवार भाई म्हारा बोल रें ॥ टेर ॥ इहां नही नगरी आपणी रे इहां नही परिवार मातपिता पिण इहां नाही किम पो रूयो कंतारें ॥ लि० ॥ १ ॥ हूं अयोध्या जायने रे किण परदाखसूं मुख मा० ॥ मुजने क्यो मूकि गयो रे देइ सगलो दुःख ॥ लि० ॥ २ ॥ दह दि

१ 'जल' २ ' वन.

श जो ता तुम विनांरे मीटंन आवे कोय तुज
विन सूंनी सायवीरे कुसुम विना कस वोय ॥ लि०
॥ ३ ॥ तुम विण आपद कुंण हरे रे कहो कुण पूठ
सेसार ॥ उपगारी शिरसे हरो रे वुद्धि तणो नण्डार
॥ न्रा० ॥ ४ ॥ जिम जिम गुण चित संन्नरे रे आवे
विरह अपार ॥ नीर झरे नैणाथ कीरे टूटो ज्यूं मुग
ताहार ॥ लि० ॥ ५ ॥ विविध प्रकार विलाप करता
अहो मोहनी झाल ॥ जीपे ते मुनिराज धन है
एम कहे कृष्णलाल ॥ लि० ॥ ६ ॥

॥ तुम तो न्नले विराजोजी ए दे० ॥

॥ म्हारे घरापधारोजी रूठोडा शिव शङ्कर म्हारें
घरांपधा रोजी ॥ टेर ॥ तुम पूज्यां विनखांवण वै
ठो चूक पडीया मोठी न्रूका प्यासा निकल्या घरसे
दशाहमारी खोटी ॥ म्हारे० ॥ १ ॥ तुमचो दोष
नमुज नारीको दूषण सव है म्हारो न्नारी व्याता केश
घस्या शिर अवतो कोप निवारो म्हारे० ॥ २ ॥ न्ना
ग्यहीणने न्नली वस्तुको जोग मिले नहि कोई ॥
जव दाखां पाकणने लागे काग गले रुज होई ॥
॥ म्हारे० ॥ ३ ॥ न्नांत न्नांतरा न्नोजन करने न्नगती

---

१ 'नेत्र.

करस्यूं थारी ॥ भाव धरीने भोग लगासी पतिव रता मुज नारी ॥ म्हारे० ॥ ४ ॥ भूप दशारण भ इभणे सुण भोला भेदन पायो ॥ नहि घर आया शिवपारवती कुलटा चरित वणायो ॥ म्हारे० ॥५॥ राजा कहे पिण एक न माने टेक विगाडे कांमे ॥ कुगुरांकाभर माया कुमती ते किम आवे ठामें ॥ ॥ म्हारे० ॥ ६ ॥

॥ राग व्रज होरी ॥

॥ जाणो न्यारारे चतुर नर जीव काया जाणो न्यारारे टेर ॥ धरम कथा मुनि केशी सुणावे मानो सुधा घन वरसाया ॥ जा० ॥ १ ॥ पँण वपु धारी सयल संसारी भुगते करम उदय आया ॥ जा०॥२॥ ऊंच नीच लघु दीर्घ धनी रंक पुन्य पापका फल गाया ॥ जा० ॥ ३ ॥ चेतन लक्षण जीव अमूर्तिक तन जरु लक्षण रूपी रे भाया ॥ जा० ॥ ४ ॥ जीव दरवतिं हु काल अखण्डित भिन्न भिन्न करके ओल खाया ॥ जा० ॥ अमृत वाक्य अपूर व श्रवणे भूप ति सुण इचरज पाया ॥ जा० ॥ ६ ॥ चित परधान ने पूछ हकीकत केशी श्रमणपे चल आया ॥जा०७॥

॥ राग तेल्हिज ॥

॥ मति हारोरे अमोल खनरत्नवकूं मति हारोरे ॥ टेर ॥ सुंण उपदेश प्रमाद मिटावो सीस नमावो सुध साधव कूं ॥ म० ॥ १ ॥ क्रोध मान मद लोज कपट तज ज्ञज प्रज्जुवीतरागधवॅ कूं ॥ म० ॥ २ ॥ दानसियल तप ज्ञाव ठमांदिक संवललेलो परज्ञव कूं ॥ म० ॥ ३ ॥ रोग असाध्य मिथ्या तमे जक्यिा कहा उपदेश इसा शवॅ[2] कूं ॥ म० ॥ ४ ॥ लाल कहे[3] जिन धरम आराधो च्यार कषाय मिटवो दवॅ कूं ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ राग सारंग व्रज होरी ॥

॥ गरवे मति देख सुंदर काया गरवे मति ॥ टेर ॥ हाडको पिञ्जर चाम सुंमढियो जीतर जिंगार जरीरे जाया ॥ ग० ॥ १ ॥ मलमूतर डुरगंध की क्यारी सात घात पिंम दरसाया ॥ ग० ॥ २ ॥ चावत पांन सुपारीने वीमा मुकर देख मन हरषाया ॥ ग० ॥ ३ ॥ कुञ्जर कान पान पीपलको इंद्रजाल सुपनेरी माया ॥ ग० ॥ ४ ॥ सनतकुमार चकीसर उनका रूप खिण कमे विललाया ॥ ग० ॥ ५ ॥

१ 'स्वामी, २ ' मुरदा, ३ ' दावानल.

मातपिता तिरिया सुत बंधव मोहजालमे मुरझाया ॥ ग० ॥ ६ ॥ सुगुरु दयाल कहे सुण भाया देह धरी कुण सुख पाया ॥ ग० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो एह कलियुगविषे तज्या सकल व्यापार ॥ मेहनीलामरु फाटका इनहीको अधिकार ॥ १ ॥ सधन थकी निरधन हुवे स्ववश पर आधीन ॥ संनिपातकीसी दशा भये दीन परवीन ॥ २ ॥

॥ देशी होरीका ख्यालकी ॥

॥ संसारी लोकां मत कोई करज्यो रे फाटका घरकारहो नही घाठका मत पीवो जहर भर वाटका ख्यालरचा हे जाटका देवे ठे सतगुरु चाटका ॥ सं० ॥ टेर ॥ आरतध्यांन रहे नितमनमे धरम ध्यांन घटजाय अलियां गलियांमिले मानवी पूठे भाव बुलाय सो कहें अवके तेजी भारी सुण मन राजी थाय हो ॥ सं० ॥ १ ॥ महर करी तूठी जगदंबा अवके राखी लाज घरमे जाय कहे सुन प्यारी गयो दलिदर आज सुंदर सुंदर करो र सोई सीधा वंछित काज हो ॥ सं० ॥ २ ॥ कामनि वरजे कंथने सथे मती करो नीलाम नही लेणारो

जोग आपणे गमे गांठरादाम हे जिणमे संतोष करो जो राखी चाहो मांम हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ अवही मेटूं दरद तिहारो सुंदर सांची सरद मुगताफलरो हार कराघूं तो जाणी जे मरद भांत भांतरा भूषण भारी करद्युं पीलीजरदहो ॥ सं० ॥ ४ ॥ वदे जोतकी जनम पत्रीमें लाभ लिख्यो इणमास ठक्यो गरवमे गणकगिरा सुण आयो निज आवास इतरे मंदी चली अचांनक झंका लेय निसास हो ॥ सं० ५ ॥ दीसे आज उदासी तनमे पूछे पदमण आय चिन्तातुर वोल्यो सुन प्यारी अवतो ईजत जाय तुरत खोल दे गहिनो नहितर मरस्युं फांसी खाय हो ॥ सं० ६ ॥ वनिता कहे पेलीमे वरज्या ओचाला दुखदाय गहिंनो सव सासूका घरको करिये ओर उपाय नैन लालकर वोल्यो तडकी थारा वापको नायहो ॥ सं० ॥ ७ ॥ वोली त्रिया दीखस्यो भूंडो दुरजन लोक हंसाय जो मुज गहिनो खोलस्यो तो मे कूवे पडस्यूं जाय हाथ जोड वोल्यो सुन प्यारी वेगोदेस्यूं लायहो ॥ सं० ॥ ८ ॥ जिम तिम कर भूषन लेइ ठांनो धर्या अडाने जाय दूंणो दरव व्याज

---

१ ‘ इज्जत,

पिणडूणो काटो लारलगाय मुग्ध गमायो अरेथ गांठको आरत इधकी थाय हो ॥ सं० ॥ ए ॥ एते सुणि एक अवधू आयो वेपरवाई तास जांगतमा खू चरूसमिठाया ले जावे उनपास लटका कर कर करे ॐमोतांधर मन धनरी आसहो ॥ सं० ॥ १० ॥ पलक खोलकहे सुनरे वच्चा हुकम मातको एह इतना फ रक फरक नहि इनमे मतकर मन संदेह इम कहि जोगे अलख जगायो सुण सुख पायो तेह हो ॥सं० ॥ ११ ॥ जा जा कही सीख जवदीनी लीनी हिरदे धार धाम जाय धन सव चूंचायो जेज न करी लि गार वावो कर वावो गयो सकोई लागो शोच अ पार हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ अलिया धंधा करे अज्ञानी मनमे सोचेनाय वृथा लोजसे हुवे फजीती धक्का नरकमें खाय समता वृष्टि विना किम वूके लागी त्रसनालायहो ॥ सं० ॥ १३ ॥ जगणीसें इगताली वरसे अहिपुर सहेर मजार किसनलालरीहित शि क्षा यह सुणज्यो सहु नरनार लाज हानि करमां अनुसारे धरम ध्यांन जरधार हो ॥ सं० ॥ १४ ॥

---

१ 'मूरख', २ 'धन,'

॥ दोहा ॥

॥ गजगवेन्द्र सिंह लक्ष्मी दाम शशीखग केतु ॥ कुम्भ कलशवर पउमसर क्षीरोदधि सुख हेतु ॥ ॥ १ ॥ भवन विमानये वारमो रत्नराशि सुख दान ॥ धूम रहित वहनीसु एह स्वपन चतुर दश जान॥२॥

॥ महावदि रे महावदि वारस जन मिया रे शु भ वेला शुभ वार रे ॥ महोछव रे महोछव वहु विध साजियो रे हरष्यो सहु परिवार रे ॥ शी० ॥ ॥ ६ ॥ दाह जुर रे दाह जुर हुंतो जनकने रे जनि ता फरस्यो हाथ रे ॥ शान्ति रे शान्ति हुई तिण कारणे रे नामज शीतल नाथ रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ जो वन रे जोवनरी वय पामियां रे परण्या पद मण ना र रे ॥ विलसी रे विलसी सुख संसारनां रे लीधो संजम भार रे ॥ शी० ॥ ८ ॥ जप तप रे जप तप करणी खप करी रे पूर्व पचीस हजार रे ॥ लाखज रे लाख पुरवनो आउषो रे पहुंता मुगति मझार रे ॥ शी० ॥ ए ॥ गिरवा रे गिरवा गुरु नंद रामजी रे गुण मुख कह्या न जाय रे ॥ किसने रे किसन ला ल गुण गाविया रे गढ जो धाणा मांहि रे ॥ शी० ॥ १० ॥ संवत रे संवत उगणीसो भलो रे वरस व

यालीस सार रे ॥ सांवण रे सांवण मास सुहावणो रे वदि पंचम शनिवार रे ॥ शी० ॥ ११ ॥

॥ जीव रे तु शील तणो कर संग ए देशी ॥

॥ वामानंदा राख हमारी लाज प्रभु मोरा राख हमारी लाज ॥ टेर ॥ मेंगरजी अरजी करु रे सांभ लगरी बन वाज ॥ वा० ॥ १ ॥ देव घणांई देखिया रे किणथी नस रे काज वांछित पूरण तुं मिल्यो रे जगतारण जिनराज ॥ वा० ॥ २ ॥ काल अनंते हूं भम्यो रे चतुर गतीके मांहि ॥ कुगुरु तणां उप देशथी रे तुं धार्यो मन नाहि ॥ वा० ॥ ३ ॥ पूरव पुन्ये तुं मिल्यो रे सव देवनको देव ॥ कोड चतुर विध देवता रे सारे नित प्रति सेव ॥ वा० ॥ ४ ॥ पारस पारस नामथी रे काया कंचन थाय ॥ कनक हुवे जिम लोहनो रे पारसनो संग पाय ॥ वा० ॥५॥ त्रिभुवन केरो राजवी रे अश्वसेन कुलचंद ॥ शरणे आयो ताहिरे रे टालो मुज दुख दंद ॥ वा० ॥६॥ करुणासागर साहिवा रे जगत वछल प्रभु पास ॥ सेवक निज सो जाणने रे पूरो मन तणी आस ॥वा० ॥७॥ चोरासी लख जोनमे रे भव भ्रमणां मे कीध ॥ किसन कहे कर जोडने रे अव तुम शरणो लीध

॥ दोहा ॥

दया धरम प्रभु दाखियो जग जाहर जगवीच ॥
किसनलाल सांची कहें नहि माने सोनीच ॥ १ ॥

॥ सहेल्या ए आवो मोरियो ए देशी ॥

॥ जीव दया दिल धार ज्यो ॥ टेर ॥ दया पा ल्यां हो दुख जावे दूरके मुगत हुवे घर आंगणो वली पामे हो लिछमी भरपूरके ॥ जी० ॥ १ ॥ जीव दया रे कारणे रहनेमी हो छोडी राजुल नारके ॥ संजमले मुगते गया उत्रा धयनमे हो भाष्यो अधि कारके ॥ जी० ॥ २ ॥ धरम रुची दया कारणे मुनि कीधो हो कडवा तुं वानो अहारके ॥ सर्वार्थ सिध जाय ऊपना प्रभु भाष्यो हो ज्ञातामे विसतारके ॥ ॥ जी० ॥ ३ ॥ सोमल खीरा शिर धस्या दया पाली हो मुनि गज सुख मालके ॥ केवल ले मुगते गया अंत गढमें हो भाष्यो दीन दयालके ॥ जी० ॥ ४ ॥ मेघ कंवर सुसल्या तणी दया पाली हो गजके भव जाणके ॥ श्रेणक घर आय अवतस्यो दीक्षा लेने हो गयो विजय विमाणके ॥ जी० ॥ ५ ॥ षोडशमां तीरथं करू पारेवानी-हो जिण टाली घातके ॥ मां स काट दीधो आपणो शान्ति चरितमें हो छेया व

हुली वातके ॥ जी० ॥ ६ ॥ मेतारज दया कारणे न
हि लीधो हो कुर कटको नामके ॥ जव कारण
सोनी डुख दीयो केवल पाम्या हो मुनिवर तिण
ठामके ॥ जी० ॥ ७ ॥ एम अनेक तिस्या घणां पूर
ण कहि तांहो किम आवे पारके ॥ इह पर जव व
हु सुख मिले दया पाल्यां हो हुवे जय जयकारके
॥ जी० ॥ ८ ॥ समत अधयन ज्ञाता तणा वरस जा
ष्यो हो राग रागणी सारके ॥ द्वितीय ज्येष्ठ वदि
पंचमी बुधवारे हो जोडी ढाल मुरारके ॥ जी० ॥ए॥

॥ ख्याली लाल जलजर ल्याइ क्रमा कर्मो रे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ जवि जीवा चंचल सुर धनुनीपरे रे तन धन
संपद राज जवि जीवा अनित्य पणो इम जावतां रे
पामे सुख सिरताज ॥ ज० ॥ १ ॥ इम सुध जावना
जाव जोरे सतगुरु देवे उपदेश ॥ आंकडी ॥ ज० ॥
मात पिता सुत सोदरा रे राजरयण मणि हेम ॥
॥ ज० ॥ शरण न होवेको इहां रे अशरन जावना
एम ॥ ज० ॥ इम० ॥ २ ॥ ज० ॥ सुरनर तिरी तिम
नारकी रे निरधन सधन सरूप ॥ ज० ॥ जव जम
ता हुवे प्राणिया रे ए संसार सरूप ॥ ज० ।

॥ ३ ॥ज०॥ रोग जरावलि मरणना रे जनम जवांतर जाण ॥ ज० ॥ सुख ङुःख एक लसोसहे रे इम एकत्व प्रमाण ॥ ज०॥ इम० ॥ ४ ॥ ज०॥ पुदगल जड परिणाम ठे रे आतम चेतन चंग ॥ ज० ॥ पुदगल प्रेम निवारिये रे अन्यपणे धरि रंग ॥ ज० ॥ इम० ॥ ५ ॥ ज० जाजन मूत्र पुरीषनो रे अशुचि रूपनो देह ॥ ज० ॥ सूं शुचि कारण काहला रे अशुचिपणो इम एह ॥ ज०॥ इम० ॥ ६ ॥ ज०॥ नीरतणीपरे नित श्रवे रे आश्रवयोगे कर्म्म ॥ ज० ॥ तेम कषाय क्रिया थकी रे आश्रव जावना मर्म्म ॥ ज० ॥ इम० ॥ ७ ॥ ज० ॥ समिति परिसह[२२] जावना[१२]रे साधू धर्म्म[१०] चरित्र[५] ॥ ज० ॥ करम आगमनो रोकवो[३]रे संवर एह पवित्र ॥ ज० ॥ इम० ॥ ८ ॥ ज०॥ तप वारे जेदे करी रे मूलथी करमनो नास ॥ ज० ॥ एह निर जरा जावसूं रे अजर अमर सुख वास ॥ ज० ॥ इम० ॥ ॥ ए ॥ ज०॥ धन जे संवेगे जस्या रे ठाकि सहु प्रतिवंध ॥ ज० ॥ साधु धरम सांचो धरे रे तप संजम सुप्रवंध ॥ ज० ॥ इम० ॥ १० ॥ ज०॥ लोक नराकृत जाणिये रे पूरण ङव्य संसार ॥ ज० ॥ जनम मर

॥ ११ ॥ न० नव नव नमता जीवने रे डुल हो श्री जिन धर्म्म ॥ न० ॥ हिवका उद्यम आदरी रे आराधो शिव शर्म्म ॥ न० ॥ इम० ॥ १२ ॥ न० नरत प्रमुख जे प्राणिया रे पाम्या शिवपुर ठाम ॥ न० ॥ ते नावनपर नावथी रे नाव धरम सुख धाम ॥ न० ॥ इम० ॥ १३ ॥ गिरवा गुरुनंद रामजी रे किसन चरनको दास ॥ न० ॥ सत उगणीस चमालीसो रे अजिया पुर चौमास ॥ न० ॥ इम० ॥१४॥

॥ वेदिन तुं नूलो राज नूलो ॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत करलो रे प्यारा मति हारो एल जमारा ॥ सु० ॥ टेर ॥ झूंटा तन धन झूंटा जोवन झूंटा जगत पसारा ॥ झूंटा जीतव कारण तुं मति बांध पापरा नारा ॥ सु० ॥ १ ॥ सच्चा जिन मत सच्चा आगम सच्चा ही अणगारा ॥ सच्चा धरम अहिंसा लक्षण काटण करम कुठारा ॥ सु० ॥ २ ॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव अन्त समय नहि थारा ॥ काल रिपूगल आनग्र हे जब कोइय न राखन हारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्न अंणीपर उंसविंडुवा अथवा राग संध्यारा ॥ काया माया वादल ठाया वीजलिका चकारा ॥ सु० ॥ ४ ॥ नर जोवनमें विषय निजर न

र मतनिरखो परदारा ॥ काम भोग हैं सहत विन्दु वो जहर हलाहल खारा ॥ सु० ॥ ५ ॥ मोह जाल में फसिया प्राणी सेवे पाप अठारा ॥ ज्ञान दृष्टि दे सो वसयानां धाय पूत जिम न्यारा ॥ सु० ॥ ६ ॥ अतीचार रहित सुधपालो श्रावकनां व्रत वारा ॥ किसन कहे जिन धरम अराधो मेटो भरम अंधारा ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ मुक्तिनि सरणी ॥ दोहा ॥

॥ प्रथम भव्य भव थिति घटे प्रगट शुभोदय होत ॥ तव चेतनकूं चेतना जाके सुमति सुजोत ॥ ॥ १ ॥ सुरुचि भाव थिरता वढे चढे चतुर गुण थान ॥ करे अनादि मिथ्यातको नाश सकल तम भान ॥ २ ॥ भेदे गांठ मिथ्यातकी तीने करन वखान॥ उपशम रस चाखे तहां महुरत एक प्रमान ॥ ३ ॥ गिरे जो उपशम फरसके सादि मिथ्याती सोय ॥ सास्वा दानको स्वादले अरध पुदगली होय ॥ ४ ॥ सादि मिथ्यात संजोगता उपशम समकित नाम ॥ तीजे गुण ठाणे गुणि मिश्र भाव परिणाम ॥ ५ ॥ चौथे गुण स्थानक विषे सुध सरधा परवीन ॥ सत समता समकित गहे रहे राम गुण लीन ॥ ६ ॥

उपशम खायक खयोपशम वेदक बहु विस्तार ॥
अब पंचम गुण स्थानकी रचना सुण सुविचार ॥७॥

॥ चौपाई ॥

॥ देव धरम गुरु सरधा साची सत्य स्वरूप जि
ना गमजाची ॥ संशय मोह भरम तज दीना पर
मारथका मारगचीना ॥ ८ ॥ नव तत्त्व बोल यथा
रथ धारे साज संवारे नेम विचारे ॥ अतीचार स
मकितके टारे देश विरत द्वादश व्रत पाले ॥ ए ॥
एकादश ही प्रतिमा कारी उत्तम किरिया मिश्र
व्यो हारी ॥ वरजे करमा दान विख्याता गुण इग
वीस धरे लघु ज्ञाता ॥ १० ॥ सांचो दया धरमको
रागी भूल भरमको है परित्यागी ॥ भागी कुमति
कला भव भरणी करे मनोरथ मोटी करणी ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ चठे गुण स्थानक विषे परमादी मुनिराय ॥
थिवर कलप जिन कलपकी वात कहुं विगताय॥१२॥

॥ चौपाई ॥

॥जिन कलपी नाही न परमादी एकाकी मौनी
मरयादी ॥ नगन दिगंबर है वनवासी ध्यान धरे
आतम अविनाशी ॥ १३ ॥ जोग निरूढे ज

सी आशा दासी तजी उदासी ॥ जोगासन जोगे सर करता ध्यानासन धीरजके धरता ॥ १४ ॥ जोगी जोग जुगतको तोले नद्य जुगतिकूं पर घर डोले ॥ सत संगी सेली गुरु शिक्षा दोय कर खप्पर जाचे निक्षा ॥ १५ ॥ शुन गुण संग्रह जटा जुगोटा शील शरमका कसे लंगोटा ॥ कपट नाश कक्कण कर सोहे मौन तणी मुद्रा मन मोहे ॥ १६ ॥ समता जोगनि संग सुहावे सुमति सुधारस नांग चढावे ॥ निश दिन करुणा वीण वजावे सुध सुनाव यह ताल लगावे ॥ १७ ॥ नारी कंथा धीरज धारे वर विवेक वागम्बर मारे ॥ क्षमामडी अडिग है थूणी ज्ञान गुफारु ध्यानकी धूणी ॥ १८ ॥ सुरति सुरंगी सेज समारे मन थिरता आराम विचारे ॥ किसन कहे धनसो दिन थावे इसा मुनीकोदरसन पावे १९

॥ दोहा ॥

॥ जिन कलपी जोगी जती निपट निरागी होय॥थिवर कलप धर संजती कहुक सरागी सोय २०

॥ चौपाई ॥

॥ थिवर कल्प मुनि देश प्रमादी ये दोनु विवहार अनादी ॥ वैत सत्रासे कथा सनावे शिष शाखा

परिवार वढावे ॥ २१॥ धरमो पगरण चउदे धारे म
मता विन विचरे वसुधारे ॥ अव सुण धरम ध्यान
की थिरता जिण करणी कर मुनि जवतिरता ॥२२॥
आतम ज्ञान विवेक विचारे राग द्वेषकी व्यथा वि
फारे ॥ आरत रौद्र न सोगन संगा शात्रव मित्र स
मान सुचंगा ॥ २३ ॥ देव निरंजन जोताकारा गुरु
निरमोही विगत विकारा ॥ जाचो जीवदयाको दा
नी सत्य वचन अरु मीठी वाणी ॥ २४ ॥ क्रोध जु
जंगम निर विपकीना उपशम आण अमी रसपीना
॥ मान महागिरि मेरु गिरायो माया ममता खोज
गमायो ॥ २५ ॥ लोज जहरकी लहर मिटाई विक
था वैर विरोध वफाई ॥ इन्द्री पाचदमे फुख दाता
वमन त्रिषय रस रूपनराता ॥ २६ ॥ कुलाचारकी
चालन चाले मधुरीगति मे गल ज्युं माले ॥ जूमि
विलाक पूज पग धारे सवकूं आप समान विचारे ॥
॥ २७ ॥ साप सिंह व्यन्तर जय नाणे लाजा लाज
न वात वखाणे ॥ निंदा पूजा समकर जाणे जस की
रतकूं नाहि पिठाणे ॥ २८ ॥ शीत उपन वारू वर
साले उपसर्गतीनू सहे तिहु काले ॥ अलप अहा

१ 'देव मनुष्यतिर्यंचका.

री आपा मारे करा मातकी वात निवारे ॥ २९ ॥ रवि शशि व्योम विहंगम गिरिवर खरूगी शङ्ख क मल कछु सरवरं ॥ अहि चंदन मधुकर मलयागिर कनक हंस ज्वाला रतनागर ॥ ३० ॥ भूंदगपवन भूत सम कहिये सिंह वृषभ गयंवर गुण गहिये ॥ शूर सुभट अरिसे नहि भाजे गुण अनन्त यह उ पमा छाजे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सतम अठम गुण थानके नही प्रमाद अनि मेष ॥ उपशम होय कषाय सव निरमल ध्यान वि शेष ॥ ३२ ॥ नोकषाय नवमें खपें दशमें लोभ ख पाय ॥ उपशान्त मोह इग्यारमें खीण वारमें जाय ॥ ३३ ॥ प्रथम चोकडी उपशमे पीछे मोहनी तीन ॥ नपुंसक नारनो पट हासादिक हीन ॥ ३४ ॥ क्रोधत्रिक मान तणो त्रिक जाण ॥ अरु लोभ त्रिक उपशम श्रेण पिछाण ॥ अनुतानकी चोकडी तीन मोहनी मार ॥ रूडी हूरकर वेद नपुंसक नार ॥ ३६ ॥ पट ॥ थिवरत्य करे पुरुष वेद कर खीण ॥ खय क र अनादी ॥ केकी खिपक श्रेण लय लीण ॥ ३७ ॥

खिपक श्रेण मुनि जो चढे ताको यह विवहार ॥ उ
पशम श्रेण दशा गिरण एकादश अवधार ॥ ३८ ॥
दशमे गुण थानक विषे चोथो चारित थाय ॥ यथा
ख्यात इग्यारमें कलपातीत कहाय ॥ ३९ ॥ शुकल
ध्यान कर खय करे करम घातिया चूर ॥ उपजे के
वल तेरमें होय पटल सब दूर ॥ ४० ॥

॥ चौपाई ॥

॥ प्रगटे जोति उद्योत प्रकासा सुरनर आय होत
सब दासा ॥ देखे लोका लोक बखाणे स्वरग मिरत
पाताल प्रमाणे ॥ ४१ ॥ सबके भाव गतागति जाणे
भव्य जीव संशय नहि आणे ॥ मनकी बात गुपत
नहि छानी जो जाणे सो केवल ज्ञानी ॥ ४२ ॥ चढे
चउदमें होय अजोगी सिद्ध आठ गुण सहित पयो
गी ॥ पेतालीस लक्ष परमाना जो जन च्यार कोश
का जाना ॥ ४३ ॥ च्यार वीसमें भाग उजासा ज
हां जोति स्वरूपका वासा ॥ जगत सीसपें जाय वि
राजे सेवक स्वाम समान सदा जे ॥ ४४ ॥ चिहुं
गति आवा गमन मिटावे फिर उवेगरभा वासन
आवे ॥ डुख सुख करता करे न करमी कहेजु एसे
महा अधरमी ॥ ४५ ॥ केउ कहे जो जन हे मोटा

च्यार कोशका जो जन ढोटा ॥ तिणसूं वात मिले नहि सारी समझ विचार कहो विसतारी ॥ ४६ ॥ च्यार हजार कोशका लीजे तो विधि मिले सुरति सुध कीजे ॥ एह विवरो वहु सुरति जाने साच झूंठ पंडित पहिचाने ॥ ४७ ॥ तीन भुवन भाष्या है ना णी तिण माहे पांचू गति आणी ॥ में आगम दे ख्या गुरु वाणी तिण अनुसारे मुगति वखाणी॥४८॥ जो जन तीन तीन पल सागर आंगुल तीन तीन गुण आगर ॥ वस्तु विमाण जमी मापीजे तनको मान वरत तिहु लीजे ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ च्यार कोश अरु च्यारसे च्यार हजार विचार ॥ दुगुणा जो जन देवका मनको भरम निवार ॥ ॥ ५० ॥ मुगति होय सव करमसूं जीव मुगति में जाय ॥ राग द्वेष मोह जालमें फस्यो मुगति किम थाय ॥ ५१ ॥ जगमें फिरत अनादिको पुन्य पाप की दोर ॥ राजा रंक कहायके ऊच नीच भ्रम जोर ॥ ५२ ॥ लख स्वरूप जाज्ञाजिके मिथ्या मतिको खोय ॥ तिण पाम्या सुख सासता सुजस सदा थिर होय ॥ ५३ ॥ यह दिन दशकी साहिवी मत कोइ

करो गुमान ॥ अन्त कालका गालमें राजा रंक स
मान ॥ ५४ ॥ कुण कुण जगमें होय गया भूमि प
ति नृप जोय ॥ ममता कर कर मर गये नाम ठाम
नहि कोय ॥ ५५ ॥ स्वमति परमति परम मतिकहुं
कथा लवलेश ॥ भव्य सुणो चित लायके कहे कि
सन उपदेश ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

॥ नाभि घरे अवतार जुलीना जुगल्या धरम नि
वारजु कीनां ॥ राज नीति धर्म नीति प्रकासी राम
रहीम रटे जगवासी ॥ ५७ ॥ आदिनाथ आदिम
कहि लावे महादेव ब्रह्मा वतलावे ॥ विष्णु नाम गुण
कहे उनीकूं मति विरोध है मूढ दुनीकूं ॥ ५८ ॥ ऋ
षभ आदि अवतार सुज्ञानी ताकी यह सब सृष्टि
कहानी ॥ आगम वेद पुराण कुराणा सब जग री
त व्योहार वखाणा ॥ ५९ ॥ तज पर संग भयो पर
मेसर साचो जैनजति जोगेस्वर ॥ तप सुभाव मोन
व्रत लीना शुक्ल सुध्यान करम खयकीना ॥ ६० ॥
केवल ज्ञान परम पद पाया इन्द्रादिक सबही मिल
आया ॥ समोसरणकी रचना कीनी दिव्य धुन्न देश
ना दीनी ॥ ६१ ॥ सुगति गमनको पंथ बतायो

देख्या केवल पद पायो ॥ जे जे शवद करे आकाशे
केवल महिमासुर परकाशे ॥ ६२ ॥ चौवीसे अवता
र कहाणा सवकी महिमा एक समाना ॥ अतिशय
वाणी गुण कर सोहे त्रिगडो देख नविक मनमोहे
॥ ६३ ॥ ऋषन पुत्र नरतेसर राजा ढहुं खण्डमें आ
ण अवाजा ॥ सवा कोड सुत जाके जाए जैन वि
ना कहुं नाम न पाये ॥ ६४ ॥ वाहूवल वलवन्त
वदीतो चकर वरतसेती जुद जीतो ॥ तीन लाख सुत
ज्ञान गिणाए वेद व्यास कबु नाहि सुनाए ॥ ६५ ॥
राजा सेव करे कर जोडी सहस बतीस मद मछर
मोडी ॥ सगरराय सुत साठ हजारा सवको काल
नयो समकारा ॥ ६६ ॥ इन्द्र अवधि करि रूप व
ख्याण्यो सनत कुमार गरव मन आण्यो ॥ तनकूं रो
ग व्यथा जव जागी ढहुं खण्डकी ममता त्यागी ॥
॥ ६७ ॥ ब्रह्मदत्त संनूत चकेसर इन्द्र लोक जिम
जाण सकेसर ॥ राजऋद्धि रमणीके रागी दोनुंनर
क गये निरनागी ॥ ६८ ॥ दशरथ राजा जोग कमा
यो नरत रामको नक्त कहायो ॥ कहां राम लिछम
नकी जोडी महा वली जिण लंका तोडी ॥ ६९ ॥
कहां लंकपति राज करन्ता इन्द्रजीतसे सुत वलव

न्ता ॥ इक लख पूत सवा लख न्याती तिण रावण घर दियो न वाती ॥ ७० ॥ राय विभीषण धरमि सुन्याई लग्यो रामके चरने आई ॥ कुंभकरनकी रही न काई खरदूषणसे गए विलाई ॥ ७१ ॥ मेहदमेघ अंगद मयमन्ता पवनरायपूत हणमंता ॥ भामण्डल सुग्रीव विराजा वडे वडे विद्याधर राजा ॥ ७२ ॥ कहां भवे जादव जोरवहन्ता संवप्रजुन कुंमर दुरदन्ता॥ कहां द्वारापुरकी ठकुराई कहां बलभद्र कनैया भाई ॥ ७३ ॥ दुरजोधन राजा अभिमानी पांडव पांचे वडे सुज्ञानी ॥ केरु दल दरियाव हटाया जंगजीत फिर मुगतसिधाया ॥ ७४ ॥ रामायण भारत बहुराया शिशूपाल बलभद्र खपाया ॥ कीचक दाणू भीमगिराए जरासिंध जोधा जम खाए ॥७५॥ भीषम काल जमनजसजाया नव नारद का नाम न आया ॥ परसराम बल अनमीराया राय परीछित परस कहाया ॥ ७६ ॥ करकंडूनमी निगई गाया जय राजा एह मुगति सिधाया ॥ रायदसारण गरभमे आयो तिण सकेंदर पाय लगायो ॥ ७७ ॥ संशय शङ्ख प्रदेशीपाया पुंडरीक इषुकारकहाया ॥ जित शत्रु पृथ्वी रूपी राजा वज्रजंघ व सुभि चंदवाजा

॥ ७७ ॥ चंड प्रद्योत न राय उदाई श्रेणकनृपचे
ला वरदाई ॥ जनक कनक मधुकीटक जाई नर
वाहन नल कूंवरराई ॥ ७ए ॥ दधिवाहन कहां राय
संतानी विक्रमराय करनसेदानी ॥ अजय कुमार म
हाबुधवंतो जंबू सालजद्र धनवंतो ॥७०॥ कहां उवे
ब्रह्मा वेद अनंता कहां उवे शंकर गंगधरन्ता ॥ कहां
उवे मांनु मूंजनवनंदा जोज जरत कहां गोपीचंदा
॥७१॥ हिंदूमूसलमान हि मराये केइ उत्रपति गरद
मिलाये ॥ कालवली सबकी सुधिखोई राजा रंक बचे
नहि कोई ॥ ७२ ॥ केते नाम कहांलूं वरणो ध
रमविना जगमांहिन शरणो ॥ धरमध्यानके मारग
लागा ताकूं अजर अमरकी जागा ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

केई कोमराजाजए केई कोरू अवतार ॥ केई सुब
दाता जये केई सेठ सिरदार ॥७४॥ गुणथांनक रचनां
करी किसनलाल अजिराम ॥ श्रीगुरुनंदप्रसादथी
सिद्धहोत सवकाम ॥ ७५ ॥ इतिमुगतिनिरसणिः ॥

॥ देशी निहालदेकी ॥

परम रिपू इण लोकमें जी कांइ मोहनिकरमनि
दान ॥ सुरनरतिरि पसु पंखियाजी काइ इणसवकिया

हांजी कांइ इण सवकिया हेरान ॥ १ ॥ जगमे डु रजय करमयो मोहनीजी ॥ आंकनी ॥ डुरजय कर मयो मोहनीजी कांइ विजयकरे जविकोय ॥ इंणव सपम्थिया प्राणियांजी कांई मदठकियाजिम होय ॥ जग० ॥ २ ॥ सकल संसारी जीवमाजी कांइ ज कम्यामोह जंजीर ॥ गुणस्थानक इग्यारमेजी कांइ जाय पहुतो यो वीर ॥ जग० ॥ ३ ॥ प्रकृति अग वीस एहनी जी कांइ जापी सिरि जिनजांन ॥ सि त्तर कोमाकोमनीजी कांइ उतकृष्टी स्थिति मान ॥ जग० ॥ ४ ॥ सुंनकांनो कृश पांगुलो जी कांइ क रण पूंठकरहीन ॥ व्रणी कृमी पूतिवेहालमे जी का इ सुनी पेखत हुवेलीन ॥ जग० ॥ ५ ॥ कंथवियो गा कामनी जी कांइ जीवत हीं जरजाय ॥ हरिसन मुख करसींगमाजी कांइ प्राणगमावेगाय ॥ जग० ॥ ६ ॥ शचीपति शचिपाये पडी जी कांइ ललित व चन कहे एम ॥ आशपूरो निजदासनी जी कांइ अवमोसूं करो प्रेम ॥ जग० ॥ ७ ॥ चरम शरीरी जीवडाजी कांइ इंणवस पम्थिया आय ॥ जुगती कर म जोगावली जी कांइ सिद्धाकरम खपाय ॥ जग०

---

१ 'इन्द्र,' २ 'इन्द्राणी,

॥ ८ ॥ गोयमगणधर गुणनिलोजी कांइ ज्येष्ट शिष्य सुवनीत ॥ वीरछतां नहिपामियो जी कांइ केवल ज्ञान पवित ॥ जग० ॥ ए ॥ राजुल देखी मोहियो जी कांइ रहनेमी अणगार ॥ भ्रष्टकियो नंदीसेणने जी कांइ अरणक आर्द्रकुवार ॥ जग० ॥ १० ॥ संभू तवंधव चित तणो जी कांइ कुंडरीक हुवोखवार ॥ सेठ माकंन्दिनो मीकरोजी कांइ जिन रखलीनोमार ॥ जग० ॥ ११ ॥ अषाढभूति अणगारने जी कांइ मोहनी दियोधकाय ॥ जोगतजीने भोग आदर्योजी कांइ घरनटवाके जाय ॥ जग० ॥ १२ ॥ इत्यादिकवहुजीवने जी कांइ मोहनी किया फजीत ॥ धन मुनिवर संसारमेंजी कांइ मोह करम लियो जीत ॥ जग० ॥१३॥ विगत मोह सुख सासताजी कांइ पांमे शिवपदखेम ॥ छूटे भवदुःख फंदसे जी कांइ किसनलाल कहे एम ॥ जग० ॥ १४ ॥

॥ आज हिंदवाणी सूरजऊगियो ए दे० ॥

ऋषभ अजित संभवनमूं अभीनंदन सुमती देव जिनंदमोराहो ॥ पदमसुपारसनाथजी नमो चन्द्रप्रभू नितमेव ॥१॥ जिनंदमो राहो वीनतमी अवधारज्यो ॥ आंकडी ॥ सुविधिशीतल श्री श्रेयांस जी वंदू वासुपूज

जिनराय जि० ॥ विमल अनन्त धर्म शान्ति जी सिद्ध हुवा करमखपाय ॥ जि० वी०॥२॥ कुंथु अरे ह म ल्लिनाथजी मुनिसुव्रत नमूं जगतात जि०॥ नमियनाथ रठनेमजी पारस वीर विख्यात ॥ जि० वी० ॥ ३ ॥ इंण चौवीसासूभाहिरो पूरण भागे छेप्रेम जि० ॥ अवर देव जाचण तणो मुजमन करने नेम ॥ जि० वी० ॥ ४ ॥ म्हारोमन जिनराजसूं लागरह्यो उत कृष्ट जि० ॥ आयसकूं नहीं स्वामिजी पिणसरधाठे म्हारी पुष्ट ॥ जि० वी० ॥ ५ ॥ जिणदिन नयणे नि रख स्युं पूरस्युं मनभाराकोड जि० ॥ जनम सफल जदजांणस्युं किसन कहे करजोड ॥ जि० वी० ॥६॥

॥ रुकमणकी लाज राखो ए दे० ॥

यांही रहो नेमरसियारे तुमयांहीर० तेरेचरन कमल मन वसियारे तु०॥ आंकणी ॥ सब जादवमि लव्याहन आये इन्द्र देख मन हंसियारे ॥ तुम० ॥ ॥ १ ॥ राजुलसखिया जान विलोकी रोमरोमहुलसि यारे ॥ तुम० ॥ २ ॥ पशुवनकेशिरदोषदिया प्रभु त ज राजुलवनवसियारे ॥ तुम० ॥ ३ ॥ संजमले प्रभु मुगत सिधाया अष्टकरम दलघसियारे ॥ तुम० ॥४॥

किसन कहे प्रभुध्यानधरू तेरा जिम चकोरखगससि
यारे ॥ तुम० ॥ ५ ॥

सुंनेभावे गुलावी केवमो म्हारो देवरियो नादान
उतारो वेवडो ए दे० ॥

समदृष्टी भविजीवने मुनिवर भाषे एम ॥ घुरे
नगारा कालतणां शिर गाफलवैठो केम ॥ १ ॥ सुज्ञा
नी चेतरे कछु करले सुकृत छोड कुटंवकोहेतरे निज
तत्व पिछाणो खोलहियारोनेतरे इम परउपगारी स
तगुरु हेलादेतरे ॥ आंकणी ॥ पण अतिचार निवा
रने समकित सेठीधार ॥ देवनिरागी गुरुनिरलोभी
धरमदयामे सार ॥ सु० ॥ २ ॥ नरभव पायो नीठ सें
सोविरथा मतिहार ॥ आश्रवलोभ दंभपरि हरि
ये करिये पर उपगार ॥ सु० ॥ ३ ॥ लख चौरासी
जोनमे भमियो काल अनाद ॥ जपतप संजम खम
समदमकर छोड सकल परमाद ॥ सु० ॥४ ॥ हटवा
को मेला जिसो मिलियो सहु परिवार ॥ सव संसार
अथिर जिन भाषो निश्चल धरम उदार ॥ सु० ॥५॥
तन धन जोवन कारमो संध्याराग समान ॥ चंचल
आयु वेगनदीको अथवा चलदल पान ॥ सु० ॥६॥
करमविपाक उदय हुवा भुगते आपो आप ॥ पुदगल

सुखमे लीन हुवो तू मतकर जाभापाप ॥सु०॥७॥ मात पिता सुत भामनी संगन चाले आथ ॥ दानशील तप भावरूपिया संबल लेलो साथ ॥ सु० ॥ ८ ॥ परिग्रह ममता छोडने सुधराखो परिणाम ॥ किसन लाल कहे स्वर्गमुगतका सुखपासी अभिराम सु०॥९॥

॥ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ए दे० ॥

मनां तोने केईवार समझायो तोने अज हू ज्ञान नहि आयो ॥ आंकडी ॥ कवहुक ज्ञानी कवहुक ध्यानी कवहुक मांनी सवायो ॥ कवहुक जोगी कवहुक भोगी कवहुक रंकरु रायो ॥ मनां० ॥ १ ॥ कवहु आकाशमें कवहु पातालमें कवहुक तिरछो पलायो ॥ जल थल वसती उजाड पहाडमे निशदिन भ्रमण करायो॥मनां० ॥ २ ॥ सुंदर काममेविघन करे तू विगथामे काल गमायो ॥ अंकुशविन गजराजवण्यो तूं आपूं ही मद मांहिछायो ॥ मनां० ॥ ३ ॥ वाजी कुरंगपतंगसमीर[1] थी शीघ्रगती सुरथायो ॥ तिणसूं हित्वरितगती परमां णूं तुजगति पारनपायो ॥ मनां० ॥४॥ उदधि तरंग ज्युं चंचल मरकट[2] छेरु कियां दुखदायो ॥ सरपकी पूंछपें

१ 'घोडासे हिरणसे पतंग पवन देवतासे परमाणुसेभी शीघ्र गति, २ वानरो वाय भर्‍यो इत्यादि,

पांव दियोमांनु सूतोही सिंहजगायो ॥ मनां० ॥५॥ लिं ग नपुंसक नाम धरावे तू मरदामें मरद सवायो ॥ ग मनकरें पग पंख विना किम यह मोने इचरज आयो ॥ मनां० ॥ ६ ॥ सुमति सखी थारे दायन आवे कु मति दियो जरमायो ॥ मिलकर चालीससेरेंवएयो तूं शंकनमांनत कायो ॥ मनां० ॥७॥ निरलज चोर क ठोर महाठग डुष्ट मती दरसायो ॥ तंडुल मांठलो तुज परसादे सातमी नरक पठायो ॥ मनां० ॥ ८ ॥ मरुदेविमाता जरत नरेश्वर प्रसनचन्द्र कृपिरायो ॥ होय सखा ऐसी मदत करेतो शिवपदल्यूं ठिनमायो ॥ मनां० ॥९॥ एगे जिया पंण पंचाजया दस पुन सव शत्रू जितायो ॥ धन्यनराते वसकर तुजने जीत नि साणघुरायो मनां० ॥१०॥ तजकर कुन्द गुलाव चमेली वांवल कुसुमे लुजायो ॥ किसनलाल कहे सुंणमनस धुकर शिर मूंड्यो तू मुंडायो ॥ मनां० ॥ ११ ॥

॥ गरवाकी देशी गुजरातीमें ॥

॥ हारें जीवा आगम ज्ञान कह्या नव पूरव जैन मेरे लोल ॥ हारे० ॥ आगमीक नव ऊपर पंच सुवे

१ '४० सेरोंका १ मन,
२ ' तेणपरंभिन्ने सुत्रयणा, इति नंदीसूत्रे, ३ 'संपूर्ण ज्ञान,

नमें रे लोल ॥ १ ॥ हांरे० ॥ ब्रह्मज्ञान दरम्यान सु
रत आतम सही रे लोल ॥ हांरे० ॥ जामें शुद्ध उ
पयोग दशा ऐसी कही रे लोल ॥ २ ॥ हांरे० ॥
उदासीन जग मांहि रहे वैरागमें रे लोल ॥ हांरे०
जोग मिले कब आय करूं घर त्यागमें रे लोल ॥
॥ ३ ॥ हांरे० ॥ जाती समरण होय संनी नवी जी
वकूं रे लोल ॥ हांरे० ॥ पूरव नव विस्तार लखे सु
ध पीवकूं रे लोल ॥ ४ ॥ हांरे० ॥ सहज नाव उप
देश निमित सूं संपजे रे लोल ॥ हांरे० ॥ मतिमें
आतमज्ञान मिथ्या मतिकूं तजे रे लोल ॥ ५ ॥
हांरे० ॥ अवधि ज्ञान मरयादा है गती च्यारकी रे
लोल ॥ हांरे० ॥ मनुष्य तथा तिरयंच देवता नार
की रे लोल ॥ ६ ॥ हांरे० ॥ घटे वढे थिर रहे ठऊं
परकार हे रे लोल ॥ हांरे० ॥ ए पण आतम ज्ञान
विवेक विचार हे रे लोल ॥ ७ ॥ हांरे० ॥ मन पर
यव परिमाणसूं लक्ष पेतालसो रे लोल ॥ हांरे० ॥
मुनि महात गणधार लखे सुविशाल सोरे लोल ॥
॥ ८ ॥ हांरे० ॥ जाणे मनकी वात मनुष्य तिरयंच
की रे लोल ॥ हांरे० ॥ इणकूं आतमज्ञान कह्यो
सुख संचकी रे लोल ॥ ए ॥ हांरे० ॥ केवल ज्ञान

समान जान नहि खलकमें रे लोल ॥ हरि० ॥ सब ब्रह्मांड विचार लखे सहु पलकमें रे लोल ॥ १० ॥ हरि० ॥ संपूरण परकाश आगमगमकूं लखे रे लोल ॥ हरि० ॥ ऐसो आतमज्ञान किसन आखे अखे रे लोल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगम ज्ञानी है नहीं नहीं आगमिक आज॥ आगम है सो अल्प है समझ सुधारो काज॥१॥२०

॥ नीवडलीरा लावातीखा पान कुण रे संतावे हरिया रूखनेजी म्हाराराज ॥ ए देशी ॥

॥ सतगुरुजी परम दयाल विचरत आया जवि ज न तारवाजी मुनिराज ॥ फलिया मनोरथ माल जले ही पधास्या जनम सुधारवाजी मुनि० ॥ १ ॥ धन घडी धन म्हारा जाग धनरो दिहाडो म्हारे आ जरोजी मुनि० ॥ हिये हुवो हरष अथाग दरसण पायो धरमरी जहाजरोजी मुनि० ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी विचारा जंसार तपोधन जूमी जिम जारी खमाजी मुनि० ॥ जागी घटमें वढ़ी च्यार प्रकार पाखंडी के

१ 'उत्पात विनय क्रम अवस्थाको प्राप्त हुवो, २ 'हाती,

रि मद गालण हरी समांजी मुनि० ॥ ३ ॥ वाणी थारी पीयूंष समान भविक जीवाने लागे सुहावणी जी मुनि० ॥ विधियुत वा चोथे वखान भिन भिंन करके समझावणीजी मुनि० ॥४॥ दशविध यती धरम धार सतावीस गुणाकरने दीपताजी मुनि० ॥ शुध पालो अखंड आचार निश दिन मन इंद्रयां जीप ताजी मुनि० ॥ ५ ॥ सिंधु जिम गुणारा गंभीर फ टिक रतन जिम निरमल हियोजी मुनि० ॥ संजम में मेरू जिम धीर सकल जीवाने अभयथे दियोजी मुनि० ॥ ६ ॥ शिषथारा मुगतारीमाल विनेवंत आ ज्ञाकारी आपराजी मुनि० ॥ जग सहु जाण्यो भ्रम जाल ततखिण छोड्या मारग पापराजी मुनि० ॥७॥ सुमति गुपति सूं पूरण प्रेम नरभव पामी सफलोथे करोजी मुनि० ॥ तपजोथे दिनमणी जेम ज्ञानादी वट शाखा जिम विस्तरोजी मुनि० ॥ ८ ॥ दीपावो जिन धरम रसाल जंगम तीरथ भवि मन भायणा जी मुनि० ॥ थोडासा गुण गाया किसन लाल गुणि जन मन भाया शिव सुख दायणाजी मुनि० ॥ ९ ॥

---

१ 'अमृत,

समान ज्ञान नहि खलकमें रे लोल ॥ हांरे० ॥ सब ब्रह्मांड विचार लखे सहु पलकमें रे लोल ॥ १० ॥ हांरे० ॥ संपूरण परकाश आगमगमकूं लखे रे लोल ॥ हांरे० ॥ ऐसो आतमज्ञान किसन आखे अखे रें लोल ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगम ज्ञानी है नही नही आगमिक आज॥
आगम है सो अल्प है समज सुधारो काज॥१२॥इ०

॥ नीवडलीरा लावातीखा पान कुण रे संतावे हरिया रूखनेजी ह्माराराज ॥ ए देशी ॥

॥ सतगुरुजी परम दयाल विचरत आया भवि जन तारवाजी मुनिराज ॥ फलिया मनोरथ माल भले ही पधास्या जनम सुधारवाजी मुनि० ॥ १ ॥ धन घडी धन म्हारा भाग धनरो दिहाडो म्हारे आजरोजी मुनि० ॥ हिये हुवो हरष अथाग दरसण पायो धरमरी जहाजरोजी मुनि० ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी विद्यारा भंडार तपोधन भूमी जिम भारी खमाजी मुनि० ॥ जागी घटमें वडी च्यार प्रकार पाखंडी के[2]

---

१ 'उत्पात विनय क्रम अवस्थाको प्राप्त हुवो, २ 'हाती,

ल ॥ नव जल डूबत तारियोजी मुनि नमो नमो तुजने त्रिकाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ असलजती निरमल मतीजी मुनि नगवन परम कृपाल ॥ करुणा करि मुजने दियोजी मुनि समकित रतन रसाल ॥ सु० ॥ ८ ॥ उपगारी शिर सेहरोजी मुनि धनछे यो चित परधान ॥ धरम दलाली परम करीजी मोने मिसकरे[1] लायो उद्यान ॥ सु० ॥ ए ॥ कठिन वचने[2] मुखे बोलियाजी मुनि विन परमारथ लाध ॥ अविनय कीधो आपरोजी मुनि खमजो सकल अपराध ॥ सु० ॥ १० ॥ निरमल जैवातृक[3] जिसाहो मुनि सागर जेम गंनीर ॥ वसुमती जिम नारी खमाजी मुनि कांचनगिरि जिम धीर ॥ सु० ॥ ११ ॥ नविक कमल प्रतिवोध वाजी मुनि सुरज प्रकाशक आप ॥ शीतल चंदन बावनाजी मुनि मेटण नव डुखताप॥ सु० ॥ १२ ॥ वहु जन समकित पामियाजी मुनि अकथ कियो उपगार॥ परदेशी अनर्क[4] नमावियोजी मुनि धन धन केशी कुवार ॥सु०॥१३॥ सकलपदारथ पेखताजी ज्ञानी गुरु सम जगमें न कोय ॥ किसन कहेगुरु देव सूंजी शिष ऊरणक वहु न होय ॥१४॥

१ 'घोमा फेरणको मिसकर' २ 'जट्टा मुट्टा इत्यादि' ३ चन्द्र ४ 'वडो नारी राजा'.

॥ ख्यालकी ॥ देशी ॥

॥ पग लागो हनुमंत सियाके दिव्यरूप साक्षा त ॥ राघव लिछमन खेम कुशल हे सुखमानो तुमे मात हो ॥ १ ॥ इकवीस दिनासूं सीता सतवंती कियो पारणो टेर ॥ वात पुरवली सुणी जानकी हर ष हिये न समाय ॥ हनुमंत भाषे करो पारणो वन फल ल्याऊं जाय हो ॥ इ० ॥ २ ॥ देव रमण उद्या न मेंस कोई अमृतफल सुख दाय ॥ सीता भाषे तो रु मत लाजे लीजे पड्या उठाय हो ॥ इ० ॥ ३ ॥ लेवन गयो रसाल वागमें वुरू करी वलपूर ॥ वृक्ष उपाडि करे अधो मुख पकरु उछाले दूर हो ॥ इ० ॥ ४ ॥ सीता भाषे सुण रे वंधव करे किस्युं ए का म ॥ भूमि पड्या ल्याजे तुम भाष्यो राखसनो भय पाम हो ॥ इ० ॥ ५ ॥ क्रीडा रंग करी फल लायो पुंजकियो तिण ठाम ॥ परम मोदसे कियो पारणो भूषा गमाई ताम हो ॥इ०॥६॥ संकट टलियो धरम प्रसादे फली मनोरथ माल ॥ देख पराक्रम राम दू तका वोले सीता वोल हो ॥ इ० ॥ ७ ॥ धन माता जिण उदरे धरियो राखण सगला सूत ॥ चिरंजीव रहे घणा काल तुं पवन अंजनी पूत हो ॥ इ० ॥८॥

दिनकर चकवी मेघ मोरडी चंद कमोदनि जेम ॥ किसन लाल कहे धन सतवंती राख्यो पूरण प्रेम हो ॥ ३० ॥ ए ॥

॥ पणिहारीकी देशी ॥

॥ काया कामण वीनवे प्राणेसरजी सुण चेतन जरतार वाहलाजी एक लमी अवला जणी ॥ प्रा० मत मूको निरधार ॥ वा० ॥ १ ॥ तुम विन इण संसारमे ॥ प्रा० ॥ कुण पूछे मुऊसार ॥ वा० ॥ कुटंव कवीलो जातिका ॥ प्रा० ॥ सहु मिलकरसी छार ॥ वा० ॥ २ ॥ शिर साटे प्रीति करे ॥ प्रा० ॥ ते किम छीजे रे तोरू ॥ वा० ॥ कतवारीना सूत ज्यूं ॥ प्रा० ॥ जिम तिम लीजें जोड ॥ वा० ॥ ३ ॥ हुं तुं कुणसी प्रीतडी ॥ प्रा० ॥ पिण होइ आविरे कोय ॥ वा० ॥ जो हिवे मुकीने जावस्यो ॥ प्रा० ॥ जिम जावी तिम होय ॥ वा० ॥ ४ ॥ छोरू मेल करतो फिरे ॥ प्रा० ॥ सर मन आणो रे काय ॥ वा० ॥ ए अपकीरत्ति ताहरी ॥ प्रा० ॥ मुजने नावे रे दाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ वहुजन मुजने पर हरी ॥ प्रा० ॥ जे तपताका पाम ॥ वा० ॥ किसन कहे नित आतमा ॥ प्रा० ॥ हुं वलिहारी नाम ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ नागजीकी ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे मानवी नमतां चिहुं गति माय रे कांई नर नव पायो नीठसू रेजी ॥ हां० ॥ धर्म कियो न हि जाय रे काइ ऊरगति गामी धीठ सूं रेजी ॥१॥ हां० ॥ शिरपर घूंमें कालरे कांइ खवर नही खिण मातरीरे जी ॥ हां० ॥ चेतो सुरति संन्नाल रे कांइ तज मनीषा जिव घातरी रेजी ॥ २ ॥ हां० ॥ स्वा र थियो संसार रे कांइ मत कोइ जाणो आपणो रे जी ॥ हां० ॥ हिंसा धरम निवार रे कांइ संवर मा रग थापणो रे जी ॥ ३ ॥ हां० ॥ तज कर सगली आथरे कांइ परनव जासी प्राणियो रे जी ॥ हां० ॥ संवल लेलो साथरे कांइ आगे नहि हठ वाणियो रें जी ॥ हां० ॥ धरो धरम सूं प्रेम रे कांइ सुधसर धारी खप करो रे जी ॥४॥ हां०॥ किसन लाल कहे ए मरे कांइ शिवरमणी वेगी वरो रे जी ॥ ५ ॥

॥ घूमरकी ॥ देशी ॥

॥ राज मती कहे कर जोमी हांजि मोने विगर गुने किम ठोमी महाराज ॥ रा० ॥ टेर ॥ आठ न वांकी प्रीत पुरवली हांजी कांइ नवमें नव किम

१ ' बुद्धि पापकी '.

तोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ १ ॥ खूब वरात बणी चतु रंगी ॥ हां० ॥ जादव लाखो कोमी महा० ॥ रा० ॥ ॥ २ ॥ तुरत पुकार सुणी पसुवनकी ॥ हां०॥ जाणी मोने अव गुण उमी ॥ म्हा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ मेरु च ढाय रसातल पटकी ॥ हां० ॥ म्हारी करुणा न आ णी थोमी महा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ दंपति सुगति गया तसु वंदना ॥ हां० ॥ किसन करे शिर मोडी ॥ महा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ अथ श्री सनतकुमार राज ऋषि चोढालियो ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखदाई शासन धणी त्रिभुवन साम सहाय॥ भाव सहित सद्गुरु नमु वली शारद वरदाय ॥१॥ ये त्रिहुने त्रिविधे करी सीस नमू कर जोड ॥ गुण गावो गरुवा तणां मठर मनसूं छोम ॥ २ ॥ सुख दुख करम तणे वसे भोगवे इण संसार ॥ जोवो जग उत्तम पुरुष चक्री सनतकुमार ॥ ३ ॥ कुष्टादि कनी वेदनां अशुभ करम संजोग ॥ निजकृत भो गवी रायजी आप थया आरोग ॥ ४ ॥

१ 'खीभर्ता'

धिरग पणो रे संसार जीतव थोफोने
दुख घणो ॥ ए देशी ॥

॥ हथनापुर सुख दाय अमरापुर सम शोजतो जी ॥ पाले पटखंड राज पृथवी पति अति दीपतो जी ॥ १ ॥ धरम तणां फलसार चतुर सुणो मन थिर करीजी ॥ आंकणी ॥ नामे सनतकुमार आण सहु शिरपर धरेजी ॥ राजन सह सब तीसकर जो मी सेवा करेजी ॥ धरम० ॥ २ ॥ सोले सहस सुर सेव मुह आगल पाला चरेजी सुरपण वीस हजार देह तणी गया करेजी ॥ धरम० ॥ ३ ॥ चवदे रयण अधिकार पुन्य तणां परजावसूंजी रुद्धि सिद्धि नवेई निधान पूरव पुन्य पसावसूंजी ॥ धरम० ॥ ॥ ४ ॥ रमणी राज कुमार चौसठि सहस अंते वरेजी अपठरनो अवतार इंद्र तणी जाणे परीजी ॥ध०॥५॥

॥ कवित्त ॥

॥ चंद हूकी मंदता दिखावे मुख चंद हुते पंकज लुनाई हरे लोचन प्रजावते हेमको वरन हरे हे मसे वरन हुंते हरे अलि मेचकेता कचके वनावते॥ विलसे नितंवबिंव गौरव विलासनीके हरे करि कुंज

१ ' उत्तम ' २ ' भ्रमरका कालापनां,

ढवि कुचके उठावते मृदुताके अेनवेन वनिता समू
ह नमे एते गुन मंडन हे सहज सुभावते ॥ १ ॥
॥ बोले मीठीजी वाण सुसनेही नारी खरीजी
पुन्य तणां फल एह पुन्य करो झलट धरीजी ॥ ध
रम० ॥ ६ ॥ लख चोरासीजी जाण हयगय रथ ति
हुं जुवजुवाजी पायक ठिनवे कोम विद्याधर सेवक
हुवाजी ॥ धरम० ॥ ७ ॥ ऋद्धितणो विसतार पार
न पावेको सहीजी सुरनर सारेजी सेव आण उथा
पेको नहीजी ॥ धरम० ॥ ८ ॥ तेज प्रताप अखंड
राजवियां शिर राजवीजी कलपतरू सम एह इन्द्र
उपम भापे कवीजी ॥ धरम० ॥ ए ॥ पाले रूडीजी
रीत राजकाजन्याये करीजी किसन कहे कर जोड
नित वांदू भावे धरीजी ॥ धरम० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रवरत चोथो चतुर पाले सुखमें राज ॥ एक
दिवस सुरवर इसो परसंसे इंदराज ॥१॥ भूमंडल मृत
लोकमें रतिपतिनो[1] अवतार ॥ रूपवंत परसंसियो चक्री
सनतकुमार ॥२॥ तिण सरिखो सुरको नही इम जंपे सु
रराय ॥ वार वार इम उचरे अहो मानव कहिवाय ॥३॥

---

१ कामदेव,

धिरग पको रे संसार जीतव थोकोने
डुख घणो ॥ ए देशी ॥

॥ हथनापुर सुख दाय अमरापुर सम शोजतो जी ॥ पाले पटखंड राज पृथवी पति अति दीपतो जी ॥ १ ॥ धरम तणां फलसार चतुर सुणो मन थिर करीजी ॥ आंकणी ॥ नामे सनतकुमार आण सहु शिरपर धरेजी ॥ राजन सहु सब तीसकर जो की सेवा करेजी ॥ धरम० ॥ २ ॥ सोले सहस सुर सेव मुहु आगल पाला चरेजी सुरपण वीस हजार देह तणी ठाया करेजी ॥ धरम० ॥ ३ ॥ चवदे रयण अधिकार पुन्य तणां परजावसूंजी कृद्धि सिद्धि नवेई निधान पूरव पुन्य पसावसूंजी ॥ धरम० ॥ ॥ ४ ॥ रमणी राज कुमार चौसठि सहस अंते वरेजी अपठरनो अवतार इंद्र तणी जाणे परीजी ॥ध०॥५॥

॥ कवित्त ॥

॥ चंद हूकी मंदता दिखावे मुख चंद हुते पंकज लुनाई हरे लोचन प्रजावते हेमको वरन हरे हे मसे वरन हुंते हरे अलि मेचकेता कचके वनावते॥ विलसे नितंबबिंब गौरव विलासनीके हरे करि कुंज

१ ' उत्तम ' २ ' भ्रमरका कालापनां,

कम उथापियोजी ॥ २ ॥ किणथारी लोपीजी आण हो ॥प्रीत०॥ किण दुख दीधो हो साहिव राजनेजी ए सुंदरि सुवनीत हो ॥ प्रीत० ॥ जी जी जी करती हो हाजर तुम कनेजी ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ देखिवे में उत्तम कहा हे मृगलोचनीको प्रेमते प्रसन मुखपंकज प्रमानिये सूघिवेमें कहा तेहि आनन सुगंधी पो न सुनिवेमें कहा तेहि वचन वखानिये ॥ स्वाडुमें कहा हे तेहि अधरसुधाको पान परस कहा हे तन ताहिको सुगानिये कहा नव जोवनमें ध्यान करिवेके जोग जामनीको विभ्रम विलास जग जानिये ॥ ३ ॥ किणथाने दीधी कुसीखहो ॥ प्रीत० ॥ किण रे धूतारे हो राजन जोलियाजी राज तजो किण काज हो ॥ प्रीत० ॥ ए सुख सुंदर मंदिर मालियाजी ॥ ४ ॥ ए तुम रमणी सरूप हो ॥ प्रीत० ॥ मोहन वेली हो गजगति गामनीजी तुम विरहे महाराय हो ॥ प्रीत० ॥ ए तुम हीणी हो दीणी जामनीजी ॥ ५ ॥ ए कामण सुख माल हो ॥ प्रीत० ॥ कोमल काया हो गुणमणि उरडीजी वोलो मीठमा वोल हो ॥ प्रीत०॥ निजर नि

पो मोन्नणी रे ॥ महा० ॥ पूछे छे वलतो पृथवीजी ईश ब्राह्मण० ॥ ए ॥ रूप नहीयो पुरवे निरख्यो जे राजन ताहरो रे ॥ महा० ॥ परखीने जोवो पीक तंबोल इम कहिने ते ब्राह्मण पहु तो अपणे थानके रे ॥महा०॥ विगड्यो राजन रूप अमोल ब्राह्मण०॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ निज तन निरखे रायजी उपनो मन वैराग ॥ ए काया नहि माहरी तो सूं अवरस राग॥१॥ए जग सगलो कारिमो कारीमो जोवन रूप॥धन धरती सहु कारमी एम विचारे नृप ॥ २ ॥ राज काज सहु छो रुने नीकलियो वनवास ॥ वैरागे संजम लियो सहु ने छोडि निरास ॥ ३ ॥

ढाल ॥ प्रेकने कहे नृप चंद हो गुणरा नायक कागल देजोरे हाथ गुणावलीजी ॥ ए देशी॥

॥ राणा पन्नणे छे एम हो प्रीतम मोरा यह सुख लीणी हो तुम विना किम रहेजी एकलरी निरधार हो ॥ प्रीत० ॥ किम मनवाली हो सुंदर थिर रहेजी ॥ १ ॥ विन अवगुण गुणवंत हो ॥ प्रीत० ॥ इम किम छोरुी हो निसनेही थयाजी किण तुम लोपीजी कार हो ॥ प्रीत० ॥ किण तुम राजन हु-

कम उथापियोजी ॥ २ ॥ किणथारी लोपीजी आण हो ॥प्रीत०॥ किण दुख दीधो हो साहिब राजनेजी ए सुंदरि सुवनीत हो ॥ प्रीत० ॥ जी जी जी करती हो हाजर तुम कनेजी ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ देखिवे में उत्तम कहा हे मृगलोचनीको प्रेमते प्रसन मुखपंकज प्रमानिये सूघिवेमें कहा तेहि आनन सुगधी पो न सुनिवेमें कहा तेहि वचन वखानिये ॥ स्वादुमें कहा हे तेहि अधरसुधाको पान परस कहा हे तन ताहिको सुगानिये कहा नव जोवनमें ध्यान करिवेके जोग भामनीको विभ्रम विलास जग जानिये ॥ ३ ॥ किणथाने दीधी कुसीखहो ॥ प्रीत० ॥ किण रे धूतारे हो राजन भोलियाजी राज तजो किण काज हो ॥ प्रीत० ॥ ए सुख सुंदर मंदिर मालियाजी ॥ ४ ॥ ए तुम रमणी सरूप हो ॥ प्रीत० ॥ मोहन वेली हो गजगति गामनीजी तुम विरहे महाराय हो ॥ प्रीत० ॥ ए तुम दीणी हो दीणी भामनीजी ॥ ५ ॥ ए कामण माल हो ॥ प्रीत० ॥ कोमल काया हो रडीजी बोलो मीठका बोल हो ॥ प्रीत०॥

हालो हो गुणवंत गोरडीजी ॥ ६ ॥ थे छो म्हारे जीवन प्राण हो ॥ प्रीत० ॥ तुम विण अबला हो अंकुश केहवोजी किम जासी दिनरात हो ॥ प्री०॥ हिवडे विमासी हो राजन एहवोजी ॥ ७ ॥ निठुर थया कहो केम हो ॥ प्रीत० ॥ हंसकर पूछो हो सुख दुख वातडीजी राजन सहु सवतीस हो॥ प्रीत० एह तुम सेवा हो करे दिन रातडीजी ॥ ८ ॥ इम कह्या वचन अनेक हो ॥ प्रीत० ॥ राजेसर राख्यो हो थिर मन आपरोजी इम विचरत षटमास हो ॥ प्रीत० ॥ सहु जन चापे हो राज मया करोजी ॥९॥ सुरपति ब्राह्मण रूप हो ॥ प्रीत० ॥ सहुने समझा वि हो पाछा वालियाजी सुरपति दीधी सीख हो ॥ प्री०॥ मन वचन काया हो संजम पालियाजी॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवरने परणाम कर इन्द्र गयो निज ठाम॥ सनतकुमार महा ऋषी पाले संजम ताम ॥ १ ॥ पाप करम जोगे करी प्रगट्यो रोग करूर ॥ गलित कोढ नामें कह्यो अशुभतणे अंकूर ॥ २ ॥ अति दुख पावे साधजी करणी दुक्कर कार ॥ अहियासे शुभ भावसूं अप्रतिबंध विहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कररो कंकण तोरू दूजे दिन हालियो प्रीतमजी ॥ ए देशी ॥

॥ इक दिन फिर आवे रूप वणावे इन्दरे मुनि वरजी वरू वैद्य कहावे नारू जोवावे वृन्दरे ॥ मु०॥ मुनि सनत जणावे वचन सुणावे कांन रे ॥ मु० ॥ आडंवर भावे मोटे दावे मान रे ॥ मु० ॥ १ ॥ हुं तो वैद्यक कहाऊं रोग मिटाउं जाण रे ॥ मु० ॥ तुम कोड गमाउं दूर नशाउं ताण रे ॥ मु० ॥ इम बोले वाणी मनमें आणी राग रे ॥ मु० ॥ गोली गुण खाणी जाण पिछाणी तो लाग रे ॥ मु० ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ तव रूपजी भापे कांइ न राखे काण रे ॥मु० तुं तो सांचो ही भापे सहु जन साखे वाण रे ॥मु० मंत्र यंत्रने जापे फेर न व्यापे जोय रे ॥ मु०॥ सहु पापनें कापि मुगती न आपे कोय रे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सो तो औषध दीजे हरष धरीजे अंग रे ॥ मु० ॥ करुणा मोह कीजे यो जस लीजे रंग रे॥ मु० ॥ तव इन्द्र अपूठो मुनि दढ दीठो सूर रे ॥ मु०॥ संजम गुण तुठो अमृत वूठो पूर रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ सुरपति गुण गावे सीस नमावे पाय रे ॥ मु० ॥ मुनि गरव न आवे इन्द्र सिधारे ठाय रे ॥ मु० ॥ सु

रित पाले दूषण टाले काय रे ॥ मु० ॥ सब पाप पखाले तन उजवाले जाय रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ शुन्न जावना जावे करम खपावे साध रे ॥ मु० ॥ अति वेदन पावे ध्यान गमावे व्याध रे ॥ मु० ॥ तीन ला ख प्रमाणे सरव वखाणे आय रे ॥ मु० ॥ अण स ण शुन्न ठाणे अमर विमाणे जाय रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ दोय अरथ जणाया अमर कहाया एम रे ॥ मु० ॥ गत देव सिधाया तो अंत वताया केम रे ॥ मु० ॥ फिर केवल नाणी वदे जिन वाणी जेह रे ॥ मु० ॥ सांची कर जाणी जविक सुहाणी तेह रे ॥ मु०॥७॥ धन धन ऋषिराया प्रणमुं में पाया नित्त रे ॥ मु० ॥ गुण हरपे गाया सनत सुहाया चित्त रे॥मु०॥८॥ गुरु नंदराम कहाया तास पसाया जेह रे ॥ मु०॥ सिख किसन रचाया वयण सुणाया एह रे ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ कलशः ॥

॥ संमत पांडव वाण निधि शशि जय नगर सुख वास है, जाद्रव मासे मन हुलासे बीज सुकल उजास है ॥ श्रीसनत गायो मन सुहायो पायो परमानंद ए, कवि किसन पजणे धन्य मुनिवर चरन नमुं सुख कंदए ॥१॥ इति श्रीसनतकुमार राजऋषि चोढालियो ॥

॥ अथ विवेकमंजरी ॥

॥ दोहा ॥

॥ नमो देव अरिहंतजी गुरु गिरवा निगरंथ ॥ धर्म केवली भापियो यह अपवर्ग सुपंथ ॥ १ ॥ कुमति लता का पण असी समकित सुगम उपाय ॥ वरनु विवेक मंजरी चतुर सुनो चित लाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ प्राणी करम समो नहि कोइ ॥ ए देशी ॥

॥ अपणा अवगुण आपन देखे देखे अवगुण पर का ॥ यह विपरीत मिथ्याती सरधा दास कहावे हरकारे ॥१॥ प्राणी अनुभव ज्ञान विचारो ॥आंकडी॥ हिंसा करे हरप मन आणे धरम करम नहि जाणे ॥ परलेका तो जीव वखाणे ठाकुरकू पहिचानेरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ठाकुर आप हराम करावे चोरी सूं पकडावे ॥ फिर उवाकूं गरदन मरावे यह तेरे मन आवे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इण वाता लायक नहि नायक उवे देखणका गरजी ॥ दुनिया उनकूं एव लगावे क्या सायवहे दरजीरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कुंण कुंण करम करे जगवासी साहिव यूं फुरमावे ॥ हे परतीत तुंमारे मनमें मुजकूं मूल न भावे रे ॥ प्रा०

रित पाले दूपण टाले काय रे ॥ मु० ॥ सव पाप पखाले तन उजवाले जाय रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ शुज्ञ ज्ञावना ज्ञावे करम खपावे साध रे ॥ मु० ॥ अति वेदन पावे ध्यान गमावे व्याध रे ॥ मु० ॥ तीन लाख प्रमाणे सरव वखाणे आय रे ॥ मु० ॥ अण सण शुज्ञ ठाणे अमर विमाणे जाय रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ दोय अरथ जणाया अमर कहाया एम रे ॥ मु० ॥ गत देव सिधाया तो अंत वताया केम रे ॥ मु० ॥ फिर केवल नाणी वदे जिन वाणी जेह रे ॥ मु० ॥ सांची कर जाणी ज्ञविक सुहाणी तेह रे ॥ मु०॥७॥ धन धन ऋपिराया प्रणमुं में पाया नित्त रे ॥ मु० ॥ गुण हरपे गाया सनत सुहाया चित्त रे॥मु०॥८॥गुरु नंदराम कहाया तास पसाया जेह रे ॥ मु०॥ सिख किसन रचाया वयण सुणाया एह रे ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ कलशः ॥

॥ संमत्त पांडव वाण निधि शशि जय नगर सुख वास है,ज्ञाद्रव मासे मन हुलासे वीज सुकल उजास है॥श्रीसनत गायो मन सुहायो पायो परमानंद ए, कवि किसन पज्ञणे धन्य मुनिवर चरन नमुं सुख कंदए ॥१॥ इति श्रीसनतकुमार राजऋपि चोढालियो॥

ती वात मुझे वतलावो केसा साहिव तेरा रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मेरा साहिवमें पहिचाणुं और कहा कोऊ जाणे ॥ द्वीप समुद्र कही नहि संख्या नवसत मूढ वखाणे रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ कूपक मीडक मान सरोवर महिमा नाहि मनंता ॥ केवल ज्ञानी और अज्ञानी अन्तर जाण अनंता रे ॥ प्रा०॥ १६ ॥ जमी तथा असमान चिहुं गति जगत मुगति कहि लावे॥ कुण पहिली कुण पीठे कहिये जुगल कह्यो नहि जावे रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ जीव अजीवरु इंडो पठी वीज तरू नरनारी ॥ इत्यादिक प्रश्नोत्तर प्रभुजी नहि भाख्या तिण वारी रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ किण विध जीव जभा जग मांही किण विधि जीव उपाया ॥ मात न तात न जात जणाया आदन अंत वताया रे ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ यह अनादिकी थित हे युंही मति संसै मन आणो ॥ जीव अरूपी जगमे डोल्यो आपो आप पिछाणो रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ जो ब्रह्मांड तणीथित रचनासो कोउ करता नाही ॥ यह चेतन तन करता हरता वंधन मुकति मिलाही रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ ढेर कोऊ करता ठहिरावे कहि तन वणत गुसाइ ॥ जो करतासो भुगता जाणो इणमें संसे

कर रेखा जिम सब कुछ देखा गुरु तिहुं भुवन उजे रे ॥ करता पुरष कहां छिप बैठो निजरन आयो मे रे रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ साहिवमें दोय बात नही हे क्यूं वदनामी दीजे ॥ हे करतूत शुभाशुभ अपणी अपणे ही शिरलीजे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ साहिवकूं करता नहि माने जैनी जीपे जमकूं ॥ जैन वरोवर ज्ञान नही हम सव मत देख्या तमकूं रे ॥ प्रा० ॥८॥ किण करणी सूं सास कहाया वात वतावे तहां ते॥ निराकार लेखा कुंण मागे कागद कलम कहां तेरे॥ ॥ प्रा० ॥ ए ॥ चवदे राज चराचर देख्या छांनी वात न कांइ ॥ उणतो और कह्यो नहि करता हे अपणी विकसाई रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ सवही चीज हुकमसे हरिये हाकमसे क्युं डरिये ॥ पाप करतही पार उतरिये तो करणी क्युं करिये रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ हरष शोक दोनुं पर हरिये समता भाव विचरिये ॥ साहिवके शिर दोष न धरिये दुख सुख अपणा भरिये रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ साहिव आप कहां ते आया जीव कहां ते लाया ॥ मात तात कुंण कुलमें जाया जात कहां कह लायारे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ कुंण सरूप उस साहिव केरा कहां साहिवका डेरा ॥ ए

आवे ॥ असल रामको राज टिगाटिग झिग मिग जोति सुहावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ एक न भूला दोय न भूला भूला सरव अज्ञानी ॥ एक न भूला ब्रह्म सुज्ञानी अध्यातम सरधानी रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ सुल टी बात सरव नय समजे वादन विवादन उवाके ॥ सो समकित सुध सरधा धारी भूल भरम नहि ता के रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ कुण गुरु चेला ज्ञान डुहेला आप अकेला आया ॥ स्वांग धारि करि संत कहा या खोटा चलण चलाया रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सांचो पंथ दिखावे सबकूं निरमोही निरदावे ॥ करणी करे करम सूं न्यारा सोही साध कहावे रे ॥ प्रा० ॥३५॥ समरस लीन सुमारग चाले दान दया अरु दमता ॥ ताकी निजर निरजन सेती शील संतोषी समता रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥ अधिक निरागी मन वयरागी त्या गी माया ममता ॥ मुनिवर मोह विकलता वमता धरम शुकल सूं रमता रे ॥ प्रा० ॥ ३७ ॥ वीत रा गकी केवल वाणी नहि आणी गुण थिरता ॥ ता कारण नर सुरग पयाले च्यारूं गतिमे फिरता रे ॥ प्रा० ॥ ३८ ॥ तीनुं वेद विसन विकलाई विरत सुरत नहि आइ ॥ जो आइ रुचितो न सुहाइ पाइ-

नाही रे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ पाप पुन्य वेउ संगी मेरे सुख डुख करता जाणु ॥ नवग्रह जूत जवानी जैरुं इणकूं नही पहिगाणुं रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ करता था पे उर अज्ञानी ज्ञानी ज्ञान विचारे ॥ उण साहिव के सरव सरीखा नहि तारे नहि मारे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २४ ॥ लोक कहे साहिव है करता सोमेरे मनना वे ॥ जो कोउ वालियो वारस होवे तो युंनाउ कटा वे रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ हुकम विना तो पातन हाले मुल्लांक्युं घर घाले ॥ कौण निसाफ किया काजीने जीव जवेह करम्मारे रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ पैदाह कर के सीस कटावे उवे साहिव है कैसा ॥ मूरख लोक लखे नाहिवाकूं उवे तो दरपण जैसा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २७ ॥ ज्युं दरपणमें सव कुठ दीसे दरपणमें नवि कारा ॥ त्युं उवे जोति सरूप विलोके सवकूं सवसे न्यारा रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ उणकी महिमा है उनही में नाम निरंजन धरता ॥ हेनाही नाही हे निरमल नहि करता नहि हरता रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ साहिव से मेलाप डुहेलो पंथ सुगुरु वतलावे ॥ फरचो हो य चिहुं गति सेती तव पंचम गति पावे रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ साहिवके दरवार सिधावे फिर पीछे नहि

रिग्रह त्यागी सो तो विरला पावे रे ॥ प्रा० ॥ ४८ ॥ नेपधार कर नोट नूला पंच महाव्रतधारी ॥ वीत राग कोइ विरला होयगा वहु दीसे घरवारी रे ॥ प्रा० ॥ ४९ ॥ अपणी करणी करम विटंवणां कुंण कुंण वात चितारूं ॥ ऊंचा नीचा कुल नरनारी जनम मरण निरधारुं रे ॥ प्रा० ॥ ५० ॥ च्यारूं गतिमे जे उुखपाया परतख निजरां दीसे ॥ ज्ञानी वात प्रगट दिखलाइ केवलि विसवा वीसे रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ मेंही अपणो दोसत डुरजन डूजो कुणवत लाऊं ॥ मेंही नूल नरमको रागी कहितो क्या तुतलाऊं रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ मेंही अशुन करमको करता कुमता कान घटाई ॥ मेंही अधम महा अपराधी सुमता नाहि सुहाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ चोरीको गुड जोलो मीठो तोलो लखे हन कोई ॥ जवही लखे तव खून खरावी अधिक फजीती होई रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ५४ ॥ तो पिण मनुवा धीठ दीठ मूल उपाधि नमूंके ॥ जो कोउ वाकूं सीख समापे तो पिण डुगुणा नूकेरे ॥ प्रा० ॥ ५५ ॥ तूं तो नूखो नूत वंगालो नातही नात पुकारे ॥ तूं तो प्यासो पर पुजलको पांचुं मुख आहारे रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ कुंण कुंण

११

गमाई रे ॥ प्रा० ॥ ३९ ॥ आवा गमन निवारण कारण वात वताउं साची ॥ कनका मणी कुमति उ पावे याते करणी काची रे ॥ प्रा० ॥ ४० ॥ सव उ पाधि इण तेही उपजे वनवेली विसतारा ॥ इण दो नुसे होय निराला सो साहिवका प्यारा रे ॥ प्रा० ॥ ४१ ॥ साध नही अरु साध कहावे मुंहके वांधे प ट्टी ॥ मूकिया मुनिवर नाम धरावे जेप जरम कीट ट्टी रे ॥ प्रा० ॥ ४२ ॥ याके घरमें वाघण वाकी कुम ता का मणकटी ॥ सोतो नाचन चावे एसे जैसे जा लम जटी रे ॥ प्रा० ॥ ४३ ॥ लोक दिखा मुहपति वांधी विसन गयो कछु नाही ॥ विन चारणिये पक दो कीनो पुरुष परायो मांही रे ॥ प्रा० ॥ ४४ ॥ ज्ञा न विन य त्रसथावर जंतु वचे प्रगट गुण दोइ ॥ म न वच काया जेणां करंता आरोधिक पद होइ रे ॥ प्रा० ॥ ४५ ॥ कपका धोवे सोतो धोवी रंगेसो रंगा रा ॥ कपटी पीला वेप वणावे यह तो जोग विगा रा रे ॥ प्रा० ॥ ४६ ॥ सहज जाव वरते सो साधू न ही रंगे नहि धोवे ॥ सव डुनियाकूं पूठ दिखावे शिवपुर साहमो जोवे रे ॥ प्रा० ॥ ४७ ॥ कलजुगमे कंपटी धूतारा साधु समण कहावे ॥ साधु रसव प

मेंकी वात विसरिये रे ॥ प्रा० ॥ ६५ ॥ मनकी सर धा मनमें धरिये जिणसूं पार उतरिये ॥ मिथ्याती सूं वाद न वरिये हांजी हांजी करिये रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६६ ॥ कुगुरु कुसंगी हीणाचारी आगम सरव उ थापे ॥ सो पापी पाखंडी परतख जो अपणी मति थापे रे ॥ प्रा० ॥ ६७ ॥ ताकी संगति जहरन पीवो जीवो अरथ अमीमें ॥ सरव सराफ न खावे खोटो परख जुहार जमीमे रे ॥ प्रा० ॥ ६८ ॥ नरजव पा य नही तुम चेतो चेतोगे किस गतिमें ॥ मोति मु हीम लगी शिर उपर तुम लागे किस मतिमें रे ॥ प्रा० ॥ ६९ ॥ सवही कहे रे सांऊ सवे रे निश दि न करत तगादा ॥ पाउपलक कोउ रहण न पावे पू गे आए अवादा रे ॥ प्रा० ॥ ७० ॥ वहुत दुहेलो नर जव पायो सो नर जव युंजावे ॥ शोच विचार करूं निशवासर पण कछु वन नहि आवे रे ॥ प्रा० ॥ ७१ ॥ में परमादी अरु विषवादी मोह पस्यो पि ठवारी ॥ ताकी ठाक अनादी अजहु उतरी नाहि खुमारी रे ॥ प्रा० ॥ ७२ ॥ कुछ तो फिकर करो

---

१ ' मेना मेना कहतही मेंना रहि सुख पाय ॥ में में करती वाकरी वैठी गलो कटाय ॥ १ ॥

षट रस स्वाद न लीना पीना सागर पानी ॥ अब संतोष करो नवि प्राणी सुन सदगुरकी वाणी रे ॥प्रा० ॥ ५७ ॥ सागरमें पाणी नहि एतो जे तो परकूं रोयो ॥ परके कारण पच पचमूवो आपो आपन जोयोरे ॥ प्रा० ॥ ५८ ॥ पाप किया पर जन तन कारण करम उदे जव आया ॥ ते फल जोगवतां अति करुवा ज्ञानी आप वताया रे ॥ प्रा० ॥ ५९ ॥ किस कूं जोवे रोवे धोवे किसका मांरू सापा ॥ यह तो वयरी वात विगोवे खोवे अपणा आपा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ६० ॥ सुखकूं फूरे सो सुख दूरे डुखकूं सुख कर माने ॥ सुख सरसूं डुख मेंर समाना मूढमति नहि जाने रे ॥ प्रा० ॥ ६१ ॥ गंधा जलसूं पिंरू वंधाणो गंधो गंध नराणो ॥ ओर अनेक उपाधि नरित तन तापे तरुणि लोनाणो रे ॥ प्रा० ॥ ६२ ॥ सूधी समऊ नही डुनियाकी सव मतकी मति न्यारी ॥ वोवे वीज किसाण जमीमें किस विध कामित क्यारी रे ॥प्रा०॥ ॥ ६३ ॥ हस्ती एक छहुं मति लोचन ऊगरा जोर मचावे ॥ कैसे एक मिले कहो सरधा सवतो सुरगन जावे रे ॥ प्रा० ॥ ६४ ॥ सो सेणां मति एक अपरिये क्या आलमसे अरिये ॥ हारजीत दोनु परहरिये

जियकूं पकड कस्यो अपणे वस कैदी कह्योह न जाई रे ॥ प्रा० ॥ ७१ ॥ अपणी सोख विराणें घरमे बैठो मोज मनाई ॥ ताके तो फल एसें जैसे वनचर भांग चवाई रे ॥ प्रा० ॥ ७२ ॥ देखत भूली संझा फूली नाटक जिम न दुवेरा॥ नंदीनाव तरु पंछी वादल जगत सराहि वसेरा रे ॥ प्रा० ॥ ७३ ॥ जो चेते तो चेतसवेरा जिण सूं होय निवेरा॥ नहि तर फेरा ओर अवेरा कुंण तेरा कुंण मेरा रे ॥ प्रा० ॥७४॥ में इतवार कियो पंचाको पांचा मिल मति खोई ॥ इण पांचाको करे भरोसो सो नर दुखिया होइ रे ॥ प्रा० ॥ ७५ ॥ में जाण्यो ए खूब करेगे पंच परमेश्वर मिलिया ॥ पांचामे परमेश्वर नाही चोर चुगल ठल वलियारे ॥ प्रा० ॥ ७६ ॥ झूंठो जग विवहार कहावे परभव कामन आवे ॥ जो पाले सो सुध मन सेती सो निश्चे फल पावे रे ॥ प्रा० ॥ ७७ ॥ विण पूंजी गुण ज्ञान गमारा किरिया करत पसारा ॥ वोतो पंथ निरालो सवसूं यह तो भरम भंगारा रे ॥ प्रा० ॥ ७८ ॥ लिखे लिखावे पढे पढावे सुणे सुणावे सवही ॥ किरिया कष्ट करे वहु विधसूं मुगति न पावे कवही रे ॥ प्रा० ॥ ७९ ॥ होय उदासी

म अपणो युं तोही मतिहारो च्यार दिनाकूं परजव जाणो परसूं नेह निवारो रे ॥ प्रा० ॥ ७३ ॥ मे अवतार धस्यो कलजुगमे मन वच काय कचाई ॥ साधु तणां गुण पूरण न पले तिण सर धा ठहराई रे ॥ प्रा० ॥ ७४ ॥ गुरुउपदेश कह्यो वहु तेरो जिन जिन जेद वखानी ॥ जिन वचनापे अमल न कीनो पीनो मदरा पानी रे ॥ प्रा० ॥ ७५ ॥ परमादीकूं ज्ञान न आवे यो कहिये सो यूंही ॥ मन डुष्टी कैसे समजाउ सीख न माने क्यूंही रे ॥ प्रा० ॥ ७६ ॥ राजा परजा जेरु नरनारी वाला तरुणांवुढा ॥ आला सूका सर्व जलेगा ज्युं जंगलका कूरा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ७७ ॥ परघरे ठांरु मांरु घर घरका घरमे कर घर वासा ॥ घर घरमे केते घर घर हे घर घरमे मेवा सारे ॥ प्रा० ॥७७॥ कांधे करि मुरदा पहुंचावे रामही राम सुणावे ॥ अपणा होय हेतुसो साजन ठोकही ठोक जलावे रे ॥ प्रा० ॥ ७ए ॥ तुं तो मस्त मदो मत दीसे जैसें मुकना हाथी ॥ शोच नही उस दिनका तुमकूं कोण चलेगा साथी रे ॥ प्रा० ॥ ७० ॥ मोह गनीम लग्यो हे केरे तिण एह धूम मचाई ॥

१ ' जिसमें आयुरूप जाडा देके रहना परे वोही परघर.

रे ॥ प्रा० ॥ ए८ ॥ लंकाकीतो नकल वणावे रावण रूप रचावे ॥ रामचंद लिछमन चढ आवे रावणकूं ठेहगावे रे ॥ प्रा० ॥ एए ॥ लिछमनजी रावणकूं मार्यो दिवस विजेदशमीकूं ॥ रामचन्द्र सीतासूं मिलिया राज भभीषणजीकूं रे ॥ प्रा० ॥ १०० ॥ रावणके घर शोक भयोहे वहु परिवार विख्याती ॥ सो डुसरावो डुनिया माने मूरख लोक मिथ्याती रे ॥ प्रा० ॥ १०१ ॥ धरम करमकी वात न माने ज्ञान विना गुणहीणां ॥ दोनू तीन खंरूके नायक पदमोटो परवीणा रे ॥ प्रा० ॥ १०२ ॥ निश दिन करम करे जगवासी कुल किरिया मिळमानी ॥ एक अरथ अनरथ हे डूजी तीजी फिर समदानी रे ॥ प्रा० ॥ १०३ ॥ चोथी भरम धरमके हेते कुगुरु कुदेव पुजेरा ॥ दरसन ज्ञान गयो घट जाके ता घट नाहि उजेरा रे ॥ प्रा० ॥ १०४ ॥ गोगा मोगा मूरख माने संरूप मकर वणावे ॥ सती शीतला माता मोटी कहतां सरम न आवे रे ॥ प्रा० ॥ १०५ ॥ लरका खावे नेण गमावे पूरी पोरू लगावे ॥ यह तो रोग लोक नहि समजे उदर व्यथा कहिलावे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १०६ ॥ नगर कोटमे देवी डुरगा ज्वाला

जगति जुगतिसूं जगगुरु जोगी जवही ॥ जिस दिन मनुवा निरमल होगा मुगति लहेगा तवही रे ॥ प्रा० ॥ ए० ॥ विरच विपेसु अलख अराधे साधा साथ सगाई ॥ नाइ नरम नजीक न राखे त्यागे तृष्णावाइ रे ॥ प्रा०॥ ए१ ॥ मोह करमकूं पूठ दिखावे देखे तुरत तमासा ॥ काया कुटणी करम धरम की मनकी पूरे आसारे ॥ प्रा० ॥ ए२ ॥ पांचाको मेलाप दुहेलो तिण विन ज्ञाता झूरे ॥ कवहु जोग मिलेगो सांचो सेवक साम हजुरे रे ॥ प्रा० ॥ए३॥ क्या दुनियांसे सगपण तेरा देहमां नरकानाता ॥ तापे ते मगरूरी पकडी पांचु केरस राता रे ॥ प्रा० ॥ ए४ ॥ मोटो पापी परव दिवाली महा अधरमको पातो ॥ पग पग पापकातकी पुन्यम कुगुरु करमको नातो रे ॥ प्रा० ॥ ए५ ॥ जीव जवेह करस्यादी माने घर वकरीद मनाइ ॥ हे मुल्लाको करम कसाइ इक दमडी दुखदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ए६ ॥ दसरावेकूं नैसो मारे सतुर विदारेईदी ॥ हिन्दू मुसलमान दोउ सरिखा सुणवे गाफलगीदी रे ॥ प्रा० ॥ ए७॥ सवकूं देख नेकवदसवमे ज्युं सागर गिर धरिया ॥ हे अपणी करणीको कारण जहर सुधारस नरिया

खा मरता मूंड मुडावे मोल विकाता आवइ ॥ भेष गहे पिण भेद न पावइ पंमित नाम धरावे रे ॥प्रा० ॥ ११६ ॥ अकल उपावे दाम कमावे इंडी लाम ल मावे ॥ डुनियादार समान मिथ्याती निगुणा गुरु कहिलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११७ ॥ सतजुग मांहे चेला करता कलजुग मांहे चेली ॥ रात दिवस दोनु रहे भेला रहती नाहि अकेली रे ॥ प्रा० ॥ ११८ ॥ मूंम मुंमाय फिरे मतवाला साथे सरम न आवे ॥ चोथो वरत वचे घृत कैसे आग नजीक जलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ए ॥ जोगी जसकूं कान फमावे मूम मुंमावे मुं मिया ॥ मन वच काया तिहु मुकलाया तोर तमासे गुडिया रे ॥ प्रा० ॥ १२० ॥ जंगम जय महादेव म नावे गावे गोपीचंदा ॥ जाडूगरीरा जती कहावे जा लम जैनी जिंदारे ॥ प्रा० ॥ १२१ ॥ संन्यासी अव धूत जटाधर भारी भंग चढावे ॥ राख लगावे नगन दिखावे वनमे वनफल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १२२ ॥ षट दरसन केते सिर पटके भटके करम कुभावे ॥ राग द्वेष दोउं दलभारी तिनकूं क्यो न खपावे रे ॥ प्रा० ॥ १२३ ॥ वामण रामण मामण चामण विरला भेद लखावे ॥ कथा सुणावे गुरु कहिवावे गुंपती

हारे ॥ जाती जुलम करे मुख आगे जीव हणे न निवारे रे ॥ प्रा० ॥ १०७ ॥ ताकूं कहत नवानी माता धूड समज दुनियाकी ॥ यह तो रांड कसायण रूायण धरिये शिर जुनियांकी रे ॥ प्रा० ॥ १०८ ॥ एक रुद्राणी एक शूद्राणी देवी दोय कहावे ॥ एक मदिरा माटी मटकावे एक मीठो गटकावे रे ॥ प्रा० ॥ १०९ ॥ एक मिथ्यामतिमांहि वखाणी इक समकित जिनवाणी ॥ देवी दोय परीख्या करने सीसन मो नव प्राणी रे ॥ प्रा० ॥ ११० ॥ कुल देवीको करज उतारे करे कडाइ पूरी ॥ वेस सुहागणकूं पहिरावे राति जगावे रूरी रे ॥ प्रा० ॥ १११ ॥ एक पूतके कारण केते जतन किये बहु तेरें ॥ सात वरसको होण न पायो हंसलियो जम घेरे रे ॥ प्रा० ॥ ११२ ॥ यह मलेछ हम समकित धारी कैसे वणेही वणावा ॥ वटो लगे सो वात न नावे हे सवसूं निरदा वारे ॥ प्रा० ॥ ११३ ॥ रांक रसायण ढुंढे वनमे मनमे धन अभिलाषा ॥ नाग विना कछु वनि नहि आवे तव दिखलावे आखारे ॥ प्रा० ॥ ११४ ॥ मांगे माल मुफतमे वेटा नूतांकूं फुसलावे ॥ करामात सव अपणी जाणो मेहनत सूं सुख पावे रे ॥ प्रा० ॥ ११५ ॥ नू

खा मरता मूंड मुडावे मोल विकाता आवइ ॥ भेष गहे पिण भेद न पावइ पंमित नाम धरावे रे ॥प्रा० ॥ ११६ ॥ अकल उपावे दाम कमावे इंडी लारू ल रूावे ॥ डुनियादार समान मिथ्याती निगुणा गुरु कहिलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११७ ॥ सतजुग मांहे चेला करता कलजुग मांहे चेली ॥ रात दिवस दोनु रहे भेला रहती नाहि अकेली रे ॥ प्रा० ॥ ११ट ॥ मूंरू मुंराय फिरें मतवाला साथे सरम न आवे ॥ चोथो वरत वचे घृत कैसे आग नजीक जलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ए ॥ जोगी जसकूं कान फमावे मूरू मुंरावे मुं मिया ॥ मन वच काया तिहु मुकलाया तोर तमासे गुडिया रे ॥ प्रा० ॥ १२० ॥ जंगम जय महादेव म नावे गावे गोपीचंदा ॥ जाडूगरीरा जती कहावे जा लम जैनी जिंदा रे ॥ प्रा० ॥ १२१ ॥ संन्यासी अव धूत जटाधर भारी भंग चढावे ॥ राख लगावे नगन दिखावे वनमे वनफल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १२२ ॥ षट दरसन केते सिर पटके भटके करम कुभावे ॥ राग द्वेष दोउं दलभारी तिनकूं क्यो न खपावे रे ॥ प्रा० ॥ १२३ ॥ वामण रामण मामण चामण विरला भेद लखावे ॥ कथा सुणावे गुरु कहिलावे गुंपती ख

मग चलावे रे ॥ प्रा० ॥ १२४ ॥ कामी क्रोधी लोभी लंपट मद माता मतवाला ॥ राग द्वेष वहु पाप अ ठारे आश्रव सेवण वाला रे ॥ प्रा० ॥ १२५ ॥ अज इंद्री मद मेंगल घोरा मन नर काम विकारा ॥ गा य गहलता इण विध सेती यज्ञ करे विसतारा रे ॥ प्रा० ॥ १२६ ॥ दान पुन्यका धरम सुणावे भूल भर म नहि जावे ॥ वेल पिता पर वोजलदावे माता गाय पुजावे रे ॥ प्रा० ॥ १२७ ॥ माता मरके शुनी भई सो कूट निकाले वारे ॥ पिता भयो घरवेल वि राणे ताकूं कुण चितारे रे ॥ प्रा० ॥ १२८ ॥ मात पिताका जव दिन आया न्याती नेहत वुलाया ॥ उनकूं पुन्य कहांसे पहुंचे पापी प्रेत जिमाया रे ॥ प्रा० ॥ १२९ ॥ मके जाय निवाज गुदारें मुल्ला वांग पुकारे ॥ वकरा वकरी पकड पछाडे मुरगा मुरगी मारे रे ॥ प्रा० ॥ १३० ॥ पर प्राणीके पुदगल रोषे अपणो पुदगल पोषे ॥ एक रतूत भरोसे भोला मु गति कहो किम होसे रे ॥ प्रा० ॥ १३१ ॥ जख पे कंवर पीर अवलिया आलम मिलकर ध्यावे ॥ डडि या जाय चराक चढावे चोकी भरकर आवे रे ॥ प्रा० ॥ १३२ ॥ भोंदू लोक भरममें भूला जाहर पी

र मनावे ॥ देव बहुत सेव्या सुख कारण सो कछु सांच न पावे रे ॥ प्रा० ॥ १३३ ॥ चाहे साम सुहाग सपूती ईसर गवर बणावे ॥ नाचे कूदे अंग दिखावे गावे ढोल बजावे रे ॥ प्रा० ॥ १३४ ॥ पूजा करम करे कर जोमी कर सिणगार सवाया ॥ तो पिण पतिका सुख नहि देखा सुत नहि गोद खिलाया रे ॥ प्रा० ॥ १३५ ॥ सुत जाया कैवार खिलाया व्याह्या वनिता लाया ॥ अंत काल कोउ कामन आया इम केवलि फुर माया रे ॥ प्रा० ॥ १३६ ॥ हय गय रथ पायक परिवारा मात पिता सुत दारा ॥ इणमें तेरा कोन संगाती मनमें सोच विचारो रे ॥ प्रा० ॥ १३७ ॥ काया कुमति करी नहि वसमे सुमति सुप्यारन पकरी ॥ विकथा वचन मरम मुख भापे वात कहे उर अकरी रे ॥ प्रा० ॥ १३८ ॥ मन विसतार दसूं दिस पसरे थिरत ध्यानसु न करी ॥ सुगुरु कहे क्या जोग कमाया पांचू जीतन जकरी रे ॥ प्रा० ॥ १३९ ॥ समताके सन मुख नहि आवे ज्युं नाहरके बकरी ॥ ममताके सनमुख यूं ध्यावे चाक फिरे ज्युं चकरी रे ॥ प्रा० ॥ १४० ॥ लोक लाजमें लाग रह्या हे लाख लगे ज्युं लकरी ॥ सुगुरु

कहे क्या माला पकरी मकर वणाया मकरी रें॥ प्रा० ॥ १४१ ॥ मोह समान सवल नहि दूजो वंध ण और अनेरा ॥ मोह धरम गुण ज्ञान गमावे अं द्दर होय अंधेरा रे ॥ प्रा० ॥ १४२ ॥ मोह तणे वस सव परिजनकूं मान रह्यो मन मेरा ॥ सुगुरु कहे तु देख दिवाना यह डुरजन हे तेरा रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १४३ ॥ छाप निसाणी डाम लगावे पहिली रूरू नरावे ॥ गया पिरागे पिंरू नरावे न्हावे मूंछ मुंरूा वे रे ॥ प्रा० ॥ १४४ ॥ कासी करवत गले हिमाले मोन रहे वनवासी ॥ केसे आप निपाप नयोतु हि रदे सोच विमासी रे ॥ प्रा० ॥ १४५ ॥ वद्रीनाथ पहाडा वीचमें ठीके चढकर जावे ॥ जगंनाथने जग नरमायो नात सहु मिल खावे रे ॥ प्रा० ॥ १४६ ॥ सेतवांध रामेसर लिछमन व्रजमें कान कहावे ॥ वे जनाथ वन खंड विराजे झूंटी कला दिखलावे रे ॥ प्रा० ॥ १४७ ॥ कला दिखावे काला गोरा कल जुग में सकलाई ॥ तेल सिंदूर ठरूावे ध्यावे पूजे लोक लुगाई रे ॥ प्रा० ॥ १४८ ॥ नागा नूखा नूत नवानी क्या देवे क्या लेवे ॥ केवल राम अमर अविनाशी ताकूं क्युं नहि सेवे रे ॥ प्रा० ॥ १४९ ॥ जम नांजा

य वहुत नरनारी जिणको गंदो पाणी ॥ उण जल सेती पिंड पखाले मुगति सुहेली जाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५० ॥ जाप जपे पिण सापस पूंछो मोरा मधुरी वाणी ॥ आगो पीछो सरव दिखावे ठाकुरकी पट राणी रे ॥ प्रा० ॥ १५१ ॥ अडसठ तीरथको गुरु पो ह कर ताहि पिता कर माने ॥ कडवी तुंवी होय न मीठी मन मीठो किणवाने रे ॥ प्रा० ॥ १५२ ॥ स त्यशील सोई जल निरमल ब्रह्मज्ञान भर आणी ॥ मनको मेल कटे इण जलसूं सो सरधा परमाणी रे ॥ प्रा० ॥ १५३ ॥ शशि सूरजकूं सीस नमावे ना म निरंतर लेवे ॥ एतो आठो पहर मुसाफर मुगति भुगति नहि देवेरे ॥ प्रा० ॥ १५४ ॥ अपणी करणी पार उतरणी पूछो वेद विज्ञानी ॥ और विधाता मू ढ वखाणे भूला भरमकु ध्यानी रे ॥ प्रा० ॥ १५५ ॥ के जाहर सरव सुलतानी मक्का ओर मदीना ॥ खा जा मीरा हसन हुसेना पीर मदार मकीना रे ॥ प्रा० ॥ १५६ ॥ गाजीखीदर नवि मुरतजा अली अ मर अली असमाना ॥ मुसलमान कोउ अलख पि छाणे अवर सहु मसताना रे ॥ प्रा० ॥ १५७ ॥ भेरूं भूत भवानी ब्रह्मा संकर सील सतीकूं ॥ आखातीज

दिवाली होली राखी राम रतीकूं रें ॥ प्रा० ॥१५८॥ गंगा जमना गृह कुलदेवी गणपति वीर विहारी ॥ आतमराम लखे कोई विरला युं ज्रुले नर नारी रे॥ प्रा० ॥ १५९ ॥ उंचो कुल उंचो पद सवकू उंचो नाम सुहावे ॥ कोट करावे नगर वसावे कूपक वाग खणावे रे ॥ प्रा० ॥ १६० ॥ नाम रहे सो गाम न पाया जोंडू गुरु जरमाया ॥ लख चोरासी तुं फिर आया अजहु नाम न धायारे ॥ प्रा० ॥ १६१ ॥ आवत काल छिनु छिनु नेरा गाफल क्या गुमरावे ॥ मुंदे आण दसुंदर वाजा जाज कहूं कहा जावे रे ॥ प्रा० ॥ १६२ ॥ कंठ गहे जव जावन आवे सेंना सें न वतावे ॥ पहिली चेत सुगुरु समझावे युं क्या जन मगमावे रे ॥ प्रा० ॥ १६३ ॥ जगमें आय जमा सव खाइ कौन कमाइ कीधी ॥ नीति धरमकी करी अनीती रीती करमकी लीधी रे ॥ प्रा० ॥ १६४ ॥ परकी तात करे क्या [illegible] कुण वात [illegible] ॥ सुगरु कहाय सरस [illegible] २ अजहुं [illegible] जीती रे [illegible] ॥ १ [illegible] नर अ [illegible] ॥ १६

ह्या डुनियां दो जगमे आपा आप न चीनां ॥ परकी
तात सुणावत परकूं कहवेकूं परवीणा रे ॥ प्रा० ॥
॥ १६७ ॥ आगम अरथ सुणो सदगुरुपे सुनता कर
मज कटे ॥ वचो नही तुम विकथासेती कुणसूं घ
डाइ कट्टे रे ॥ प्रा० ॥ १६८ ॥ हांसल कोन विराणी
वाते क्या लाहालढ खट्टे ॥ नाहक निगुणा मुंड प
चावे रसना राम न रट्टे रे ॥ प्रा० ॥ १६९ ॥ ना गुरु
खाऊं कान विंधाउं नामे सीस गुथाउं ॥ नां डुख पां
ऊ कुगति सिधाउं नामे कुगुरु कहांऊ रे ॥ प्रा० ॥
॥ १७० ॥ नां पाथरकूं सीसनमाउं नामे तीरथ जाउ
॥ नां कलजुगिया देव मनाउ ना मे उणकूं ध्याउ रे
॥ प्रा० ॥ १७१ ॥ स्वारथ आप परम परमारथ विक
लारथ मोहजाल ॥ भरमारथमे भुल भटकणां कर
मा रथमे काल रे ॥ प्रा० ॥ १७२ ॥ संवर मारग स्व
र्गे सुगतिको सो सबकूं सुखदाई ॥ जिनके सनमुख
समता आइ उसकी सफल कमाइ रे ॥ प्रा०॥१७३॥
जिण करणीसूं जिनजी पहुता सो करणी सुखदाइ॥
उवे निरमोही नाहि निवाजे अपणी खपकर भाइ
रे ॥ प्रा० ॥ १७४ ॥ हिंसा धरम अने रामाने जयणा
जैन जणाइ ॥ जैनी पिण हिंसा वतलावे क्या जैनी

दिवाली होली राखी राम रतीकूं रें ॥ प्रा० ॥१५८॥
गंगा जमना गृह कुलदेवी गणपति वीर विहारी ॥
आतमराम लखे कोई विरला युं छुले नर नारी रे॥
प्रा० ॥ १५९ ॥ उंचो कुल उंचो पद सवकू उंचो ना
म सुहावे ॥ कोट करावे नगर वसावे कूपक वाग
खणावे रे ॥ प्रा० ॥ १६० ॥ नाम रहे सो गाम न
पाया जोंहू गुरु जरमाया ॥ लख चोरासी तुं फिर
आया अजहु नाम न धायारे ॥ प्रा० ॥ १६१ ॥ आ
वत काख छिनु छिनु नेरा गाफल क्या गुमरावे ॥ मुं
दे आए दसुंदर वाजा जाज कहूं कहा जावे रे ॥
प्रा० ॥ १६२ ॥ कंठ गहे जव जावन आवे सेंना सें
न वतावे ॥ पहिली चेत सुगुरु समझावे युं क्या जन
मगमावे रे ॥ प्रा० ॥ १६३ ॥ जगमें आय जमा स
व खाइ कौन कमाइ कीधी ॥ नीति धरमकी करी
अनीती रीती करमकी लीधी रे ॥ प्रा० ॥ १६४ ॥
परकी तात करे क्या तुझमें कुण कुण वात न वीती
॥ सुगरू कहाय सरम सव खोइ अजहु अजव फ
जीती रे ॥ प्रा० ॥ १६५ ॥ लख चोरासी फिरतां तूं
नर आय वसेरा लीनां ॥ फेर कहाकूं चलना होगा
अपणा फिकर न कीना रें ॥ प्रा० ॥ १६६ ॥ लाग र

ठवी वतलाऊ रे ॥ प्रा० ॥ २०१ ॥ समेत सिखर सि तरंजे जावे वेलां वोज लदावे ॥ धुरकी सरधा सो ही सरधा उर पलट नहि आवे रे ॥ प्रा० ॥२०२॥ साधु अनंता सीधा सो तो शिवपुरमांहि विराजे ॥ सो थानक तुमकूं नहि सूझे स्वर्गसिखरपर ठाजे रे ॥ प्रा० ॥ २०३ ॥ देखादेखी सवही जावे कर-जोमी जसगावे ॥ पूजा पाती प्रेम लगावे पावक जी-व जलावे रे ॥ प्रा० ॥ २०४ ॥ सीस नमाय करे नि-त सेवा केसे सदगति पावे ॥ इस मूरतकूं परतख देख्या उवे तो याद न आवे रे॥ प्रा० ॥ २०५ ॥ ल-डकी खेले घुडिया सेती वालपणे वचकानी ॥ खेल खिलोना नेद न समझे नामन जोग जुलानी रे ॥ प्रा० ॥ २०६ ॥ गोणे जाय गुपति गुडखायो असल नकल उर आनी ॥ तेसे जूंटी साची मानी मूढ मि थ्या मति वानी रे ॥ प्रा० ॥ २०७ ॥ परमेश्वरकूं क्या पहिचाने मूढमती मतवारा ॥ परमेश्वरकूं जे पहि-चाने जिसके उर उजवारा रे ॥ प्रा० ॥ २०८ ॥क्या पाथरमें हे परमेश्वर जिसकी जोति उजाहारा ॥ पाथरमें परमेश्वर नाही हे परमेश्वर न्यारा रे ॥ प्रा० ॥ २०९ ॥ दरव निखेपे गरज न सरसी जोवो हिर

या ॥ मूरख मनमें मूलन बुझे ए मारग दुखदाया रे ॥ प्रा० ॥ १९३ ॥ पाहन धेनु पय नवि आपे चंद किरण नहि बाले ॥ तिम हिंसामे धरम न होवे स्यूं कुमती भ्रम घाले रे ॥ प्रा० ॥ १९४ ॥ देव निरंजन गुरु गुणवंता दया धरम सुध वाणी ॥ ज्ञान विज्ञान विवेक विचारे ए सम कित सरधानी रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १९५ ॥ वीतरागकी छवी निरागी क्या देख्या फलदाई ॥ जोलो मूल मिथ्यात न जावे गरज सरे नहि कांई रे ॥ प्रा० ॥ १९६ ॥ पहिली देव धरम गुरु तीनुं सांच झूट परखीजे ॥ फिर पीछे तप जप किरियासूं आतम कारज कीजे रे ॥ प्रा० ॥ १९७ ॥ जिन कलपी जिनराज कहावे जिणकूं कुण नहि ध्यावे ॥ पिण कलजुगिया परतख पापी हिंसा जग तवतावे रे ॥ प्रा० ॥ १९८ ॥ हिंसा जगत मिथ्याती माने ज्ञाताको मन नावे ॥ देव निरंजन जोति सरूपी ताकूं सीस नमावे रे ॥ प्रा० ॥ १९९ ॥ सिद्ध खेत उहे चेतालो जहां उवे साहिव मेरा ॥ अनंत चोवीसी मांहि समाई झिगमिग जोति उजेरा रे ॥ प्रा० ॥ २०० ॥ उण देवाकूहुं नित वांदू में उण पदकूं ध्याऊ ॥ उवे मुजकूं देखे निश वासर कोन

वे रे ॥ प्रा० ॥ २१७ ॥ कुधरम त्याग कुगुरुकी संगति क्या षटकाय संतावे ॥ ममता मार कह्यो कर मेरो ज्यूं निरभय पद पावे रे ॥ प्रा० ॥ २१९ ॥ आतमघाती मूढ मिथ्याती आपो आप वखाणे ॥ जालम जाती पूजा पाती परमेश्वर नहि जाणे रे ॥प्रा० ॥ २२० ॥ मारण मरण सही सब तीरथ भोइ भरम निवारो ॥ तारण तिरण नही जल जमना निश्चै एह अवधारो रे ॥ प्रा० ॥ २२१॥ अमल कहे सो आमल कहिये अकल कहे सो अकली ॥ सांच कहे सो साधू कहिये नकल करे सो नकली रे ॥ प्रा०२२२॥ धरम करे सो धरमी कहिये पाप करे सो पापी ॥ वाद करे सो वादी कहिये थाप करे ज्यो थापी रे॥ प्रा० ॥ २२३ ॥ क्रोध करे सो क्रोधी कहिये मान करे सो मानी ॥ दंभ करे सो दंभी कहिये दान करे सो दानी रे ॥ प्रा० ॥ २२४ ॥ जोड करे सो जोडा कहिये राग करे सो रागी ॥ राग द्वेष तज भये निरागी सो कहिये वैरागी रे ॥ प्रा० ॥ २२५ ॥ गुदडी मांहि धका धक जैसे त्युं साजनका मेला ॥ खलक मुलक खुवी महवुवी छांडी ठेल अकेला रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २२६ ॥ हंस मुसाफर मारगलागा परिजन मिल

देवि मासी ॥ जाव धरीने साहिब सेवो जिम टल जाय चोरासी रे ॥ प्रा० ॥ २१० ॥ दरव पूजासे प्रञ्जु नहि रीजे वीतो देव निरागी ॥ जाव पूजा जगवंतरी करता सब दुख जावे जागी रे ॥ प्रा०॥२११॥ किसकूं ध्याऊ किसकूं गाऊ किसकूं सीस नमाऊं॥ देहरा सरमे वहिरा वेठा मेउण पासन जाऊं रे ॥ प्रा० ॥ २१२ ॥ क्या जल न्हाऊ क्या फल खाऊ क्या देखुं दिखलाऊ ॥ एति वात मुजे वतलावो उन चरने चितलाऊ रे ॥ प्रा० ॥ २१३ ॥ गुंगा देव गुरू गुणहीणा उनसे क्या कछु पावे ॥ उवे तो आप अचेतन दावे जावे मूल गमावे रे ॥ प्रा०॥२१४॥ जेसा गुरू तेसा पूजेरा मिथ्या वात सुहावे ॥ उवे मुजकू क्या वाच सुनावे क्या समजे समजावे रे ॥ प्रा० ॥ २१५ ॥ के गंगाजल जमना न्हावे के पाषाण पुजावे ॥ के ऊंचापग शिर लटकावे के किरिया दिखलावे रे ॥ प्रा० ॥ २१६ ॥ के सुचि सोधन सूग निमाणा के नख केश वढावे ॥ ब्रह्मज्ञान आतम विन परचे पार ब्रह्म नहि पावे रे ॥ प्रा० ॥ २१७ ॥ जल जठरागन प्यास बुजावे तनकी तपत मिटावे॥ जल जगदीश न सुध मिलावे करम जमान घटा-

रे ॥ प्रा० ॥ २३५ ॥ धरम विवेक विना गुन संगति फिर फिरवो चोरासी ॥ किसनलाल कहे चेतसयां ना फिर पीछे पिछतासी रे ॥ प्रा० ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन वृन्द सुहावनी मन भाविनी तमाम ॥ वरनी विवेकमंजरी किसनलाल अभिराम ॥ १ ॥ कहुं प्रगट कछु गुप्त हे लीज्यो अर्थ सुधार ॥ कवि कोविद करुणा करी कीज्यो पर उपगार ॥ २ ॥ इति विवेकमंजरी ॥

॥ मातसाकंभ राजरानी लाज तुं रख ले भवानी ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुरुकी सीख सुनो भाया करो जिन धरम छोरू माया ॥ सुभग फल पुन्य तणा गाया अशुभ फल अघका दरसाया ॥ वसुकर्माकी प्रकृती एकसो अडतालीस जिन जिन रसदे उदे हुवा ते इम भाप्यो जगदीश निकाचित निछित बंध भारी २ ॥१॥ टरे नहि करम रेखटारी शुभाशुभ भुगते नरनारी ॥ टेर ॥ प्रथम जिन मरुदेवी जाया नाभिकुल मंडन सुख दाया वरस एक अहार नहि पाया चरम जिन द्विज कुलमें आया संजमले तपस्या करी ग

मिल जूरे ॥ उन परजनसूं प्रीत वणाई हरष मनोरथ पूरे रे ॥ प्रा० ॥ २२७ ॥ ज्युं निद्राके वस नरनारी सोचे सुरतन कांई ॥ त्यूं यह चेतन जनमजनमकी खवर कहुं न वताई रे ॥ प्रा० ॥ २२८ ॥ जेसे वालो मद मतवालो विकल सरूपी डोले ॥ तेसे नाम करमके तोले जीव समझ विन वोले रे ॥ प्रा० ॥२२९॥ पर ममता कर वंधन वंधे तव तहां नरक सिधाए ॥ आरज देश अनारज कुलमें कुंणकुंण करम कमाए रे ॥ प्रा० ॥ २३० ॥ तप जप किरिया कष्ट प्रभावे सुर पदवी पिण पाई ॥ गति तिरयंच विगल थावरमें चिहुं भेदे वतलाई रे ॥ प्रा० ॥ २३१ ॥ केवल ज्ञानी ज्ञान दिवाकर पांचे गति परकासी ॥ पांचो की चरचा जिन मतमें डेर अज्ञान अभ्यासी रे ॥ प्रा० ॥ २३२ ॥ दन्तकथा कहि जग भरमावे मुजकूं आवे हांसी ॥ आप करे शिरदे साहिवके जे नविना जगवासी रे ॥ प्रा० ॥ २३३ ॥ लोभी मित कूगुरुकी संगति ए दोनुंसे डरिये ॥ दुरजनको वेसास न करिये अजल विना क्युं मरिये रे ॥ प्रा०॥२३४॥ सदगुरु सीख सदा उर धरिये मोह करमसूं लरिये॥ ए पर वचन आराधी तरिये दोनुं दुख परहरिये

रे ॥ प्रा० ॥ २३५ ॥ धरम विवेक विना गुन संगति फिर फिरवो चोरासी ॥ किसनलाल कहे चेतसयां ना फिर पीठे पिछतासी रे ॥ प्रा० ॥ २३६ ॥

॥ दोहा ॥

सज्जन वृन्द सुहावनी मन भाविनी तमाम ॥ वरनी विवेकमंजरी किसनलाल अभिराम ॥ १ ॥ कहुं प्रगट कछु गुप्त हे लीज्यो अर्थ सुधार ॥ कवि कोविद करुणा करी कीज्यो पर उपगार ॥ २ ॥

इति विवेकमंजरी ॥

॥ मातसाकंभ राजरानी लाज तुं रख ले भवानी ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुरुकी सीख सुनो भाया करो जिन धरम ठोरू साया ॥ सुभग फल पुन्य तणा गाया अशुभ फल अघका दरसाया ॥ वसुकर्मांकी प्रकृती एकसो अडतालीस जिंन जिंन रसदे उदे हुवा ते इम भा ष्यो जगदीश निकाचित निद्धित वंध भारी २ ॥१॥ टरे नहि करम रेखटारी शुभाशुभ भुगते नरना री ॥ टेर ॥ प्रथम जिन मरुदेवी जाया नाभिकुल मं डन सुख दाया वरस एक अहार नहि पाया चरम जिन द्विज कुलमें आया संजमले तपस्या करी

यां अनारज देस चीम परीसा सुरनर तिरिका सह न किया तज हैस पुरा कृत जुगत्या अवतारी १ ॥ टरे० ॥ २ ॥ पांकवा राज सन्ना कीधी देख डुर योधन वररिकी हास निंदा सुणपर सिकी कपट क रि राजसिरी लीधी सात जणा वनवासमें चमिया पामर जेम वारे वरस लग वहु डुख देख्या ते कहि सकिये केम राज लियो डुरयोधन मारी ॥२॥ टरे० ॥ ३ ॥ पुन्यसे माधव इण लोगी सायवी इंद्र जिसी चोगी द्वारका वाली जदजोगी संपदा सुपना जिम होगी चोगवतां डुख मानसी निकल्या वंधव दोय पांडव मथुरा जातां विचमें मरण प्रापति होय गया वलचद्र लेन वारी १ ॥ टरे० ॥ ४ ॥ दशा डुर हर चंदकी आई अयोध्या नगरी ठिटकाई गयो रिपु व हुल देश मांई चरुयो जल नीच घरे जाई वेची सु तारा लोचनी ते डुख कह्यो न जाय सुत मरणादिक कष्ट पड्या पिण सत नहि गेड्यो राय प्रग सुर हो- य कही विधि सारी १ ॥ टरे० ॥ ५ ॥ कष्टसिरी पा ल वहुत पाया किया सो करम उदे आया ध्यान तिण नव पदका ध्याया उसीसे आनंद वरताया श्रे णक पिजरेमें दियो कुरकट राजा चंद ब्रह्मदत नामे

वारमो चक्री हुवो करमसे अंध आठमो डुब मरयो वारी २ ॥ टेर० ॥ ६ ॥ अंजना मेण रेहासीता सुन्न डा दवदंती गीता द्रोपदीमें वीतक वहु वीता घोर डुख सह्या मार पीता चंदनवाला नृप सुता मोलवि की अन मोल इत्यादिक सतियाने आवी करम दि या ऊक झोल शीलमें रही दृढता धारी २ ॥ टेर० ॥ ७ ॥ पाप वट रावनके ठायो कुवदकर सीता हर लायो राम दलवादल ले आयो चक्रसे लिछमनजी ढायो इत्यादिक वहु जीवने करमां किया फजीत व लिहारीमें उन पुरुषाकी करम कटकने जीत सुगति गढ लीधो सुखकारी २ ॥ टेर० ॥ ८ ॥ छोरुदे कर्म वंध हेतूँ हिये धर टूटणकाव तुँ दया जव अरणवमें सेतु राख दिल तिस्योचाहे जे तुं किसनलाल साचा कहे चेत सकेतोचेत कर सुकृत गाफिल मत रहे तुं शि रपर आया श्वेत आतमा सुख पासीधारी२॥टेर०९॥

॥ नेपाल सहरसे आया महाराजा केसर सिंहजी ॥ ए देशी ॥

॥ सुज्ञानी जीवा परपरी वाद न कीजिये मतिवं ता प्राणी आगम साख सुन लीजिये ॥ टेर ॥ पूव

॥ ३ ॥ हलवे वोलणमें नहि समझे जाणे ढोल व जाया ॥ मने करे तो इूणी होवे लेसोटो धमकाया॥ देखो० ॥ ४ ॥ मन माने जिहां फिरे चटकती सारी रीत उठायां ॥ गुंगट गाती इूर किया सव मेट दि वी अवखाया ॥ देखो० ॥ ५ ॥ इण मोल्यासूं कांइ यन होवे थोती करे हे वकाया ॥ में न आइजद धूं ल उडेठी याम्हारा घरकी माया ॥ देखो० ॥ ६ ॥ हाथ जोमने खांवद वोले में तो सूं चरपाया ॥ इण पग डारी सरम राखदे तोही में लाख कमाया ॥ दे खो० ॥ ७ ॥ लायलंकारी मिली करकसा पाप उदे मुज आया ॥ मने करां नहि मनुप हो स्यांतो करो जुमनका चाया ॥ देखो० ॥ ८ ॥ इतरा काया किण परहुय गया एक लुगाई लाया ॥ पेली पोठ विचारी क्युंना अवकांईहे पिठतायां ॥ देखो० ॥ ए ॥ सीधी लुगायां मिल गई थाने दमका नाहि खुलाया ॥ ति णसूं गरज नही हे थाने वोलो मगज चराया ॥ दे खो० ॥ १० ॥ ब्रह्मा विसनू महेश जगतमें मो आ गल घवराया ॥ तू दीसे माठरको जायो जवराकेइ चलाया ॥ देखो० ॥ ११ ॥ नारी सेती करी समानो कोइ फते नहि पाया ॥ मार मरोमो वेठ जाय तो

लाखों लोक हराया ॥ देखो० ॥ १२ ॥ सारी नारी नहीं बे सारखी किसन कहे सुन नाया ॥ प्रीतम कहए कदे नहि लोपे जाणे ईश्वर पाया॥देखो०१३॥

॥ राग वसंत ब्रजहोरी ॥

॥ नित आया करो घरका सव राजी नित०
॥ ए देशी ॥

॥ करमां तणी केम कटेरे पासी करमां तणी० ॥टेर॥ रागरू द्वेष लग्या संग डोलत पाप अठारे डुखरासी ॥ करमां० ॥ १ ॥ हिंसा करी ते हार हियाको करुणा करी रे घरकी दासी ॥ करमां०॥ २ ॥ वांध कमर लाग्यो आश्रवमें येहिज भ्रमावे लख चोरासी ॥ करमां० ॥ ३ ॥ कामदार थारे क्रोध वण्यो रे जिया ममता मुख्य वणी रे मांसी ॥ करमां०॥४॥ धरम उपर ते धाडो रे पाड्यो सम्यक् ज्ञान गयो रे नासी ॥ करमां० ॥ ५ ॥ विषय कषाया लोन संग राच्यो डुरमति वनिता दिलनासी ॥ करमां० ॥६॥ समकित रतन गम्यो घट नीतर क्या ढुंढत मथुरा कासी ॥ करमां० ॥ ७ ॥ किसन कहे प्रनु पास नजे तो तुरत मिले पद अविनासी ॥ करमां० ॥ ८ ॥

॥ राग वसंत होरी काफी ॥

॥ खेलो रे जन ज्ञानकी होरी जरे जिम पापकी डोरी० ॥ खेलो रे० ॥ टेर ॥ नरनव पाय वसंत ऋतुसम अनुनोफाग रमोरी ज्ञान गुलाल अबीर उडावो समता केसर रंग घोरी वुरा मुखसे नवकोरी ॥ खेलो० ॥ १ ॥ क्रोध मान मद धूड उरुावो पाप करम नर ऊोरी रुोलची दान दया पिचकारी निज गुण होद नरोरी घृथा जलकूं मत ढोरी ॥ खेलो०॥ ॥ २ ॥ धरम शुकल दोय ताल बजावो नावनावंसरि सोरी डफ संतोष मृदंग महारुचि समकित वीण गहोरी प्रज्ञु गुण गाय रिजोरी ॥ खेलो० ॥ ३ ॥ धीरज धोती जैणा कर जामो नाव नलो रुपटोरी विनय रुमाल विवेक पाग शिर नक्तिसुं शेली धरोरि शील शुन वेस नवोरी ॥ खेलो० ॥ ४ ॥ सुमति सखी संग फाग मचावो कुमति संग तजदोरी किस्न कहें जिन धरम अराधो शिव वधू वेगवरोरी मिथ्या मत ढोरु परोरी ॥ खेलो० ॥ ५ ॥

॥ पानीमें मीन पियासी ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिको कहिये गृहवासी रे मु०जाके नाव कुटंब गुणरासी रे ॥ मुनि० ॥ टेर ॥ धीरज तात क्ष

मा जस जननी दादी भान दयासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ १ ॥ चारित चाचो भाव भतीजो काकी शुभकिरियासी रे ॥ मुनि०॥ २ ॥ उद्यम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र विभासी रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ ज्ञान सुपुत्र परमारथ पोतो तत्वरुची वरमासी रे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ दान सुदादो मार्दव मामो पुत्र वधू समतासी रे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ आगम सुसरो सासू सुमती भावना श्रेष्ठ भुवासी रे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ संजम सालो वहिन चेतना संवसगो सुविलासी रे ॥ मुनि० ॥ ॥ ७ ॥ अमर कुटंब किसन ढिग जिनके ते मुनि शिवपद पासी रे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

॥ राग ठुमरी ॥

॥ गुरुवचन सुनत मेरी भूल भगी ॥ टेर ॥ करम सुभाव भाव चेतनको भिन्न पिछानि सुमति जगी ॥ गुरु० ॥ १ ॥ निज अनुभूति सहज ज्ञायकता सोचिरुरुपतुस मेल पगी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ स्याद वाद धुनी निरमल जलसे विमल भई समभाव लगी ॥ गुरु० ॥३॥ संसय मोह भरमता विघटी गप्रटी निजातम सोजसगी ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ किसनसु आतम ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु सुवखान वगी ॥ गुरु०॥५॥

॥ मारूरागमें नेम राजमतीके नव नव हो॥ मत छांडो रे पिया कोइ थारे म्हारे नव नवकेरो साथ जीमति छांको रे पिया ॥ टेर॥ धन पति नामे राज बीजी नव पेलामें आय ॥ धनवती राणीमें हुई जद प्रेम निनायो धापजी ॥ मत० ॥ १ ॥ स्वर्ग सुधरमें देवताजी मित्रपणे अभिराम ॥ नव बीजामें स्नेह घणो छो अब किम तोडो स्वामजी ॥ मत० ॥ २ ॥ चित्रगती विद्या धरूजी नव तीजाके माय ॥ रत्नव ती पटरागनीजी में हुंती सुखदायजी ॥ मत० ॥३॥ माहेंद्रनाके निरजराजी नव चोथामें होय ॥ प्रेम प रस परिपोषताजी जीव एक तनु दोयजी ॥ मत० ॥ ॥ ४ ॥ अपराजित नव पांचमेजी आप हुवा नरना- थ ॥ प्रिय मति राणी प्रेम हुतो जिम चंद कमोदनी साथ जी ॥ मत० ॥ ५ ॥ आरणे स्वर्गे त्रिदशाजी न वरसमे महानाग ॥ चातक जल धरनी परेजी छो उतकृष्टो रागजी ॥ मत० ॥ ६ ॥ संखराय नव सात में जी जसोमती वरनार॥ दूर न मनसे हो वताजी पूरन हू तो प्यारजी ॥ मत० ॥ ७ ॥ स्वर्ग पचीसमें शोनताजी सुहृदपणे उदार ॥ अमर हुवा नव आ- उमें जी इण नवे तुम नरतारजी ॥ मत० ॥ ८ ॥

घरमें रही वरस च्यारसे जी पण सत केवल सार ॥ वरस एक छदमस्थ रही प्रजु पहली ही मुगति म जारजी ॥ मत० ॥ ए ॥ बाल ब्रह्मचारी महाजी राजमती रह नेम ॥ कृष्ण कहे धन दंपतीजी तिणे अविचल कीधो प्रेमजी ॥ मत० ॥ १० ॥

॥ ढोल्यारी दासी गेदो मति तोमो ए०॥ए देशी॥

॥ मानव जव एलो मति हारो रे हांरे जीवा सु गुरु सिखामण धारो रे ॥ टेर ॥ दश दृष्टांते दोहि लो रे ॥ हां० ॥ लाधोयो मनुष जमारो रे ॥ मा० ॥ दान सियल तप जावना रे ॥ जी० ॥ रुचे सोहि क रो अंगीकारो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ नर जव आरज दे शमें रे ॥ हां० ॥ ऊंचे कुल दीर्घायु सारो रे ॥मा०॥ पुरणेंद्री शरीर निरोगता रे ॥ हां० ॥ पुन्य जोगे मिल्या अणगारो रे ॥ मा० ॥ २ ॥ सूतर सुणवो दो हिलो रे ॥ हां० ॥ सुध समकित सुविचारो रे॥मा० धरममे पराक्रम फोरवो रे ॥ हां०॥ मिल्या दश वो ल उदारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुखसर सब डुखमें र सारे ॥ हां० ॥ विषसम विषय विकारो रे ॥ मा० ॥ फल किंपाक रीउपमा रे ॥ हां० ॥ मधुलिप्त जिम खरुग धारो रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अथिरायु जिम ज

अंजली रे ॥ हां० ॥ वीजलिनो झवकारो रे ॥मा०॥ इन्द्रजाल घन माल ज्युं रे ॥ हां० ॥ सुपना ज्युं अ नित्य संसारो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन संपदा पा यने रे ॥ हां० ॥ गर्व करे सी गिवारो रे ॥ मा० ॥ पुदगलरी मुरछा बुरी रे ॥ हां० ॥ इम जाणि मम ता निवारो रे ॥ मा०॥ ६ ॥ सब कोइ स्वारथना स गारे ॥ हां० ॥ तुं किणरोने कुण थारो रे ॥ मा० ॥ मोहनी कर मरी जालमें रे ॥ हां० ॥ घेर लियो प रिवारो रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ सगति सारू व्रत आदरो रे ॥ हां० ॥ जिम होवे जव निसतारो रे ॥ मा० ॥ स्वर्ग मुगति सुख सो लहे रे ॥ हां० ॥ किसन धर म जस प्यारो रे ॥ मा० ॥ ८ ॥

॥ पदम प्रजु पावन नाम तिहारो ॥ एदेशी ॥

॥ दरव करमका बंधन काटे जाव करमका फंदा॥ नोकर मतका नाता तोडे जरम न जाव निकंदा रे ॥ १ ॥ जविका जज प्रजु पास जिनंदा जाकूं सेवत सुर नर वृन्दा रे ॥ जविका० ॥ आंकडी ॥ पुन्य पा पका परदा फाडे सोफाजल फर जंदा ॥ फटे अ ज्ञान जरमके बादल प्रगटे ज्ञान दिणंदा रे ॥जवि० ॥ २ ॥ लोका लोक निजर सब आवे बंधन बंध मु

कंदा ॥ हद वेहद दोनुं डव दोखे जीवा जीव जि
णंदा रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ च्यारुं गति च्यारूं दरवाजा
धर गिर दीप समंदा ॥ सरव गतागति लख चोरा
सी नेदा नेद लखंदा रे ॥ नवि० ॥ ४ ॥ तिण अव
सर इंदरासन कंपे अवधि करी देखंदा ॥ नमसका
र केवल गुरु ज्ञानी इंद्र मुखे आखंदारे ॥नवि०॥५॥
इंद्र इंद्राणी मिलकर आवे पावां कमल ठवंदा ॥ गु
ण गावे नाटक दिखलावे अपठर अति आनंदा रे
॥ नवि० ॥ ६ ॥ अधर आकासे वाजा वाजे मधुरी
ध्वनि मन ठंदा ॥ दरव सुगंधा परिमल वासे मेह
क मेहक मे कंदा रे ॥ नवि० ॥ ७ ॥ देवी देव करे
वहु महिमा गिणत नही सुर वृंदा ॥ सकल सुरासु
र सवद सुणावे जै जै जै जिणचंदा रे ॥ नवि०॥८॥
कमलासन वेठी परकासे वाणी केवल कंदा ॥ संश
य दूर हरे नवि जनके धरम दया दाखंदा रे ॥न०
॥ ए ॥ सत्यशील संतोष वतावे मारग मुगति मुणं
दा ॥ ज्ञान ध्यान धीरज मन थिरता करता करत
कहंदा रे ॥ नवि० ॥ १० ॥ नंजन कमठ मान मन
रंजन अश्वसेन कुलचंदा ॥ वंदत किसन युगल कर
जोमी मेटण नवडुख दंदा रे ॥ नवि० ॥ ११ ·

॥ कलशः ॥

॥ नवसिंधु वर्धन चंडि कोपम कुमति ताप सु चंदनः सभनक्ति नर निर्जर पुरंदर निकर विरचित चंदनः ॥ घन कुशलकारी डुरित दारी सकल जगद जिनंदनः संन्नवतु नविनां न्नक्ति मनसा जन निवा मानंदनः ॥ १ ॥

॥ मत्तगयंद ॥

॥ बुद्धि सुप्रापतिको फल एहिज तत्व विचार क रे जन कोइ देइ निरोग सुप्रायतिको फल दान दया व्रत धारन होइ ॥ प्रीति वढे सव लोकनमें जिम वो लत जान गिरा फल सोई कृष्ण कहे धन प्रापति को फल सुकृत काम लगे शुन्न जोई॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ तीन कोरू ऊपरे इक्यासी लाख वारेसेंस नव्र से सित्तर मण गोलो एक मानिये आयो ऊर्ध्व लो क सेती मासषट दिन षट पेर षट घरी षट पल षट जानिये ॥ ताकी नाम राज एक ऐसे अधो सा तराज सातराज ऊर्ध्वलोक ज्ञानसे प्रमानिये तहमे व सरवर्ड निसंख हे किसनलाल ज्ञानी देव नाख्यो जामे ससेहु न आनिये ॥ ३ ॥ पेलो कहे खेती होत

वरसे सघन घन वीजो कहे भूमि सेतीखेती निपज-
ति हे तीजो कहे वीजसेती चोथो कहे हलसेती
हाली सेती पांचमो बतावे सोही ठति हे चठो कहे
वेलसेती सातमो निखेदे यारखेती भाग्यसेती एसी
हिये दरसति हे एक पक्षताने यामे वोही मिथ्या
दृष्टि जीव कृष्णलाल माने सवेसोही जिनमति है॥३॥

॥ अथ गीया ठदः ॥ प्रथम कोष्टक स्थाप पूरव
नैरत कोंणे फिर धरो उत्तर दिश पुनि वायव कोंणे
मध्यम कोष्टक फिर भरो विदिशि अगनी दक्षिण
दिशिमें फिर ईशाने आणिये पछिम दिशि इम कि
सन विधियुत विजय यंत्र वखाणिये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टादशमा जिन तणो जनक नाम सुखदाय॥
तावत अक्षर दूर कर वचे सोवे गदिराय ॥ ५ ॥
भूअंवर दोन्युं मिल्या नाम भणी जे तास ॥ किसन
कहे तिन पापणी सव जग कीनो दास ॥ ६ ॥ एक
वासरे साथने थिर न रहे परिणाम ॥ तपस्या कर
णी किसनिया शूरवीरना काम ॥ ७ ॥ लगलगं कर
तां लगे मतलग मतलग लग्ग ॥ केर सांग्ररीना

---

१ 'सुदर्शन, २ 'भूल, ३ 'अधर,

लगे वोर मोगरी लग्ग ॥ ८ ॥ सुलटावसुं नहि की जिये वर न दोय लघु जोय ॥ उलटा गोमंनकूं करो जिम सुख वंछित होय ॥ ९ ॥ सुलटावस करिये स दा वरन दोय लघु जोय ॥ उलटा सव जगसें रहो जिम सुख वंछित होय ॥ १० ॥ जिण कारण रावण हण्यो डुख पाया रघुनाथ ॥ जोजन करता जूमिपर सामतना खो जात ॥११॥ चंद पियारो विरहनी संजो गनिकूं जान ॥ इण दोहारो अर्थ करे सो पंडित प रवान ॥ १२ ॥ करनें करन करनी करी करन करन की कीन ॥ करेंनी करनी करनकी कूकरनी करनी न ॥ १३ ॥ क्रोध विवेक ललाटमें काम लाज दो नैन॥ लोज दया हिरदे वसे जूषमान उरके न ॥ १४ ॥ तीतर वरनी वादली विधवा काली रेख ॥ वा वर से वा घर करे इणमें मीन न मेप ॥ १५ ॥ आयु घटे तृष्णा वढे घटवढ जाव विशेष ॥ करम रेख घटवढ नहीं इणमें० ॥ १६ ॥ अण होणी होवे नही कोरू जतन कर देख ॥ होण हार सोही हुवे इणमें० ॥ ॥ १७ ॥ पापी नरसूं प्रीतडी धरमी नरसूं द्वेष ॥ डु रगति गामी जीव ते इणमें० ॥ १८ ॥ निज आतम

१ 'मद, २ 'इन्द्रिया, ३ 'मन, ४ 'हातोसें, ५ 'हस्तिनी,

मेलो करे ठिड़ पराया देख ॥ सो निर बुद्धी जीवहे इणमें० ॥ १ए ॥ अवसर पाय न चेतिया नर जव गयो अलेख ॥ ते नर वहु पिछतावसी इणमें० ॥२०॥ अव क्युं दाडुर थर हरे पकड्यो ठेल जुजंग ॥ कारज तो तिनका सख्या जिण तामसमारी अंग ॥२१॥

॥ सवैया ॥ गुजरि एक चली पय वेचन पोरुश चोकिही राजडुवारे एक गरुी जर दूध लियो जल गेर दियो तितनो इम सारे ॥ दंड दियो सव केरु पियो इक न्याव कियो सुधराज कुमारे आवत आदिम अंतिमके कहा दाम विचार कहो निरधारे ॥ २२॥

॥ कवित्त ॥

॥ च्यार ठोर साधु एक श्रावक दिदार कर त्यागी हरि काय उपदेश दिलधारके पेली राखी हुंती तामे आधी पुरी ठोरुदीनी दूसरा मुनिके पास तीजे हिसे ठारके ॥ आठमां हिसाकी तजी तीसरा मुनीके जाय शेष रही च्यार ठोरुी चोथा अणगारके कृष्ण लाल कहे सारीके तीही वनास्पती करके हिसाव वोलो श्रावको विचारके ॥ २२ ॥

---

१ 'प्रथम.'

॥ दोहा ॥

॥ एक शेष चोवीसमें गिणत इसीपर जाण ॥ जिता सेष जितरा गुणा कर देखो परमाण ॥२३॥ कहण रहण नहि एकसी वहु मत लीनां हेर ॥ किसन लाल साची कहे कहण रहणमें फेर ॥ २४ ॥ होत कहा कथनी किये विन धारणा गिंवार ॥ नर वरसो हि ज्यो सिंह ज्यो मन मतंगहनि मार ॥ २५ ॥ तन केतो त्यागी घने मन त्यागी कमलेख ॥ वातनके महाराज सव किसनलाल तो शेष ॥ २६ ॥ कथनी तो कथ हे घनी करनी करे न कोय ॥ रीतावावे ऊंवरा धान कहांसे होय ॥ २७ ॥ कहण हरण इक सारखी ज्यो होवे संसार ॥ थावे तेहने अंजली यह जव पारावार ॥ २८ ॥ भेषधारि करनो कहा मन जीतनसे काम ॥ पेक गिणनते काम कहा चोखि लिये जव आम ॥ २९ ॥

॥ कवित्त ॥

॥ अरिहंत[1] सिद्ध[2] प्रवचन[3] गुणवंत गुरु[4] स्थवरने[5] वहु श्रुती[6] तपसी[7] वखाणिये ज्ञणो गुणे वार वार[8] समकित[9] विनेसार[10] आवश्यकविधी[11] शील[12] शुद्ध मन आणिये ॥ ध्यान[13] दोय तप[14] दान[15] व्यावेच[16] समाधीमान[17] अ

पूरव ज्ञान जक्ति आगमकी जानिये जैन पंथ थाप तो मिथ्यातकूं उथापे जीवें वीस वोल तीर्थंकर गोत का पिछानिये ॥ ३० ॥

॥ सवैया ॥

॥ गुरु जक्ति किया जवमांहि रुले कवहु नरुले गुरु दुःख दिया अजरामर होय कषाय किया कवहु न हुवे समता रुचिया जव अमृत पान किया जुमरे कवहु न मरे जन जहर पिया मुनिराज तिरे अति पाप किया कवहु न तिरे प्रजु नामलिया ॥ ३१ ॥

॥ कुंमलिया ॥

॥ झीणो मारग जैनको जाष्यो श्री जगवंत गुरु गम विन पार न लहे कोटि करो वुधिवंत कोटि करो वुधवंत खंत धरि मनमें ऊंची तालो कवहु न खुले गाम विन वैगाकूंची कृष्णलाल इम कहे सुणो नर वुधपर वीणो. जाष्यो श्री जगवंत जैनको मारग झीणो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्वेत कृष्ण दोउ वरन हे चरन नही वहु जा य ॥ मौनी वहु जापी जणो अनयाची अतिचाय ॥ ॥ ३३ ॥ कागज सरिता घन घटा करसनेन दधि पा त्र ॥ अहि कंचुकि इत्यादि वहु अर्थ करो कवि मा

न लीजिये ॥ मित्र वोही जाणिये ज्यो काम पड्या काम देवे एवदार आदमीको नरोसो न कीजिये न र कहा नारी कहा ठेटो अरु वभो कहा आपको न चाहे ताके धूडला रे दीजिये ॥ ५६ ॥ गंधसार ऊप रे ज्यो मक्षिका न वैठे आय चंदनको मोल तामें घा टतो न मानीहे मनीको परीख जाणे जोहरी ज गतमांही हियो हग नंग सोतो पाच काच जानी हे ॥ जाके ढिग देव डुम चिंतामणी काम धेनु ताके तो सदीव काल आनंद वखानी हे पक्षपात ठाने कू रु आपहीकी ताने रूढ मूढ जो न माने तो हमारे कहा हानी हे ॥ ५७ ॥ मेंणदांते लोह चिणा चावे तो न पावे सुख पांव करि आगिखूं देताकूं डुख दा नी है पिसुन पराई करे राईकी सुमेर जेती कुगति को घर पाप पंदरमो ठानी है नीच नीच महा निंदक चंमाल व्रो झंठा आल दे

खलु सुत्रामात्मजजिनोगतं हा तृष्णायुस्तदपिनगतः पार्श्वचरणे ॥ ५ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान सियल तप जावको सुयश न जाके मांहि॥ किसन कहे तेहि ग्रंथको स्वपने हु देखिये नाहि ॥ ॥ ६० ॥ लाख वातकी एक हे क्यों करिये वकवाद॥ ज्यो पीवे सो जानही अनुजव रसको स्वाद ॥६१॥ अजे उदासी ना जयो देख जगत व्यवहार ॥ किसन कहे सुज जीवकूं लानत वार हजार ॥ ६२ ॥ आतम निंदा माहरी करतां नावे ओरू ॥ दूपण देखूं पारका ए सुज मोटी खोरू ॥ ६३ ॥ पेखत रागविलकों नयन ठरे सुख पोप ॥ वांचत हृदय प्रमोद दे परमारथसे मोख ॥ ६४ ॥ जो नर राग विलास सुंनि रीजयो नही लिगार ॥ सो पखपाती मूढ जन के वहुलो संसार ॥ ६५ ॥ जक्ति जावसूं मे करूं पंडित सूं अरदास ॥ दीज्यो अर्थ सुधारके मत कीजो उपहास ॥ ६६ ॥ संसकरत जानू नही नहि पिगलको ज्ञान ॥ कवि पंडित करियो कृपा लाल वाल सम जान ॥ ६७ ॥ सुसर कंठ गायन हुवे जाणे राग सुजेद ॥ श्रोता सुण रीजे सही राग पंचमो वेद ॥६७॥

न लीजिये ॥ मित्र वोही जाणिये ज्यो काम पड्या काम देवे एवदार आदमीको भरोसो न कीजिये न र कहा नारी कहा छोटो अरु बमो कहा आपको न चाहे ताके धूडला रे दीजिये ॥ ५६ ॥ गंधसार रूप रे ज्यो मक्षिका न बैठे आय चंदनको मोल तामें घा टतो न मानीहे मनीको परीख जाणे जोहरी ज गतमांही हियो हग भंग सोतो पाच काच जानी हे ॥ जाके ढिग देव द्रुम चिंतामणी काम धेनु ताके तो सदीव काल आनंद वखानी हे पक्षपात ठाने कू रु आपहीकी ताने रूढ मूढ जो न माने तो हमारे कहा हानी हे ॥ ५७ ॥ मेंणदांते लोह चिणा चावे तो न पावे सुख पांव करि आगिखूं देताकूं दुख दा नी हैं पिसुन पराई करे राईकी सुमेर जेती कुगति को घर पाप पंदरमो ठानी है नीच हुं में नीच महा निंदक चंमाल बुरो झूंठा आल देवे ताकूं नरक निसा नी हे निंदकमें तेरा दोष कवहु न पावे मोख सोख जोख धोवी खर काग सो पिछानी है ॥ ५८ ॥

॥ शिखरणी ॥

॥ सदाध्यातावामाक्षणमपिनवामांगजप्रभुश्चिरंपी त्वावामाधररसमवामाजमदकम् ॥ नतारुण्यावामा नहि

खलु सुत्रामात्मजजिनोगतं हा तृष्णायुस्तदपिनगतः पार्श्वचरणे ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान सियल तप भावको सुयश न जाके मांहि॥ किसन कहे तेहि ग्रंथको स्वपने हु देखिये नाहि ॥ ॥ ६० ॥ लाख वातकी एक हे क्यों करिये वकवाद॥ ज्यो पीवे सो जानही अनुभव रसको स्वाद ॥६१॥ अजे उदासी ना भयो देख जगत व्यवहार ॥ किस न कहे मुज जीवकूं लानत वार हजार ॥ ६२ ॥ आ तम निंदा माहरी करतां नावे ओरु ॥ दूषण देखूं पारका ए मुज मोटी खोरु ॥ ६३ ॥ पेखत रागविल कों नयन ठरे सुख पोष ॥ वांचत हृदय प्रमोद दे प रमारथसे मोख ॥ ६४ ॥ जो नर राग विलास सुंनि रीझयो नही लिगार ॥ सो पखपाती मूढ जन के व- हुलो संसार ॥ ६५ ॥ भक्ति भावसूं में करू पंडित सूं अरदास ॥ लीज्यो अर्थ सुधारके मत कीजो उप हास ॥ ६६ ॥ संसकरत जानू नही नहि पिंगलको ज्ञान ॥ कवि पंडित करियो कृपा लाल वाल सम जा न ॥ ६७ ॥ सुसर कंठ गायन हुवे जाणे राग सुभे द ॥ श्रोता सुण रीझे सही राग पंचमो वेद ॥

भूल सुधारो करि कृपा दृष्टि दोषको जान ॥ किसन लाल विनती करे तिणपर दीज्यो ध्यान ॥ ६९ ॥ न्युनाधिक ज्यो में कह्यो विन उपयोगे कोय ॥ मन वच कायाये करी मिथ्या दुक्कृत मोय ॥ ७० ॥

॥ छप्पय दोहो ॥

॥ ऋषभ अजित जिन चंद वंदि संभव अभिनं दन सुमति पदम सूपाश चंद्र प्रभे दुख कन्दन सु विधिनाथ पुफदंत सियल श्रेयांस जिणंदा वास पूज्य भज विमल अनत सिरी धरम जिणंदा शांति कुंथु अरनाथ मल्लि मुनि सुव्रत स्वामी नमीनाथ रठनेम पास वंदू शिरनामी श्री महावीर चौवीस ये तीर्थं कर अशरन शरन तिर काल सदा कर जोरके किस नलाल वंदत चरन ॥ ७१ ॥

॥ कवित्त ॥ महामुनि बुधरके पाट कुसलेल पूज्य जांके पाट पूज्यश्री गुमानचंद जांनिये ॥ ताके पाट पूज्य श्री रतनचंद ज्ञाता भये ताके ज्येष्ट भ्राता गुरु रमा शशी मांनियें ॥ ताके सिष्यधीर मुनि उत्तम आचा रि गुनि ताहीकेसुसिष्य नंदरामजी पिछांनियें ॥ ताके सिष्य कृष्णलाल किधो बाललीलो ख्याल सुधारस संग्रे राग प्रथम बखांनियें ॥ ७२ ॥

॥ सवैया ॥

चोवीसमां महावीर शूरवीर महाधीर वांणी मीं ठी खांरुखीर सिधारथ नंदहें नागनीसी नार जांन घटमें वेराग आंन जोग लियो जगजांन ठोड्या मोह फंदहें ॥ चवदे हजारसंत तार दिया जगवंत करमां को कियो अंत पाया सुख वृन्द हें जणें मुनिचंद जांण सुणों हो जविकवांण महावीर ध्यांन धरतां उपजे आनंद हें ॥ १ ॥ पाप पंथपरहरें मोख पंथ पगधरे अजिमांन नहि करे निंदाको निवारीहें संसारको ठोड्यो संग आलस नहीं ठे अंग ज्ञान सेती राखे रंग मोटा उपगारी हें ॥ मनमांही निरमल जे सोहे गंगाको जल काटत करमदल नवतत्व धारि हें सं जमकी करे खपवारे जेदी धारे तप ऐसे अनगार ताकूं वंदना हमारीहें ॥ २ ॥ ज्ञान करी जरपूर वि कथासे रहे दूर तपस्या करन सूर मोटा अणगारी हें तरण तारण जाज आतमाका सारेकाज दोष सेती आणे लाज गुणांका जंडारी हें ॥ ठोडे सब खोटा मत चोकी राखे समकित निरवद बोले सत पाप परिहारी हें विरकत रहे सदा लोज नही धारे कदा ऐसे अणगार० ॥ ३ ॥ तन सहे शीत ताप जि

नजीको जपे जाप कर्मदल देवेकाप वहुत विचारी हें
छोरू दिया धन धान ध्यावत विशुरू ध्यान सदा र
हे सावधान कुमति विदारी हें ॥ सूंना घर समधार-
न करे देहीकी सार शील पाले खगधार विपे दूर
वारीहें राग दोष मल धोय निरमल हुवा जोय ऐसे
अणगार० ॥ ४ ॥ अखंरू आचार पाले दोष सवे
दूर टाले जनम मरन जाले समताको मारी हें
तपकर त न गाले नारी सामो नही न्हाले विपें
दृष्टी पाछी वाले आतमा सुधारी हें ॥ छोड दिया रंग
नाद नहि करे परमाद चाखे अनुत्तव स्वाद उगर
विहारी हे वश करे तन मन जारत करमवन ऐसे
अणगार० ॥ ५ ॥ ज्ञान ध्यान रहे लीन जैसे जल
मांहि मीन प्रवचन रस पीन शुध गुणधारी हें इं-
द्री पांच वस कीन काहा घणा परवीन देव गुरु ध
र्म तीन विशुध विचारी हें ॥ देहीने पाडत खीन
होवे नही हीन दीन करम करें छीन छीन धरम
का व्योपारी हें जथातथ पंथचीन मुगतीका रूंक
दीन ऐसे अणगार ॥ ३ ॥ परीसा उपना धीर होवे
नही दलगीर सैंठा रहे शूरवीर दूषनां लिगारी हें
ममता नही शरीर परतणि जांणें पीर सचितन पीवे

नीर पाप परिहारी हें ॥ मारन करमसीर तप स्याका वाहे तीर राखे नही तकसीर आतमाको तारी हें मानो पेत राखे चीर कोमी नही एक तीर ऐसे अणगार० ॥ ७ ॥ जिनजीको लियोधम मेट दियो मिथ्यातम कामजोग दिया वम तजी रिध सारी हें साकर टाकरसम गाली वोल्या खाय गम दिवी ठे आतम दम खिमा गुण जारी हें॥ वीसदो परी सा खम काट दिया निजकम जांको कासूं करे जम कु गति कुठारी हें आगममें रहेरम चाले नही धम धम ऐसे अ० ॥ ८ ॥ मुगतिको लेवे मग जोय जो य मेले पग मनमें न राखे दग तजी सव नारीहें ड रजननर मग गाल वोले मुखे अग होवे नही दग दग समता अपारी हें ॥ ज्ञान ध्यान रहेलग गुणां को नही ठे थग उपदेशे तारे जग कुमति न सारी हे तपस्याको काढ्यो खग मारीने करम ठग ऐसे ॥ ए ॥ निरवदवोलें वेन सकल जीवाकासेंन चारि तमें पावे चेन जगहितकारी हें सांचो जांणे मत जैन वीजा सहु माने फेन उपदेश देवे अने माया सव मारी हें वस राखे निज नैन नारी सवे जांणे वह न निर दोप लेवे लेण शुध ब्रह्मचारी हें ध्यांन धरे

दिनरेन समज्यां के कहण रहण ऐसे० ॥ १० ॥ क
रणी करे कठिन डुरबल करे तन उतारेकरम रण
चोकमी घटारी हें अधिको न खावे अन तप करि
दहे तन कोमी नहि एक कन ठती क्रुध ठारी हें ॥
मारीयो हे डुष्ट मन लिया वीस सात गुन हुवे न
ही कृत घन सुदृष्टि निहारी हें चलो उपदेश दिन
जुगतसुं तारे जन ऐसे० ॥ ११ ॥ किरिया कवाण
कीध दयातणां वंध दीध सांचकी पण च सीध बहु
त करारी हें तपस्याका किया वांण इरजानिसाण
जांण वाजे हे मधुरी वांण ध्यानकी कटारी हें ॥
समकित सेल झाल धीरजकी धरी ढाल ज्ञान घोडे
चढ्या लाल खिमातरवारी हें शीलसेना लईलार
करमासुं करे रार ऐसे० ॥ १२ ॥ अकल बहुत ऊंडी
सांचो पंथ लियो डूंमी रात दिन ज्यांकी हुंमी प्र
भुजी सीकारी हें ज्ञान तणी रही पीक भिन्न भिन्न
करे ठीक सदा रहे नीरभीक माया सब डारी हें ॥
वेयालीस दोष टार निरदोष ले अहार संजमको
वहे भार रीष न लिगारी हें तप तेज रह्या दीप परी
साकूं लिया जीप ऐसे० ॥ १३ ॥ तजिया चंपेल तेल
मान सबदिया मेल विषेरूप विषवेल उरथी उतारी

हें रात दिन ज्ञानरेल वधावे धरम वेल खेलत सुक्र त खेल सांचा सुविचारी हें ॥ ठगारी कुमति ठेल पांचूं मेल दिया पेल पंडिताई रेल पेल अवल अपा री हें साहिते संजमसेल हणत करम हेल ऐसे० ॥ १४ ॥ जव हत ज्ञान जेट मिथ्यातम दियो मेट सुरति लगाई ठेट खिमा गुणजारी हें शशि जेम दीठसोम हुवे नही प्रति लोम देख देख चाले जो म दया अधिकारी हे ॥ दिखावत शुध राह मेट दि यो जवदाह सकल जीवारानाह पाप परिहारी हे जिन्न जिन्न जापे जेद मूल नही करे खेद ऐसे० ॥ १५ ॥ दिल साफ निशदिन जजतहे जगवन मि थ्यासू न आणे मन ऐसी इगतारी हे अधिक न खा वे अन तप करि दहे तन कोडी नही एक कन ठती क्रुध ठारी हे ॥ धारत धरम धन ठोडे नहि एक छिन गोतम जंपदीन धीर गुणधारी हे जलो उपदे श मन जुगतिसूं तारे जन ऐसे ॥ १६ ॥ मिथ्या मो ह जन मूल हिंसातजी लघु थूल फूंट नहि वोले मूल तजी सव चोरी हे परिहरे मैथुन नवे विध त जे धन रात नही जपे अन धरमका धोरी हे ॥ सु गुरुकि धरी सीख कुपंथ न जरेवीख अली जेम ल

हे जीख ठोमी सवजोरी हें विरतक रहे सदा लोज नही धरे कदा ऐसे अणगार ताके पांवा धोक मोरी हे ॥ १७ ॥ परठन परगट मारे नही काय पट कूम्रूख देवे कट सत संमसेरी हे वर जिने मन वट उन मूछ्या मद अठ कायासें तज्यो कपट ग्रंथ पास गेरी हे ॥ विचरत जोगवट नजपर जेम नट तपसेती जवतट आतम उजेरी हे घणो साफ करि घट रहे जिन नामरट ऐसे० ॥ १८ ॥ ज्ञान घोडे असवार हुवा संत अणगार सजायना वाजासार विधिसम ऊायनें संजम सनाह टोप एको कर रह्या उंप दया अवधिसु उंप करम समायनें ॥ दांन शील तप जाव च्यारूं मोटा उमराव साथे हुवा समजाव मनमें उमायने मुगति कि लारिमांय जंग करि वेगा जाय ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायके ॥ १९ ॥ काढत करम दल ठोड दिया सवेठल पर हस्या फूल फल जोवे नहि आरसी अनुकूल प्रतिकूल परीसा अपरवल ऊपना रहे अचल सोही काज सारसी ॥ मेट मिथ्या महामल ज्ञानतणी अटकल सिखाईन परघल संसे सवटारसी आंणीने संतोप जल मेट दीनी लोज ऊल ऐसा गुरुधारो जीव तरे सो

ही तारसी ॥ २० ॥ संसारकी तजी लील सिद्धांतमे
करे कील सांचे मन पाले शील जोवे नही नारसी
दुरवल करि देह गिरवा गुणांरा गेह न्याती हूंती
तजो नेह माया जांणे ठारसी ॥ आतमारा टाले दोष
करमांरा करे शोष मुगतिका रुक मुनिवेगा ही व-
जारसी लेवे निरदोष दान मूल नही करे मान ऐ
सा० ॥ २१ ॥ भावनीद गई भाग जंबू जिम ऊव्या
जाग विधीसूं लियो वेराग ठती शुध ठोरुनें मोह
तणी तजे नाग रंचक न धरे राग जगतकूं दियो त्या
ग महीदल मोरुनें ॥ वुझाइ भींतर आग दिलरा मे
टत दाग लवलेस नही लाग तप तन तोरुनें वस क
रे मन वागम्हलतमुगति माग ऐसा अणगार ताकूं
वंदूकर जोडनें ॥२२॥ सिद्धांत नांवे न सुनी मायातजी
हुवा मुनि गिरवा व होत गुनी अंगमें हुलासता भिन्न
भिन्न ज्ञान भनी चोखा गुण लेत चुनी दया करितारे
दुनी भलावेण भापता ॥ हरपत पाप हणी घटमेंअक
लघणी धारे जिनराज धणी डंर नही आसता गीत
नाद तुछगनी वालदेव काम वनी ऐसा अणगार मु
नी सुख लहे सासता ॥ २३ ॥ अंगधरी उछरंग सुं
दरीको तज्यो संग भाव नही करे भंग कुल शोभ

कापी है कषायनें पूजीने परमपद रिपु कर देत रद ऐसा अणगार ताकूं वंदू शिरनायनें ॥ ३० ॥ बुझा ई नीतर झाल काट दियो मोह जाल सिद्धांतकी चाले चाल खुली ज्ञान जोतहे माया नही राखे मूल किमहीन बिलकुल नवजीवातणी झूल टाले मिथ्या ठोत हे ॥ अंगसे आलस ठोड गामपर ठोर ठोर जिनवेंण तणो जोर करत उदोत हे शूरपणे सगरास करीने सुधारे काम ऐसा अणगार ताकूं हमारी रुंडोतहे ॥ ३१ ॥ जगतकी तजी बुध वहु घट गई मुद तारवानें वहु सुध अखंडत पोतहे सेंण जीम देत सीख सत्तवात तहावीख मीठी जांणे मुख दीख मिथ्यातम खोतहे प्रभूजीसूं धरे प्रीत गावे रूडा गुण गीतमांही वारे एक रीत तज्या सव तो तहे सुरत मुगति मांहि डरवात वंठे नांहि ऐसा अणगार ताकूं हमारी रूडोतहे ॥ ३२ ॥ ऐसा संत अणगार नमो सव नरनार तरन तारन हार मोटा गुणपातहे सांची सीखदेत सूल कुपंथ न पडे नूल सुमतिमें रह्या फूल समकित आथहे ॥ सवेया त्तीस सार गाया गुण अणगार आगमके अनुसार जगमें विख्यात हे नणें मुनिचंद नांण सुनोहो नविकनांण वत्तीसी जलट आंण नण्यां डुख जातहे ॥३३॥इति॥